BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811

Title Code - DELBHO00011

http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

पाक्षिक पत्रिका | 1 जुलाई-31 अगस्त, 2023 | मूल्य - ₹ 20

भोजपुरी जंक्शन

समीक्षा विशेषांक

(भाग-4)

बूझेली चिलम जेकरा पर चढ़ेला अँगारी

भोजपुरी सिनेमा के संसार (अध्याय 4)

आईं भोजपुरी जंक्शन के सोशल अड्डा पऽ

https://humbhojpuria.com

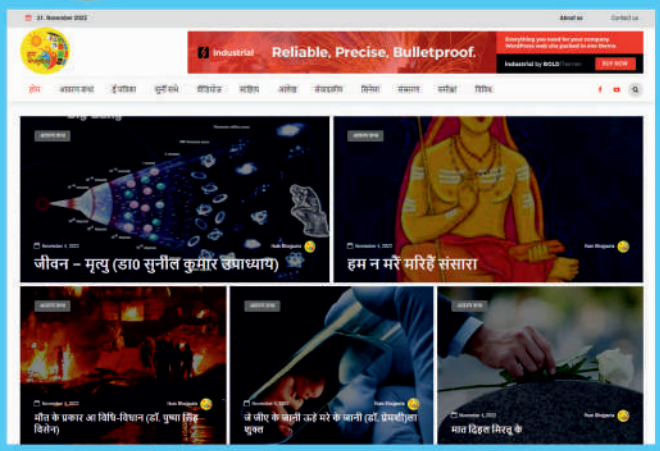

YouTube

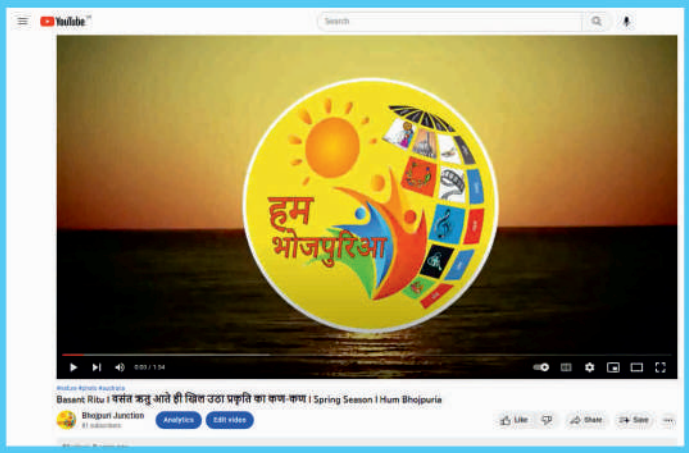

https://facebook.com/humbhojpuriaa/

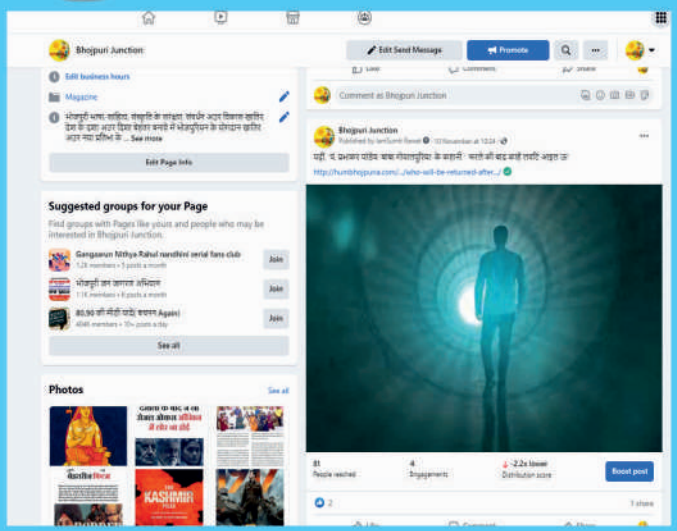

https://twitter.com/humBhojpuria

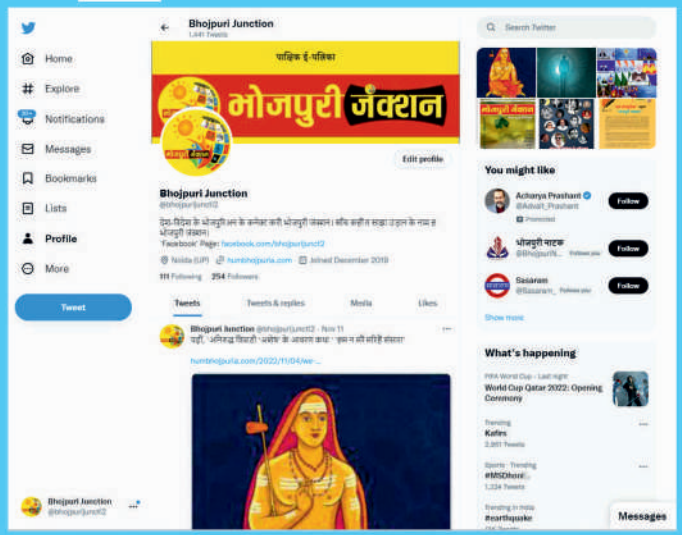

वर्ष : 3, अंक : 21-24 | 1 जुलाई - 31अगस्त 2023

भोजपुरी जंक्शन

पाक्षिक पत्रिका

अध्यक्ष आ प्रधान संपादक
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

संपादक
मनोज भावुक

उप संपादक
अखिलेश मिश्र, अनिल कुमार दुबे 'अंशु'
मनीषा श्रीवास्तव, परिधि जैन

कला अउर सज्जा
ज्योति सिन्हा

सोशल मीडिया
सुमित रावत

विपणन विभाग

सहायक उपाध्यक्ष
विशाल सिन्हा (मो.- 8853531208)
जनसंपर्क अधिकारी: संदीप द्विवेदी (मो. 9868317507)
क्षेत्रीय प्रबंधक : बिहार-झारखंड
मनीष किशोर (मो.-9334919888)

संपादकीय कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
editor.humbhojpuria@gmail.com

पंजीकृत कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
http://humbhojpuria.com/
https://twitter.com/bhojpurijuncti2
https://www.facebook.com/bhojpurijunct2/

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक रवीन्द्र किशोर सिन्हा द्वारा ई - 1, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली - 110065 से प्रकाशित अमर उजाला लिमिटेड, सी - 21/22, सेक्टर - 51, नॉएडा 201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित। संपादक - रवीन्द्र किशोर सिन्हा।

भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी सिनेमा के संसार (अध्याय-4, भाग-3).....58

एह अंक में

सुनीं सभे

सावन यानि शिव के रिझावे के महीना 6

समीक्षा खंड (किताब / समीक्षक)

तस्वीर जिन्दगी के / डॉ० शारदा पाण्डेय.....8
ग्राम देवता / डॉ. अशोक द्विवेदी.....10
भोजपुरी साहित्य का इतिहास/ डॉ. शंकर मुनि राय 'गड़बड़'..... 12
बाबू/ सूर्यदेव पाठक 'पराग' 14
का कहीं / विष्णुदेव तिवारी.....16
सितली/ डॉ. संध्या सिन्हा 18
कब कहलीं हम / कनक किशोर.....20
भोजपुरियत के थाती / चंद्रेश्वर 22
भोजपुरी लोकाख्यान के विश्वकोश / दिव्येंदु त्रिपाठी.....24
भोजपुरी के कवि और काव्य / डॉ. सत्येंद्र प्रसाद सिंह.....26
सुन्नर काका /डॉ. अशोक द्विवेदी.....28
फगुवा के पहरा / केशव मोहन पाण्डेय.....30
लीलावती-कलावती / राम मनोहर मिश्र "माहिर विचित्र".....32
सुर ना सधे / डॉ. रजनी रंजन.....34
रामबोला / ऋतुराज.....36
इ हिरामन सुगा / भूपेंद्र कुमार 38
लोक मंजरी/ आनंद अमित.....40
तेतरी/ विष्णु देव तिवारी.....42
रावण के पाती / दिव्येंदु त्रिपाठी.....44
सुरतिया ना बिसरे/ डॉ. संध्या सिन्हा.....46
थेथर मन / कनक किशोर.....48
भोजपुरी काव्य धारा/ डॉ. शंकर मुनि राय 'गड़बड़'.....50
जनार्दन गीता / पीयूष मिश्रा 52
भोजपुरी गीता / सुशील कुमार शर्मा.....54
चलनी में पानी / उद्धव मिश्र.....56

नोट -
कई गो किताब के समीक्षा में व्यक्त विचार से हम सहमत नइखीं बाकिर समीक्षक के भावना आ अभिव्यक्ति के आजादी के कद्र करत ओह विचार भा लेख के प्रकाशित कइले बानी। एह से कवनो समीक्षा खातिर संपादकीय टीम जिम्मेदार नइखे। पाठक के कवनो भी लेख भा विचार पर असहमति होखे त पाठकीय प्रतिक्रिया के स्वागत बा। लिख के भेजीं, अगिला अंक में प्रकाशित कइल जाई। - संपादक

The Indian Public School

Dehradun

The 21st century gurukul

- Auditorium with a seating capacity of 1500
- 2 Swimming Pools
- In- House Dairy with more than 200 Cows Supplying pure fresh milk & dairy products to the Mess
- 80 acres of lush green campus
- Co- educational Residential School with qualified & experienced teachers
- Modern Academic Block with laboratories, Music & Art rooms with covered area measuring 60,000 sq. ft.
- Horse Riding Facility
- Smart Classrooms
- Excellent Games & Sporting facilities: Cricket, Football, Chess Badminton, Basketball, Volleyball, Tennis, Rugby, etc.

ADMISSION OPEN

For Classes III-IX & XI - 2022-23

www.indianpublicschool.com

+91 9568012777 | +91 9568012778

संपादकीय

बूझेली चिलम जेकरा पर चढ़ेला अँगारी

पाके दीं,
बहे दीं,
खउले दीं,
सींझे दीं,
डभके दीं,
छलके दीं,
टीसे दीं,
टभके दीं,
टूटे दीं,
फूटे दीं ....बन जाई रचना, हो जाई सृजन।

बाकिर दिल से निकलल रचना के दर्द, सृजन के आग कई बेर दिमाग ना समझ पावेला। दिमाग से दिल के बात समझलो नइखे जा सकत। तर्क से गढ़ाइल बात त एक बेर समझ में आइयो जाला बाकिर भाव में भींजल आ लोर में सींझल रचना के तासीर ऊहे समझ पावेला जेकरा रोआँ-रोआँ में सिहरन आ संवेदना बाँचल होला।

एह अंक के साथ 100 गो किताब के समीक्षा के संकल्प पूरा भइल। नीमन बा कि बाउर, ई त पाठक लोग बताई। अधिकतर समीक्षा परिचयात्मक बा। मकसदो इहे रहल ह, अधिका से अधिका भोजपुरी किताबन के दुनिया तक पहुँचावल। सरधा इहे रहे आ बा कि बात होखे किताबन पर। ...आ निर्मल मन से होखे। निष्पक्ष भाव से होखे। बेहतरी खातिर होखे।

बात भइलो बा। बहुत लोग बहुत गंभीर बात कइले बा। बहुत गहराई में उतर के बात कइले बा। समीक्षा विशेषांक के चारो भाग पढ़ला पर बहुत सारा समीक्षा अइसन मिल जाई, जवन अप्रत्यक्ष रूप से समीक्षा लिखे के हुनरो सिखावता। हमनी के कोशिश उकसावे-जगावे के रहल ह कि एगो सिलसिला शुरू होखे आ नयो लोग एह में शामिल होखे। समीक्षक-समालोचक के नया पीढ़ी तइयार होखे। कुछ लोग अनवरत सीखे-लिखे के संकल्प लेव। पता ना हमनी केतना सफल भइल बानीं।

शुरू-शुरू में मनसा रहे कि जे आलोचना के समुझ-बूझ रखत होखे आ प्रायः निष्पक्ष होखे ओइसने कुछ निःस्वार्थ लोगन के टीम बनाई जा आ फेर ओइसने रचना पर बात होखे, जवना में मानवीय मूल्यन के प्रति संवेदना होखे। बाकिर ई काम तनी मुश्किल रहे। एह से कवनो लकीर ना खींचल गइल आ धरती-आकाश खुला रखल गइल। सभकर स्वागत कइल गइल आ सभका से निहोरा कइल गइल कि रउरा सभे अपना-अपना पसंद के किताब के समीक्षा करीं।

कबीर से ले के अब तक, भोजपुरी साहित्य के पिछला सैकड़न साल में बहुत कुछ लिखल-पढल गइल बा। बाकिर, हमनी अकेले केतना समेटब ? आखिर, संपादक के एगो सीमा बा। अच्छा रचना जुटावल आसान नइखे। एह से, ईमानदारी से कहीं त, समीक्षा खातिर किताबन के चयन में कवनो सावधानी नइखे बरतल गइल। संपादकीय उद्देश्य इहे रहल कि जवन लिखाता, लिखाइल बा, दुनिया के सामने आओ। दुनिया अच्छा-बुरा बीन-बीछ ली। आँख का सोझा बहुत सारा कमाल के किताब पड़ल बा आ ओकर समीक्षा हमनी लिखवा ना सकनी भा एह विशेषांकन में ऊ शामिल नइखीं स त ओकर टीस त बड़ले बा।

देखीं, भोजपुरी आलोचना के अब तक के उपलब्धि से हमनी निराश नइखीं बाकिर अभी जवना तरह के स्थिति बा, ओकरा के ले के थोड़ा चिंता जरूर बा। भोजपुरी आलोचना के ले के बहुत काम भइल बा, लगभग हर पत्रिका में पुस्तक-समीक्षा के कॉलम रहल बा। समीक्षा आ आलोचना पर बहुत सारा किताब आइल बा। समीक्षा आ आलोचना के भी कई गो किताब के समीक्षा एह समीक्षा विशेषांक में छापल गइल बा। हमनी के सब कोशिश, अभी जवन स्थिति बा, ओकरा के अउर बेहतर बनावे खातिर बा आ भोजपुरी जंक्शन के समीक्षा विशेषांक, भाग 1-2-3-4 के एगो गिलहरी प्रयास के रूप में देखे के जरूरत बा।

आगे विधावार समीक्षा निकाले के मन बा। भोजपुरी में बहुते विधा के मँजल रचनाकार लोग बा-एक से एक बेजोड़, बाकिर कवनो जरूरी नइखे कि सब केहू बढ़िया समीक्षको होखे। काव्य रचना एगो प्रतिभा ह, बाकिर समीक्षा एगो ईमानदार नजरिया ह। एकरा खातिर अध्ययन-चिंतन आ निर्णायक विवेक होखल जरूरी बा। एह में भाई-भवद्धी ना चले। ना चले के चाहीं। दुश्मनी आ नफरत त एकदमे ना।

हमनी किहाँ एगो कहावत बा – 'बूझेली चिलम जेकरा पर चढ़ेला अँगारी'। मतलब अँगारी के ताप के अनुभव चिलम के अलावा दूसर केहू महसूस ना कर पावेला। समीक्षा लिखल ओह ताप के अपना ऊपर अनुभव कइल ह। समीक्षको के ओह ताप के अँगेजे के चाहीं, जवना से रचना होला, जवन रचेला। समीक्षक के चिलम बने के पड़ी...आ लेखको के ई बात बूझे के पड़ी कि कुछुओ लिख दीहल लेखन ना ह। समाज के सार्थक रचना देवे खातिर अनुभूति आ चिंतन के समन्वय जरूरी बा, रचना के सामाजिक सरोकार जरूरी बा, रचना के भाषा से जुड़ाव आ सटाव जरूरी बा। असहीं त कवनो रचना कालजयी होला ना! तुलसी-कबीर कवनो समीक्षक से लिख-लिखवा के त कालजयी भइलें ना।

रचना आ समालोचना के पीड़ा समझल जरूरी बा। भोजपुरी आलोचना में धैर्य आ विस्तृत विवेचना के अबहिंयो अभाव बा। बिना गहिरा विश्लेषण आ बार-बार पाठ के रचना के सत्व तक पहुँचल नइखे जा सकत। एही दबाव में हमनी के छोट आ ऊहो परिचयात्मक टिप्पणी पर संतोष करे के पड़ल। हालाँकि, एह सौ गो किताबन के परिचयात्मक समीक्षा के आपन महत्व बा। हमनी के उद्देश्य रहल ह, लहर उठावल आ समीक्ष्य कृति के पढ़े के रुचि जगावल। दुनिया के बतावल कि का-का लिखाइल बा आ का-का लिखाता। लोग रुचि ले रहल बा। एह से परिचयात्मक समीक्षा के ई सिलसिला साधारणो अंक में चलत रही। बहुत समीक्षक लोग ई साबित कर देले बा कि कमो में ढेर कहल जा सकेला। एह से अभी तय फॉर्मेट में ही पुस्तक-समीक्षा होई। आलोचना पर अलग ढंग से बात होई।

रचना आ आलोचना सतत आ समानांतर चले वाली प्रक्रिया ह। बेहतरी के संभावना हरदम बा। रचना के अंतरदर्शन करावे वाली समालोचना होखे। विषय के पचा के आ मंथन करके कुछ बात होखे। बात होखे कि पत्थर पर धान उगे आ मुर्दा में जान आवे। समीक्षा संजीवनी के काम करे, जहर के ना। जहरो होखे त दवाई के रूप में।

सावन शिव के महीना ह। भगवान शिव के साहित्य, संगीत आ कला से गहरा संबंध बा। साथहीं ऊ सभकर समीक्षा करेलें। ऊँ नमः शिवाय। मंगलकामना।

भोजपुरी समालोचना के दिन बहुरे, एही शुभकामना आ ...बहुरी, एही विश्वास के साथ-

प्रणाम!
मनोज भावुक

***

सुनीं सभे

आर.के. सिन्हा

सावन यानी शिव के रिझावे के महीना

शिव हरेक संकट में एगो आश्वासन हईं। उनके हरेक श्मशान घाट आ भूमि में लागल मूर्ति मानव समाज के राहत देला। ओ कठोर पल में उनका के देख के अइसन लागेला मानी केहू राउर पीठ थपथपा रहल बा। जइसे ऊ कहत होखस, "हम अभी बानीं नू तहरा साथे।" अभी ले शिव के श्मशान भूमि में एकछत्र राज रहल बा। ऊ उनकर दुनिया ह। ओमे अतिक्रमण निषेध बा। श्मशान में शिव के सत्ता बा। शिव के मूर्ति के आसपास कुछ शोकाकुल लोग बइठ भी जाला। उनके करीब से देखेला भी। मन ही मन सवाल भी करेला कि काहे श्मशान प्रिय बा शिव के?

सावन के पहिला सोमार पिछला 10 जुलाई के पूरा आस्था के साथ मनावल गइल। देशभर के शिवालय में सुबह चार बजे से बारह बजे रात ले तमाम भक्त आवत रह गइले। सूरज के पहिला किरिन फूटे से पहिलहीं भक्तजन के तांता मंदिरन में लाग गइल रहे।

शिव के जीवन हीं ये बात के प्रतीक बा कि प्रकृति से तालमेल स्थापित करिये के जीवन में सुख-शांति, सरलता, सादगी, शौर्य, योग, अध्यात्म सहित कवनों भी उपलब्धि हासिल कइल जा सकेला। आषाढ़ महीना से हीं वर्षा ऋतु के शुरूआत होला। सावन आवत-आवत चारू तरफ हरियाली छा जाला। ई सबके मन के लुभावे वाला होला। सावन में प्रकृति के अनुपम सौंदर्य देखते बनेला। अइसन लागेला जइसे चारू तरफ बसंत ऋतु हीं छवले होखे। संसार के प्राणियन में नया उमंग आ नव जीवन के प्रसार होखे लागेला। प्रकृति के अनुपम छटा देख के भगवान शिव आनंदित आ आत्मविभोर हो जाइले। सावन भगवान शिव के अत्यंत प्रिय ह। सावन के प्रकृति के अनुपम सौंदर्य के वर्णन शब्दन में नइखे कइल जा सकत।

अइसे में जब भगवान शिव प्रसन्न हो जानीं त संसार में अइसन कुछुओ नइखे, जवन ऊ अपना भक्तगण के ना दे पायीं। भगवान शिव के रिझावे में भक्तजन अपना मनोकामना खातिर नाना प्रकार के यत्न करेले। सावन शुरू भइला के साथहीं बोल बम के जयकारा भी चारू तरफ सुनाई परे लागेला। एकरा साथहीं सावन शिवरात्रि पर भगवान शिव के जलाभिषेक करे खातिर पवित्र गंगाजल ले आवे खातिर कावड़िया लोग के तीर्थ स्थलन पर जाये के सिलसिला जारी बा। पूरा सावन भगवान शिव के महीना मानल जाला। अबकी बार त अधिमास के कारण सावन पूरा दू महीना ले चली।

शिवपुराण के कथा के अनुसार, सावन में भगवान शिव के प्रसन्न करे के तीन गो मार्ग बा- पहिला जलाभिषेक, दुसरका बेल

पत्र, पुष्प चंदन, कमलपुष्प आ पंचामृत से पूजा अर्चना अउर तीसरा जप-तप से। एमें से कवनों भी एगो मार्ग के अनुसरण कइल जा सकता। वस्तुतः भिन्न-भिन्न कामना के अनुरूप विभिन्न प्रकार के वस्तु के चढ़ावे के भी प्रावधान बा।

शिव महापुराण, स्कंध पुराण, विष्णु पुराण आ नारद पुराण भी एही तरफ संकेत करेला। सभ देवी-देवता मिल के कैलाश पर्वत के दुल्हन के तरह सजवले रहले। कैलाश पहुंचला पर सावन शुरू हो गइल। सब देवी-देवता लोग मिल के पूरा सावन के उत्सव के रूप में मनावल।

शिव के सावन प्रकृति के साथ साहचर्य के संदेश बा। शिव अगर नीलकंठ हईं आ दुनिया खातिर अकेले जहर के अपना गला में धारण कर सकेनी, त ओकरा साथे-साथे भांग आ धतूरा खाये अउर पीये वाला भी शिव ही हईं। शिव के दूनू तस्वीर साथ-साथ जुड़ल बा। भारत में करोड़ो लोग समझेलें कि शिव धतूरा पीयेनी, शिव के पलटन में लूला-लँगड़ा बाड़ें, ओमे जानवर भी बाड़ें, भूत-प्रेत भी बाड़ें आ सब तरह के बात जुड़ल बा। लूला-लँगड़ा, भूखा के माने का भइल? गरीब सब के आदमी। शिव सबकर हईं। एकर अर्थ ही ई ह कि शिव सब बेसहारा प्राणियन के सहारा हईं। भोला बाबा भांग धतूरा के सेवन ना करस, बल्कि, अपना भक्तगण के आपन दुर्गुण के छोड़े खातिर प्रेरित करेलें। कहे लें "ले आवऽ आपन सारा दुर्वसन हमरा के दे द आ तूँ शुद्ध भाव से हमरा आराधना में लागऽ।"

मानव जीवन के वास्तविक लक्ष्य का ह? जीवात्मा अनादिकाल से प्रकृति के प्रवाह में अणु-रूप में नानाविध शरीर धारण करत काल के गति के साथ बह रहल बा। मोक्ष के कामना खातिर भटक रहल मानव खातिर सनातन धर्म में भक्ति के विभिन्न देवता लोग के पूजा के अलग-अलग विधान बा।

सृष्टि के कल्याणकारी देवाधिदेव महादेव शिव शंकर हीं अइसन देव हईं, जे मात्र एक लोटा जल श्रद्धा भाव से ग्रहण क के ही मानव जीवन के सरल बना देवेले। शिव हमनीं सबके आसपास ही विराजमान रहींने। ना जाने कवना रूप में ऊ अपना भक्त लोग के दर्शन दे जास। लेकिन, उनका के पहचान पावल मानव खातिर हमेशा से ही एगो बड़ा गंभीर विषय रहल बा। ई बिल्कुल अइसनके बा जइसन आकाश में बादल रहला के बाद बादल के मध्य में स्थित सूर्यबिंब देखाई ना देवे। सूर्योदय के बाद आकाश के मेघावृत रहला पर मेघ के हटला के साथ ही सूर्य के दर्शन होला आ ओकरा किरण अउर धूप के भी प्राप्ति होला।

शिव के भक्ति करे वाला के अपना मन-मस्तिष्क पर परल ओ अज्ञान के पर्दा के हटावे के जरूरत बा जे ओ कल्याणकारी देव प्रभाव के ना देख पावेला।

शिव हरेक संकट में एगो आश्वासन हईं। उनके हरेक श्मशान घाट आ भूमि में लागल मूर्ति मानव समाज के राहत देला। ओ कठोर पल में उनका के देख के अइसन लागेला मानी केहू राउर पीठ थपथपा रहल बा। जइसे ऊ कहत होखस, "हम अभी बानी नू तहरा साथे।" अभी ले शिव के श्मशान भूमि में एकछत्र राज रहल बा। ऊ उनकर दुनिया ह। ओमे अतिक्रमण निषेध बा। श्मशान में शिव के सत्ता बा। शिव के मूर्ति के आसपास कुछ शोकाकुल लोग बइठ भी जाला। उनके करीब से देखेला भी। मन ही मन सवाल भी करेला कि काहे श्मशान प्रिय बा शिव के? हालांकि ये प्रश्न के उत्तर बार-बार मिल चुकल बा। सतगुरु जग्गी कहेले कि दरअसल शिव के श्मशान डेरा ह। 'श्म' के मतलब 'शव' से आ 'शान' के मतलब 'शयन' चाहे 'बिस्तर' से बा। जहवाँ शव पड़ल रहेला, उहवें ऊ रहेले। शिव श्मशान में जाके बइठेलें आ इंतजार करेलें। शिव के संहारक मानल जाला, ए खातिर ना कि ऊ केहू के नष्ट करेके चाहेले। ऊ श्मशान में इंतजार करेले ताकि शरीर नष्ट हो जाए, काहे कि जब तक शरीर नष्ट ना होई, आस-पास के लोग भी ई ना समझ पाई कि मृत्यु का ह। ऊ हरेक मूर्ति में ध्यान के मुद्रा में बाड़ें। लागता कि ऊ स्वयं के खोज के यात्रा में निकलल बाड़ें। ऊ कठोर चिंतन आ ध्यान में मग्न बाड़ें।

भारत में करोड़ो लोग समझेलें कि शिव धतूरा पीयेनी, शिव के पलटन में लूला-लँगड़ा बाड़ें, ओमे जानवर भी बाड़ें, भूत-प्रेत भी बाड़ें आ सब तरह के बात जुड़ल बा। लूला-लँगड़ा, भूखा के माने का भइल? गरीब सब के आदमी। शिव सबकर हईं। एकर अर्थ ही ई ह कि शिव सब बेसहारा प्राणियन के सहारा हईं। भोला बाबा भांग धतूरा के सेवन ना करस, बल्कि, अपना भक्तगण के आपन दुर्गुण के छोड़े खातिर प्रेरित करेले। कहे लें "ले आवऽ आपन सारा दुर्वसन हमरा के दे द आ तूँ शुद्ध भाव से हमरा आराधना में लागऽ।"

शिव अपना भक्तन से कबो दूर ना जाले। सावन में समाधिस्थ शिव संसार के शंका से मुक्त करत समाधान से युक्त करेले। ऊ श्रद्धापूर्वक कइल गइल प्रार्थना के सुनते हमनीं के पुरुषार्थ के फलीभूत करेले।

सावन महीना के कवनो सोमार के शिव मंदिर में शिवलिंग के पास बइठ के पूजा करेके सुख वास्तव में अलौकिक होला। ए दौरान काशी अउर झारखण्ड के वैद्यनाथ धाम त काँवरिया लोग से पाट जाला। महादेव शिव बनारस में लोकदेव हईं। सावन में शिव के पूजा, उपवास आ ध्यान के उत्तम मानल गइल बा। ई शिव के इयाद करे के महीना ह। ***

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार अउर पूर्व सांसद हईं)

पुस्तक समीक्षा

डॉ० शारदा पाण्डेय

तस्वीर जिन्दगी के: गजल के ऐना में

पुस्तक के प्रारम्भिक भाग चालीस पृष्ठ तक रचनाकार के रचना आ व्यक्तित्व पर प्रकाश डालेवाला दूगो विद्वान रचनाकारन के वैचारिक प्रस्तुति, भूमिका-स्वरूप प्रस्तुत बा। पहिला लेख सत्यनारायण जी के बा, जेकरा अनुसार एह पुस्तक में "जिन्दगी के समूचा तस्वीर आ गइल बा। रचनात्मक अनुशासन में सादगी आ मासूमियत के साथ तलस्पर्शी संवेदना के तरलता बा। छोट बहरो में अभिव्यक्ति के तिर्यक भंगिमा बा।" दोसरका लेख माहेश्वर तिवारी के "माटी की गंध में लिपटी कविता" ह। इहाँ के गजल के व्युत्पत्तिक इतिहास देत महाकवि वाल्मीकि के ध्यान करत माजदा हसन के विचार देइ के गजल के तुलना ओह सुन्दरी से कइनी जवन आबालवृद्ध सबके आकर्षित करेले, जेकरा में एगो अल्हड़ता आ चंचलता के विशेष गुण होला। 'माशूक' आ 'इश्क' के अभिव्यक्ति गजल के मूल चेतना ह। स्पष्ट बा कि दूनू निबन्धकार चिन्तनशील प्रवृत्ति के अधीन विद्वान बा, जेकरा कथन में गजलकार के कथ्य आ शैली दूनू के भाव-रूप स्पर्श के सामर्थ्य बा।

एह संदर्भ में हिन्दी गजल के राजकुमार दुष्यंत कुमार के ना भुलाइल जा सके जे तथाकथित लेखक के गजल प्रेम-सौन्दर्य-अल्हड़ता आ शोखी अइसन गुणन पर ना विरम के अपना गजलन के जीवन के भाषा आ युग के चेतना बना के प्रस्तुत कइलन। मनोज 'भावुक' के गजल रुप-सौन्दर्य के सरोवर से तनी खिसक के जीवन के विविधरुपी चित्र देबे के दिशा में एगो सहज सार्थक प्रयास करत लउकता। स्वयं गजलकार के कथन बा कि **"अइसन तकलीफ जवना से करेजा फाटे लागे, फूट के गजल बन जाला।"** ई कहनाम अतना साँच बा कि दर्पण नियर एकरा में भावाकुलता के प्रवाह देखल जा सकेला। ई तकलीफ खाली प्रेम भा इश्के के चलते नइखे। ई जिनिगी में आवेवाला हर समस्या के टीस आ पीर के अनुभव करेवाला चेतना के छटपटाहट के रूप में उभर के आइल बा। एही से एह गजल संग्रह के अधिकांश गजलन में मर्मस्पर्शिता आ चिन्तन के आहट सुनाता। पहिलके गजल प्रेम के पीरे के व्यंजित ना कइके प्रकृति आ मानवीय सम्बन्ध के क्षरण, पारिवारिक सद्भाव के अभाव, दोस्त के कर्त्तव्य-पलायन पर जवन दुखत नस दबावत बा ऊ भाव लगभग कुल्ही गजलन में लउकता।

खुशबू भरल सनेह के उपवन कहाँ गइल
भउजी हो तहरा गाँव के मधुवन कहाँ गइल

हर बात पर जे रोज कहे दोस्त हम हईं
हमके डुबा के आज ऊ आपन कहाँ गइल

(गजल-1)

गजलकार के दृष्टि में घर के परिभाषा बा कि –

होखे खपरैल भा महल होखे
नेह बाटे तबे ऊ घर बाट (गजल-50)

एह घर के मूलाधार शक्ति ह महतारी, ओकर नेह, मंगल-कामना, जेकर प्रेम कवि के हृदय-सागर में रहि-रहि हिलोरता –

हमार बबुआ फरे-फुलाये
इहे त मंतर पढ़ेले माई

बनल रहे घर, बँटे ना आँगन
एही से सभकर सहेले माई

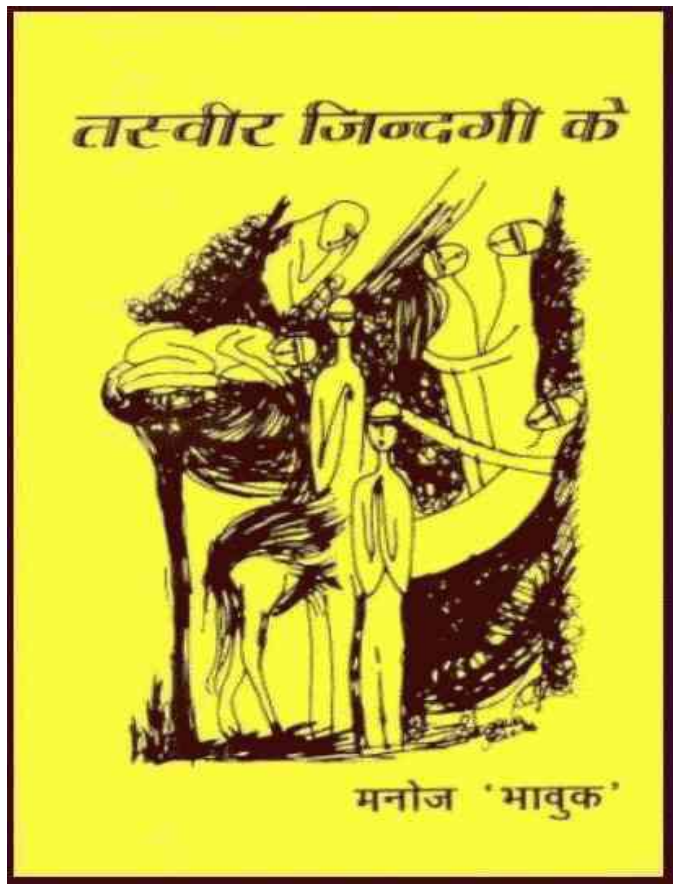

किताब: तस्वीर जिन्दगी के
लेखक: मनोज भावुक
विधा: भोजपुरी गजल-संग्रह
प्रकाशक: भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना-24
प्रकाशन वर्ष : संस्करण प्रथम, 2004
मूल्य: 60 रु

रहे सलामत चिराग घर के
इहे दुआ बस करेले माई
(गजल-47)

बाकिर समय के लहर महतारी आ बेटा के सोच के अंतर करत करेजा में मरोड़ उठा देता–

ना परे मन घर कबो बबुआ के भलहीं
रोज बुढ़िया भोर में कउआ उचारे
(गजल-2)

जीवन के गहराई में पइठल कवि अनुभव करता कि संबंधन के दूरी संगे रहलो पर मन झटकरले रहेले। ई भावात्मक अन्तर्द्वन्द्व स्पष्ट कहाइल बा–

बस कहे के हम आ ऊ साथे रहीले
साथ का जब पड़ि गइल मन में दरारे
(गजल-2)

जिनिगी के विडम्बना बा कि इहाँ विश्वास आ सम्बन्ध जब-तब छल क देला। सवार्थ प्रायः सम्बन्ध आ भाव पर भारी परेला–

कबो केहू ना आपन हो सकल मतलब का दुनिया में
डुबावत नाव ऊहे बा, जे आपन हीत लागेला
(गजल-8)

ईहे जीवन के सच्चाई ह। अपनन से विश्वासघात के बादो गजलकार खातिर जिनिगी त्याज्य नइखे। ऊ जिन्दगी के तस्वीर हर कोण से देखले बा। निराशा के संगे आशा, नकार के संगे स्वीकृति के ताना-बाना बीनत ओकर दृष्टि सकारात्मकता के छोर कबो नइखे छोड़त–

राह बाटे कठिन, मगर बाटे
चाह बाटे अगर, डगर बाटे
(गजल-50)

--- कहेवाला गजलकार एह सन्देश के बार-बार दोहरावता--

हर कदम जीये-मरे के बा इहाँ
साँस जबले बा लड़े के बा इहाँ

जिन्दगी तूफान में एगो दिया
टिमटिमाते ही जरे के बा इहाँ
(गजल-57)

व्यक्तिगत भाव के संगे समाज के जुड़ाव उदार चरित्र के प्रतीक ह। एही से कविता लोकप्रियता के स्पर्श क पावेले। मनोज भावुक एह दृष्टि से सहजे 'साहित्यकार' के श्रेणी में बइठ जातारन। एकर झलक उनका गजलन में देखल जा सकेला –

शेर जाल में फँस जाला त सियरो आँख देखावेला
बुरा वक्त जब आ जाला त अन्हरो राह बतावेला
(गजल-39)

पसरो ऊ हाथ कइसे, हरदम जे बा लुटवले
अतना जरुर दीहऽ, होखत रहे गुजारा
(गजल-38)

कबीर के 'साईं इतना दीजिए' के झलक देखल जा सकेला। अइसहीं, भाव विस्तार के दृष्टि से–

कबो-कबो होला अइसन जे छोटके कामे आवेला
देखीं ना, सागर इनार में इनरे प्यास बुझावेला
(गजल-39)

में 'रहिमन देखि बड़ेन को लघु न दीजिए डार' के भाव झलक जाता। व्यक्ति के वृत्ति स्वार्थ परक बा। शायद जीये के साधनो ई ह –

लोग कहिए उखाड़ के फेंकित
पेड़ जो आज ई फरित ना त
(गजल-29)

हिन्दी के प्रभाव स्थान-स्थान पर लउक जाता –

नदी के तरह प्यास सभकर बुझावत
जरुरत बा पथ पर निरन्तर बहे के
(गजल-44)

युग-सन्दर्भ से जुड़ल साहित्य के धर्म ह। गजलकार एसे परे नइखे। आजु के पढ़ल-लिखल बेकार नौजवानन के पीड़ा के बड़ा सटीक अभिव्यक्ति बा नीचे के शेर में –

बेकारी, भूख आ एह डिग्रियन के लाश के बोझा
जवानी में ही केतना लोग के बूढ़ा बनवले बा
(गजल-46)

गरीबी ले बढ़ि के अभिशाप कुछ ना होला। साँप के प्रतीक से गजलकार ओकर टभकत लहर के बतवले बा–

डँसे उम्र भर, डेग डेग पर
बन के करइत साँप गरीबी
(गजल-60)

ओकरा के भगावे के उपायो कवि के दृष्टि में बा, जवन 'उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि' के सिद्धान्त के भोजपुरी रूपान्तर बा –

ज्ञान भरल श्रम के लाठी से
भागी अपने आप गरीबी
(गजल-60)

आज के युग में राजनीतिक प्रभाव से विलग रहल केहू खातिर संभव नइखे। कवि भला कइसे रहि सकेला। एह संदर्भ में कुछ भाव बिम्ब देखे लायक बा। कवि अनुभव करता कि राजनीति लोगन के राष्ट्र-प्रेम, मानवता आ संवेदना के चर लेले। खाली स्वार्थ ओकरा जीवन के मापदण्ड बनि जाला–

तब गैर रहे लूटत, अब आपने लूटत बा
एह देश में सदियन से लूटे के लहर बाटे
(गजल-42)

जब से लाठी गाँव के मुखिया बनल
साँढ़ के छुट्टा चरे के हो गइल
(गजल-58)

संवेदना के लाश प कुर्सी के गोड़ बा
मालूम ना, ई लोग का कइसे सहात बा
(गजल-14)

जनता के अज्ञानता पर व्यंग्य बा –

राजा मदारी कब भइल ?
जब लोग बानर हो गइल
(गजल-45)

नइखे एहसास, जज्बात, धड़कन जहाँ
जख्म उहवां उहँवाँ अनेरे देखावल गइल
(गजल-24)

कवि के अंतरात्मा में काम, मान, ज्ञान, गान कुल्ही के प्रति एगो विशेष ललक बा, जवन ओकरा गजल में ढल के आइल बा –

दुख-दरद या हँसी या खुशी, जे भी दुनिया से हमरा मिलल
ऊहे दुनिया के सउंपत हईं, आज देके गजल के सकल

जब भी उमड़ल हिया के नदी, प्यार से, चोट से, घात से
बाढ़ के पानी भरिये गइल मन के चँवरा में बन के गजल
(गजल-43)

ई गीत रचना भावुकता के वरदान ह, जीये के साधन ह, भाव-प्रकाशन के माध्यम ह, वेदना के सान्त्वना ह, अन्तर्द्वन्द्व के नवनीत ह। कवि कहऽता कि–

दरद जब राग बन जाला त जिनिगी गीत लागेला
(गजल-8)

बाकिर सच्चाई ई बा कि कुल्ही अनुभव गीत ना बन पावे। कवनो-कवनो बाते गजल बन पावेले–

अनुभव नया-नया मिले 'भावुक' हो रोज-रोज
पर गीत आ गजल में ढले कवनो कवनो बात
(गजल-56)

गजल में पीर ढारत कवि स्पष्ट कहऽता कि जमाना के बात हमरा गीत-गजल में बा, खाली सपना आ आदर्श ना –

जिनिगी के जख्म, पीर, जमाना के घात बा
हमरा गजल में आज के दुनिया के बात बा
(गजल-14)

एह संदर्भ में कवि के सामाजिक सद्भाव के एगो दृष्टि सोझा आवता –

जेमे भगवान, खुदा, गॉड सभे साथ रहे
एह तरह के एगो देवास बनावल जाये
(गजल-6)

मन्दिर-मस्जिद के राजनीति करे वालन के प्रति कवि के नकार के भाव स्पष्ट बा। गजलकार के आशावादी प्रवृत्ति ओकरा जीवन गीत के सकारात्मक पक्ष बा–

जिन्दगी के हर लड़ाई शान से लड़ते रहब
प्राण में जबले जरत बाटे दिया उम्मीद के
(गजल-18)

एह तरे आंतरिक भा बाह्य, नैतिक-राजनीतिक, सामाजिक-वैयक्तिक जीवन के कवनो पक्ष या विन्दु के गजलकार अधूरा नइखे छोड़ले। विन्दु-विन्दु कइके जिनिगी के तस्वीर के पूरा उरेहे के ओकर यत्न बा, जवना में ऊ सफल बा। कतने गजल लोगन के कण्ठ में अमृत-रस ढार दी, एमे संदेह नइखे। भोजपुरी के खाँटी शब्दन के झरोखा से कवि के अपना धरती के माटी के सुवास भी अगरबत्ती नियर महक गइल बा-लकम, लूर अइसन शब्द अबहीं अपना पूर्व अस्तित्व में बा।

अंत में, भावात्मक सहज अभिव्यक्ति आ कथ्य के यथार्थवादी संवेदन के चलत ई रचना आपन प्रभाव छोड़े में सफल बा। साधुवाद ! ***

पुस्तक समीक्षा

डॉ. अशोक द्विवेदी

जथारथ का बिसंगतियन के अरथवान उरेह: 'ग्राम देवता'

भोजपुरी उपन्यास का क्षेत्र में आइल अंतराल के पाटे का कोसिस में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक कथाकार रामदेव शुक्ल का हाथे लिखाइल उपन्यास 'ग्राम देवता' अपना यथार्थ-चित्रण आ नया कथा-शिल्प का कारन, एगो सार्थक आ महत्वपूर्ण डेग मानल जाई। हिन्दी कथा-साहित्य खातिर ई भले नया ना होखे, बाकिर भोजपुरी उपन्यास-साहित्य का दिसाई ई उपन्यास नया आ ऐतिहासिक महत्व के बा।

जइसे कुकुड़ी (मकई) के खेत बे गोसयाँ के कउवा-सियार-माकुर भितरे ढुकि के चिचोहि घाललन स, ओइसहीं ओह गाँव के दशा बा। बे देवता के एह गाँव में भलमनई नाहिंये तमाम बाड़न। पढ़िनहार भर उपन्यास ओह देवता के खोजते रहि जाता बाकि अंत भइलो पर ऊ नइखन भेंटात। साँच कहीं त उपन्यासकार जवना गाँव के कथा कहत बा, ओमे कवनो देवता के बास नइखे। तमाम लंपट, कामी, पियक्कड़, चरित्रहीन, निठल्ला आ बकवादी लोगन का बीच में नाँव मात्र के नीक आदमी लउकत बाड़न। हमके बुझात बा कि अपना स्वारथ, पाप आ कुकरम से बिलात-ओरात एह गाँव के बदलल हाल-चाल बतावहीं खातिर, ई उपन्यास लिखल गइल बा। अधोगति के नियरा पहुँच रहल एह गाँव के सबसे गिरल आ दयनीय जाति बा 'ब्राह्मण'। उपन्यासकार एह ब्राह्मण-व्यक्तित्व के चिन्हावे-जनावे का फेर में, ओकरा विसंगति भर हींक चीर-फाड़ आ जलालत कइले बा।

ग्रामदेवता के कथा ओह उड़सत गाँव के कथा हऽ, जवना में मिल्लतः, भाईचारा, सहभागी-संस्कृति आ दुखे-सुखे अपना-आप पैदा होखे वाली सह अनुभूति, एक जुटता बिला रहल बा। इहवाँ सब एक दोसरा के दरकच के निकल जाए का फिराक में बा। कथा के गझिन बिनावट में जवन पूरा गाँव के कथा झाँकत बा, आम्मे कतने उपकथा आ छोट-छोट प्रसंग जोड़ल गइल बा। कथाकार गाँव के अन्दरूनी तह, उटकेर-उटकेर के, गाँव-जवार में होखे वाली बचकूचन, गप्प आ गढ़ल कहानियन के माध्यम से ओकर असली सूरत देखावे के कोसिस करत बा। ओह गाँव में जहाँ समाजिक बन्धन आ मरजादा के कूल्हि छरदेवालि भहरा गइल बाड़ी स, कथाकार का अँगुरी देखवला से पाठक के गाँव के कूल्हि छोट-मोट विकृति साफ-साफ नजर आवे लागत बाड़ी स। दाबल-तोपाल 'सेक्स' आ 'व्यभिचार' के वर्णन गँवई माहौल का मोताबिक बड़ा रोचक आ सवदगर बा। अउर सब व्यभिचार त फरका बा, घरहूँ में, जवन तोपल-ढांपल बा, ऊ पाठक के बाउर लाग सकेला जवना में ससुर पतोहिये के अवाँस लेले बा। एही तरे 'प्यारे तिवारी-सहनाज' के 'देह-कीर्तन'-प्रसंग में प्यारे क बाप गोपी तिवारी आ सहनाज के माई के गोपन यौन-संबंध के वर्णन बा। सोनमती भउजी-आ हरख नारायन के देह लीला अइसने

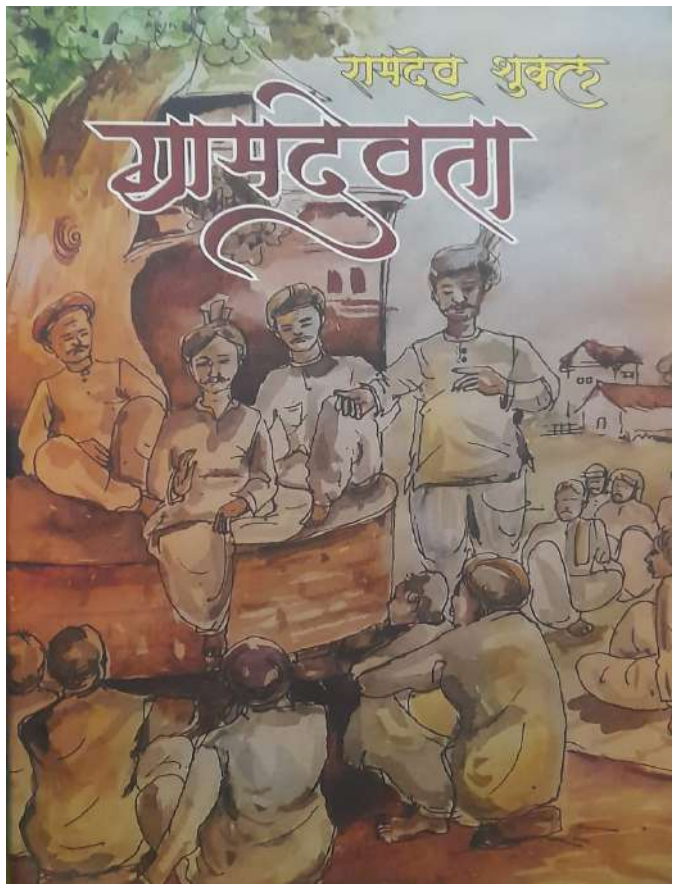

किताब: ग्राम देवता
लेखक: रामदेव शुक्ल
विधा:उपन्यास
प्रकाशक: परिदृश्य प्रकाशन मुंबई
प्रकाशन वर्ष : 2000
पृष्ठ संख्या: 216
मूल्य:100 रु

प्रसंग बा। उपन्यास का सुरूआते में कथाकार अपना पात्रन (गिरगिट, गोजर, मोहन, बिरजू, बिकरम आदि) का जरिये, गाँव के भीतर बढ़ल-पसरल भ्रष्टाचार, अनेति, व्यभिचार आ नकली धार्मिक अहंकार के बोकला उतारे शुरू क देत बा। 'पंच' आ 'पंचाइत' के पोल खोलत बा कथाकार सतुआ काका आ औतार बाबा जइसन बाबा-पात्रन के जरिये, ब्राह्मण-व्यक्तित्व के जथारथ उघारे लागत बा। गप्प आ कथा-कहानियन के उपयोग कइल गइल बा। गाँव से लगाइत कस्बा, शहर आदि के जियतार आ असली चित्र उरेहे खातिर कथाकार कचहरी, अस्पताल, ब्लाक के बी. डी.ओ; छुटभैया नेता, राजनीतिक पार्टी आदि के वर्णन कइले बा। खास कर कस्बाई आ शहरी अस्पताल के जवन नंगा-बिद्रूप बा, ओकर सटीक आ जीवंत चित्रण देखि के मन आहत हो जात बा। ई सब गाँव के भितरी आ बाहरी जथारथ के सजग चित्रण का रूप में मिली।

उपन्यास के विशिष्ट पात्र बाड़न हरखू उर्फ हरख नारायन मौर्य एडवोकेट। "बभनमंडली का डोमकच" में मजा लेबे वाला इ पात्र उपन्यास के मुख्य पात्र बा। आदर्श आ यथार्थ के कशमकश से भरल दलित जाति का एह पात्र में अच्छाई बुराई आ आदमी के कूल्हि गुन-अएगुन बा। अपना एही पात्र का जरिये कथाकार पूरा उपन्यास में हस्तक्षेप करत रहत बा। बात चाहे गाँव के होखे भा कस्बा-शहर आ राजधानी दिल्ली के, हरखू का जरिये कथाकार आपन अनुभव आ जानकारी अपना खास ढंग से उजागर करत बा। राजनीति, घटना-दुर्घटना, घोटाला, तस्करी, नजायज कब्जा आदि के पड़ताल करत ई पात्र आखिरकार समाज में भितरे-भीतर धन आ बाहुबल के सोरी फेंक लें एगो माफिया का आगा अपना के एकदम निरीह आ असहाय अनुभव करत बा। दलित उत्थान, नारी संरक्षण, समाज-सेवा आ विकास का नाँव पर राजनीति करे वालन के असली रूप देखि के भउँचक रहि जाता आ कुछ नइखे कर पावत। भेंड़ बकरी अस, हँकाए आ मिमियाये वाली जनता, जेके थू-थू क के फटकार लगावत बा, अगिला दिने ओही क जै जैकार करत लउकत बा (पृ075) हरख नारायन नाँव के ई पात्र शुरू से अतं ले धर्म-अधर्म, नेत-कुनेत, पाप-पुन्य आदि के दर्शक आ भोक्ता त बटले बा। एकरे द्वन्द आ तनाव में एगो अंतहीन दउड़ लगावत रहि जाता।

उपन्यास में कतने सामान्य असामान्य पात्र बाड़न स, जिनहन का जरिये कथाकार सामाजिक विसंगति आ विद्रूपता के उजागर करत बा। गिरिगिट, गोपाल, सोनमती भउजी, बाँके-कनगोइ, ललमन-फुन्नी, तसीलदार, जुम्मन चाचा, एमपी आजादी जी, पियारो रामफेर आदि कथा-सूत पर नाचे वाला जियतार पात्र बाड़न स। इनहने का मार्फत कथाकार अपना कथा के आगा बढ़ावत बा।

'ग्राम देवता' के एगो केन्द्रीय चरित्र अउरी बा-सोनमती भउजी। सुघर रूप, सोना अस दमकत देंहि, आ जवानी से लबालब भरल सोनमती भउजी के चरित्र सिरजे में कथाकार के 'सृजनात्मकता' के का पूछे के बा? भउजी अपना रसगर रूप का उमड़त बरखा से गाँव भर के मन-ईमान डोलवला का कारन चर्चा के विषय बाड़ी (पृ0114)। हरख नारायन उर्फ हरखू के अपना देह-रस से चार-अँजुरी पियवला आ आपन दीवाना बनवला का बाद, उनकर बदलल रूप सोझा आवत बा। 'फ्लैश-बैक' का जरिये उनका जिनिगी के कहानी उनहीं का जबानी सुने के मिलत बा। आगा चल के सोनमती एगो गहिर-गम्हीर आ अनुभवी मेहरारू का बदलल रूप में सोझा आवत बाड़ी आ जइसन कि कथाकार लोग अक्सर अइसन पात्रन के 'मन परिवर्तन' कराइ के एक ब एक महान बना देला, सोनमती भउजियो का साथे इहे भइल बा। 'मरद-निमरद के बीच के जीव' अपना सीधा सोझबक मरद के बेमार पड़ला पर उनके बचावे खातिर भउजी कूल्हि संभव उतजोग करत बाड़ी। एह प्रसंग में सोनमती के अंतर्द्वन्द के बड़ा उत्तेजक चित्र (पृ0172) पर भइल बा। जवना मरद के ऊ जिनिगी भर उपेक्षित कइली जेकर धेयान ना दिहली, ऊ वीतरागी देवता भले रहे, संपूरन मरद ना रही ओकरा विदाई का बेरा उनका भीतर प्रेम के दरियाव उमड़ आवऽ ता। अतं में अपन मरद बुद्धन का इच्छा का मोताबिक, ऊ उनका लासि के सेमर वाला खेत में जरावे खातिर ले जात बाड़ी। आ सती लेखा उनका सँगही जजभुइंसेज लेके प्रान त्याग देत बाड़ी। 'सोनमती' के ई अजगुत 'इच्छा-मृत्यु' एकदम असहज आ अस्वाभाविक लागत बा। हालांकि अइसन देखवला का पाछा कथाकार के उद्देश्य अतने रहल होई, कि कथा के चौंकावे वाला आदर्श नाटकीय अंत होखे।

रिदिरी-छिदिरी होत परिवार, समाज आ खंड खंड पाखंड ओढ़ले समाजसेवी, नेता, अफसर आदि लोगन के असल चेहरा देखावे खातिर कथाकार छोट-छोट घटना, खिस्सा, गप्प आ प्रसंग जोड़ि के उपन्यास के 'कैनवास' बड़ करे क कोसिस कइले बा-एम्मे कहीं-कहीं अतिरेको हो गइल बा जइसे (पृ0 152-153) पर देवी पाटन मेला के कहानी आ छठवाँ अध्याय में दहेज वाला बियाह के रोचक वर्णन कुछ अधिके बढ़ा दिहल बा। उपन्यास में कई जगह कथाकार के खास 'कमेन्ट' नत्थी बा जवन एकदम सटीक, व्यंगात्मक आ असरदार बा। जइसे गाँव का लड़िकन पर (पृ0 35) गँवई-कस्बाई माहौल पर (पृ0 65) डाक्टर का हाथे मरल बाप के मामिला दबावे खातिर बेटा का रुपया लिहला पर (पृ0 76) सचिव के गबन का आरोप में पकड़इला पर पियारो रामफेर के सचिवाइन के धउँस (पृ0 74)। एही तरे कहीं-कहीं बहुत बढ़िया काव्यात्मक बर्णन बा, जवन पाठक पर गहिर प्रभाव छोड़त बा। 'ग्राम देवता' में निछक्क ठेठ भाषा आ मुहावरा के सटीक प्रयोग देखत बनत बा। बाकिर भाषा का दिसाईं सजग रहला पर का जाने काहें कथाकार का हाथ से कहीं-कहीं ओकर लगाम छूटि गइल बा। कुछ शब्द त जानबूझि के भोजपुरियावे का चक्कर में बदल गइल बा। वकील के 'बोकील', उपाइ के 'उपाहि', सफारी सूट के 'सोपारी' सूट, लुत्ती के 'लुकुरी', अमनख के 'अमरख, फटकचंद (गिरधारी) के फटकलंड; जियरवा-भा हियरवा का जगह 'जिरहवा', नर्सिंग होम के 'नरसिंह होम' लाउडस्पीकर के 'लौडफेकर', अरदास भा अरज के 'अदरदास' आदि। पढ़ल-लिखल पात्रन का मुँह से अइसन बिगाडल भोजपुरी शब्द कहीं-कहीं अटपटाह लागत बा। अइसहीं खुद कथाकार जहाँ अपने वर्णन करत बा, ओहू जगहा पर अइसन खटके वाला शब्द आ जात बाड़न स। जइसे कथाकार पढ़निहार भोजपुरिहन का बजाय अपढ़ गँवार लोग के कथा सुनावत होखे (जइसे पृ0 156 पर सोनमती भउजी के मरद के डाक्टर किहाँ ले गइले पर, जाँच के वर्णन)। एकरा बावजूद 'ग्राम देवता' में माहौल आ घटना के वर्णन में एगो चटक जियतार रंग बा, जवन जथारथ के नगीच से देखे-देखावे में स्वाभाविक रोचकता पैदा करत बा। ***

पुस्तक समीक्षा

डॉ. शंकरमुनि राय 'गड़बड़'

भोजपुरी के ऐतिहासिक किताब: भोजपुरी साहित्य का इतिहास

भोजपुरी साहित्य आ संस्कृति के धुरंधर रचनाकार डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय जी के लिखल "भोजपुरी साहित्य के इतिहास" किताब एगो ऐतिहासिक धरोहर ह। ई किताब लोक संस्कृति प्रेस, दुगार्कुंड, रोड वाराणसी से १९७२ में पहिले पहिल छपल रहे। ४२० पेज के एह किताब के दाम ओह घरी १० रोपेया रहे।

एह में भोजपुरी साहित्य के जन्म से लेके उठान आ विकास के करमोकर वर्णन लिखल बा। हिंदी में लिखल ई किताब कुल्ह आठ अध्याय में पूरा भइल बा। पहिला अध्याय में भोज-भोजपुरी आ भोजपुरिया के बारे में खोजी बात लिखल गइल बा। साथे साथ भोजपुर नगर के इतिहास- भोजपुरी शब्द के शुरूआती प्रयोग- एकर व्यावहारिक आ व्यापक प्रयोग, भोजपुरी भाषा के शुरूआती रंग, रूप, क्षेत्र विस्तार, भोजपुरिया लोग के संख्या आ भोजपुरी भाषा के प्रकार के उल्लेख कइल गइल बा। उपाध्याय जी ओह घरी भोजपुरी भाषा के बोली आ ओकरा आदर्श रूप के छिनिगवले बानी।

दोसरिका अध्याय में भोजपुरी के काल विभाजन कइल गइल बा। एह में भोजपुरी के सिद्ध साहित्य आ नाथ साहित्य के जिकिर कइले बानी। एह में सरहपा; शबरपा; भुसुक; कण्हपा; कुकुरूपा; गोरखनाथ; भर्तृहरि आ हिंदी कवियन के भोजपुरिया साहित्य के उल्लेख कइले बानी। तीसरा अध्याय में संत साहित्य के बारे में निर्गुनिया कवि कबीरदास; धर्मदास; धरनीदास; पलटूदास के लोक वाणी के साहित्यिक चर्चा करते-करते सरभंग संप्रदाय के बाबा किन्नाराम; भिनकराम; भीखमराम; टेकमनराम; योगेश्वराचर्य आ सगुण संप्रदाय के रामशरण; रूप कलाजी; लक्ष्मी नारायणदास 'पवहारी'; रामा जी; सखी सम्प्रदाय के लक्ष्मी सखी; कामता सखी; शिनरायणी सम्प्रदाय के साथे साथ बावरी संप्रदाय के बावरी साहिबा; बीरु साहब; बुला साहब; गुलाल साहब आ भीखा साहब के भक्ति गीतन में भोजपुरिया रस-स्वाद बतवले बानी।

किताब के चौथा अध्याय भोजपुरी के लोकसाहित्य पर आधारित बा। एह में यूरोपियन विद्वानन जार्ज ग्रियर्सन; बिल्लियम क्रुक; फ्रेजर; बीम्स; शिरेफ के लोकसाहित्य संग्रह से लेके भारतीय विद्वान रामनरेश त्रिपाठी; कृष्णदेव उपाध्याय; **दुर्गाशंकर** प्रसाद सिंह "नाथ"; गणेश चौबे; श्री आचार्य देवेंद्र सत्यार्थी; श्रीधर मिश्र; उदयनारायण तिवारी; मुक्तेश्वर तिवारी के साहित्य संकलन के जोरदार उल्लेख कइल गइल बा। एही अध्याय में भोजपुरी संस्कार गीतन के शुरूआती संकलन के जिकिर बा आ भोजपुरी के भाषायी आ साहित्यिक संस्कार के चर्चा बा। एह में भोजपुरी संस्कार गीतन के प्रकार आ स्वरुप के उदाहरन सहित लिखल गइल बा।

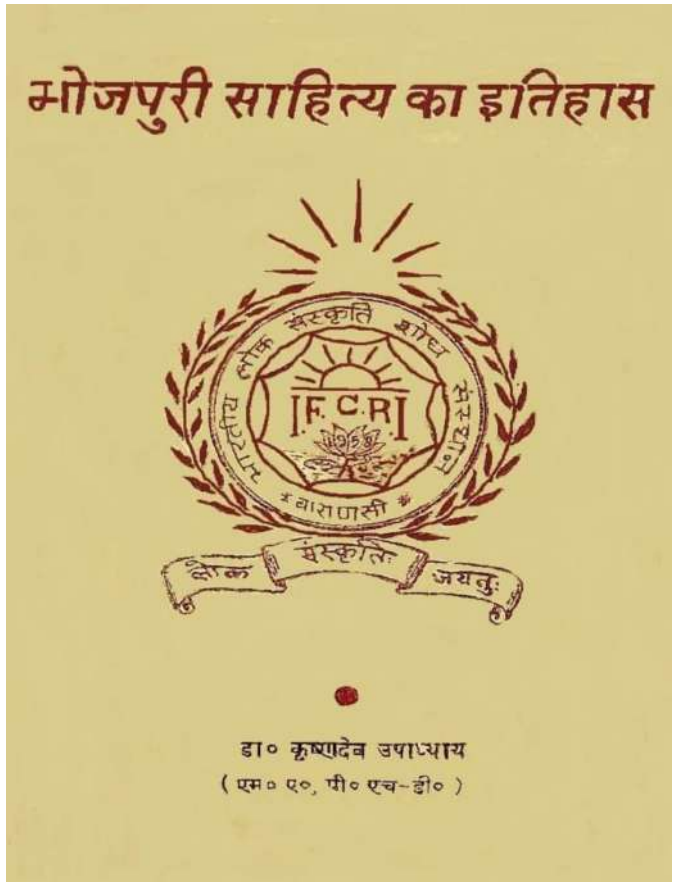

पुस्तक : भोजपुरी साहित्य का इतिहास
लेखक : डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
प्रकाशक : भारतीय लोक संस्कृति शोध संस्थान, दुर्गकुंड रोड, वाराणसी (उ०प्र०)
प्रकाशन वर्ष : 1972
पृष्ठ : 127

पांचवां अध्याय के 'आधुनिक साहित्य' नाम दियायिल बा। एह में भोजपुरी काव्यधारा शीर्षक के भीतर बाबा बुलाकी दास के चैता-फगुआ से लेके रामकृष्ण वर्मा "बलबीर"; तेग अली तेग; बाबू अम्बिका प्रसाद; बिसराम; दूधनाथ उपाध्याय; रघुवीर नारायण; महेन्दर मिसिर; भिखारी ठाकुर; मनोरंजन प्रसाद सिन्हा; महाराजा खंग बहादुर मल्ल; दुर्गा प्रसाद सिंह सहित कुल्ह ४३ गो रचनाकार लोग के जनम-करम सहित उनका कवितन के उदाहरण देहल गइल बा। किताब पढ़ला पर भोजपुरी साहित्य के करमोकर विकास झलके लागता आ जइसे-जइसे आगे बढ़ल जाता भोजपुरी भाषा आ साहित्य दुनो के स्वाभाव में बदलाव लउके लागता।

किताब के छठवां अध्याय 'भोजपुरी-गद्य-प्रवाह'ह। एह में भोजपुरिया काम में उपयोग कइल पुरान-धुरान कागज-पतर में लिखल भोजपुरी गद्य के उदाहरन बा। फेर आधुनिक गद्य के भीतर नाटक; एकांकी; रेडियो नाटक; कहानी; उपन्यास; निबंध; रेखाचित्र; जीवनी संस्मरण; रिपोर्ताज; पत्र-पत्रिका आ भोजपुरी कोश के वैज्ञानिक ढंग से परिचय आ उदाहरन आइल बा। सातवां अध्याय उपसंहार ह जवना में भोजपुरी भाषा आ साहित्य के महत्ता आ भविष्य बतावल गइल बा। साथ ही एह में भोजपुरी के सरल; सशक्त रूप; क्षेत्र विस्तार; भोजपुरिया लोग के संख्या; अंतर्राष्ट्रीय स्वरुप बतावल गइल बा। एह में भोजपुरी के प्रचार-प्रसार में फिलिम के योगदान के जिकिर भइल बा।

किताब के आठवां अध्याय में 'भोजपुरी के उन्नायक' जार्ज ग्रियर्सन; सचिदानंद सिन्हा; राजेंद्र प्रसाद; बाबा राघवदास; राहुल सांकृत्यायन; रघुबीर नारायण सहित २२ लोग के जन्मपत्री सहित परिचय बा। किताब में ४ गो परिशिष्ट बा। पहिला में भोजपुरी में छपल २१ गो पत्र-पत्रिका, दूसरा में १६ गो भोजपुरी संस्था; तीसरा में भोजपुरी भाषा आ साहित्य से सम्बंधित १२ गो महत्वपूर्ण ग्रन्थ के सूची आ चौथा में एह किताब से सम्बंधित किताब आ लेखक लोग के नाम वर्ण के क्रम से लिखल गइल बा।

एह किताब के भूमिका में बतावल गइल बा कि ई किताब भोजपुरी में कतना आ कइसे ऐतिहासिक बा। लेखक के कहनाम बा कि मैथिली आ राजस्थानी के छोड़ के हिंदी के तमाम बोलियन के जनपदीय भाषा के साहित्य के इतिहास अभी तक नइखे लिखल गइल। अतने ना लेखक जी जोर देके कहले बानी कि ई भोजपुरी साहित्य के पहिला इतिहास ग्रन्थ ह। एह से पहिले कवनो विद्वान लोग भोजपुरी साहित्य के इतिहास लिखे के कोशिश ना कइले रहे। मतलब ई कि भोजपुरी के साहित्यिक इतिहास के नजरिया से भोजपुरी के पहिलका मौलिक ग्रन्थ ह।

किताब के इतिहास बतावे के क्रम में उपाध्याय जी के कहनाम बा कि भोजपुरी के लिखित साहित्य से बेसी एकर अलिखित साहित्य बा, आ कुछ त अइसनो बा कि जवना के लिखवइयो के नाम-पता नइखे। केहू लिखबो कइल त छपल ना आ बिला गइल। एह विचार से देवरिया के पंडित छांगुर त्रिपाठी; दूधनाथ शर्मा 'श्याम'; धरीक्षण मिसिर; अनुरागी जी के नाम खास तौर से उजागर कइले बानी। किताब बतावतिया छांगुर त्रिपाठी गाँधी जी के स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल रहनी आ उँहा के आल्हा छंद में 'स्वराज्य' का आल्हा' नाम से एगो ऐतिहासिक गीत लिखले रहीं।

देवरिये के दोसर कवि दूधनाथ शर्मा 'श्याम' जी के बारे में उल्लेख बा कि इन्हां के मंचीय कवि रहनी आ बेधड़क कविता सुनावत रहीं। श्री जनार्दन पांडेय 'अनुरागी' के एगो बहुते मशहूर कविता 'रामराजी फुआ' के बारे में लेखक के कहनाम बा कि ई 'करुण रस के महाकाव्य' ह। ***

गजल

हमरा सँगे अजीब करामात हो गइल
सूरज खड़ा बा सामने आ रात हो गइल

परिचय हमार पूछ रहल बा घरे के लोग
अइसन हमार हाय रे, औकात हो गइल

जमकल रहित करेज में कहिया ले ई भला
अच्छे भइल जे दर्द के बरसात हो गइल

'भावुक' हो! हमरा वास्ते बाटे बहुत कठिन
भीतर जहर उतार के सुकरात हो गइल

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

सूर्यदेव पाठक 'पराग'

बाबू : सेवा आ सादगी के प्रतीक मोहक व्यक्तित्व

पुरनका सारण आ अब के सीवान जिला के पुरान साहित्यसेवियन में संत कुमार वर्मा जी के नाम बहुत आदर का साथे लिहल जाला। उहाँ का हिन्दी आ भोजपुरी में अनेक पुस्तकन के रचना कइनी आ कुछ पुस्तकन के संपादनो कइनी। उहाँ का कई महापुरुषन के जीवनी लिखनी, जवन अपना समय में काफी चरचा में रहल। वर्मा जी पेशा से वकील रहीं, बाकिर मन-मिजाज से सच्चा साहित्य सेवी रहीं। भोजपुरी का प्रति काफी नेह-छोह रखे वाला भारत के पहिला राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, वर्मा जी के आदर्श रहीं। एही से उहाँ का राजेन्द्र बाबू के जीवनी हिन्दी में ना लिख के भोजपुरी में लिखनी, जवन देखे में दूबर-पातर लागत बा, बाकिर राजेन्द्र बाबू का जिनगी से जुड़ल तमाम घटनन के बहुत सलीका से सजा के ओकरा के उपयोगी बना देहल गइल बा।

भोजपुरी में लिखल एह पुस्तक पर आपन विचार प्रगट करत अक्षयवर दीक्षित जी लिखले बानी - 'एह जीवनी के आपन महत्त्व बाटे काहे जे पूज्य राजेन्द्र बाबू पर अनेक पुस्तक प्रकाशित भइल बाड़ी सन, तेहू पर जवना भोजपुरी भाषा के राष्ट्रपति भवनो में भोजपुरिया का मिलला पर बाबू ना छोड़नी, ओही भाषा में ई जीवनी लिखाइल बा, साथ ही गर्व के बात बा जे बाबू का राष्ट्रपति पद से अवकाश ग्रहण कइला पर उहाँ का निजी सचिव का रूप में लेखक का बाबू के बड़ा नजदीक से निरखे-परखे के मोका मिलल बा, तबे नू एकर महत्त्व आसमान छूअता'।

वर्मा जी अपना लेखकीय वक्तव्य में राजेन्द्र बाबू के भोजपुरी प्रेम का बारे में जवन देखले-सुनले भा अनुभव कइले रहीं, ओकर चरचा करत लिखले बानी- 'अइसे त देस-बिदेस में भोजपुरी के नेही-सनेही बेसुमार बाड़े बाकिर बाबू के दिल दिमाग में भोजपुरी खातिर जे सहज प्रेम आ अटूट श्रध्दा पावल जात रहे, ओइसन प्रेम आ श्रध्दा दोसरा में कम देखे-सुने के मिले ला। बाबू जहाँ-जहाँ रहनी उहाँ-उहाँ के वातावरण अपने आप भोजपुरीमय बनत गइल आ बिना कवनो दबाव चाहे प्रलोभन के। चाहे उहाँ के सदाकत आश्रम में रहनी चाहे राष्ट्रपति भवन में, अपने आप एह गैर भोजपुरी क्षेत्र के निवासी लोग भोजपुरी सीखे लागल आ महिना-दू महिना में कामचलाऊ भोजपुरी बोले लागल। इहे कहाला व्यक्तित्व के चमत्कार।

एह पुस्तक में राजेन्द्र बाबू के पारिवारिक परिचय, जन्म आ शिक्षा, सुधारवादी विचार, स्वदेशी आन्दोलन, वकालत आ जनसेवा, पटना के जीवन, चम्पारन सत्याग्रह, जेल-यात्रा, कांग्रेस सभापति, साहित्य-सेवा, सरकारी-सेवा, विदेश-यात्रा, महाप्रयाण आ उपसंहार क्रमबध्द रूप में चित्रित भइल बा।

राजेन्द्र बाबू का पूर्वज के बारे में लेखक के मत बा जे ऊ लोग जीरादेई

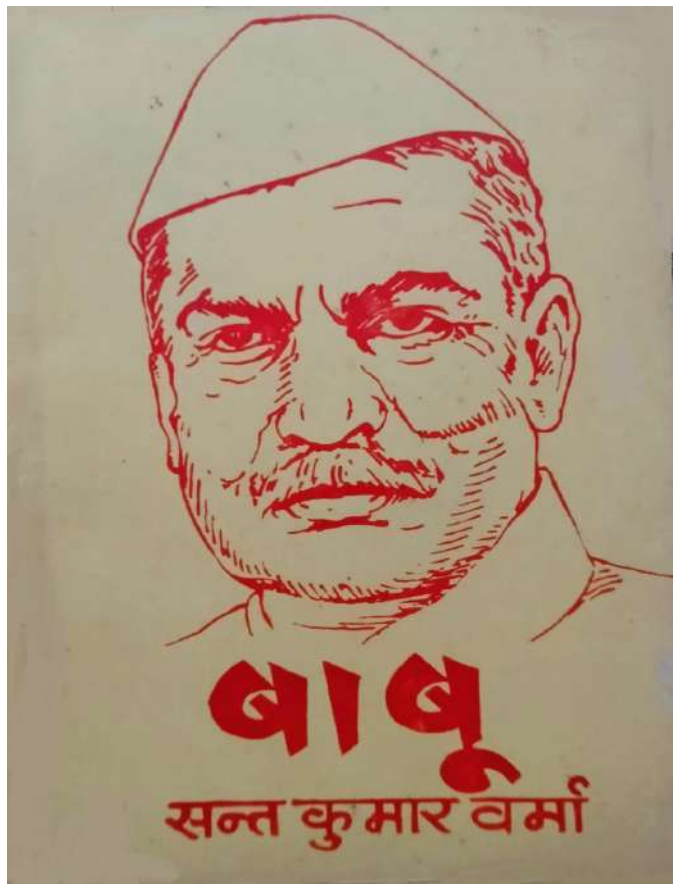

पुस्तक : बाबू
लेखक : सन्त कुमार वर्मा
विधा : जीवनी
प्रकाशक : साहित्य परिषद्, सीवान
प्रकाशन वर्ष : 1977
कुल पृष्ठ : 34
मूल्य : 2/-

के मूल निवासी ना रहे, बलुक दर-दर के ठोकर खात जीरादेई आ के बस गइल। अपना मेहनत आ शुध्द आचार-विचार का चलते भोजन-वस्त्र के इन्तजाम करत समाज में एगो नीक जगह बनावल।

राजेन्द्र बाबू छपरा जिला स्कूल से सन 1902 में इन्टरेन्स के परीक्षा में कलकत्ता विश्वविद्यालय से सर्वप्रथम स्थान पा के आगहूँ एफ०ए० (आज के आई०ए०) आ बी०ए० में भी सर्वप्रथम स्थान पवनीं, जेकर चरचा पुस्तक में भइल बा। राजेन्द्र बाबू एम०ए० के परीक्षा में कवन विषय ले ले रहीं एकर चरचा पुस्तक में नइखे, बाकिर इम्तहान का पहिले पिता जी के देहान्त भइला से पढ़ाई में बाधा का चलते एम०ए० में सर्वप्रथम भइला के कायम ना रखला के चरचा भइल बा। राजेन्द्र बाबू एम०एल० के परीक्षा में सर्वप्रथम आ के ओह टूटल परम्परा के फेर से जोड़ देहनीं।

राजेन्द्र बाबू के वकालत अध्यापन के बीच व्यस्त दिनचर्या का साथे एम०एल० के पढ़ाई के विषय में चरचा करत वर्मा जी लिखले बानी – 'सुबह के समय मुकदमा के तैयारी में लाग जाय। हाई कोर्ट से लौटला पर कुछ समय क्लास लेक़र तैयार करे में लागे। सुबह एक-सवा घंटा केहू तरे निकाल के एम०एल० के तैयारी होखे। तबो ई कम आश्चर्य के बात ना भइल कि एम०एल० के परीक्षा में सर्वप्रथम आ के इहाँ का टूटल परम्परा फेनु कायम कइनी।

पुस्तक में स्वदेशी आन्दोलन में सहभागिता, वकालत आ जनसेवा, पटना में उच्च न्यायालय का स्थापना के बाद पटना के जीवन, चम्पारन सत्याग्रह में सहभागिता के दौरान राजेन्द्र बाबू के कर्मठता, कर्तव्यनिष्ठा, चरित्र के प्रति दृढ़ता आ मस्तिष्क के परिपक्वता का साथे महात्मा गाँधी से निकटता के चरचा संक्षेप में मिल जाता।

वर्मा जी बहुत कम शब्दन में राजेन्द्र बाबू के असहयोग आन्दोलन का चलते वकालत छोड़ल, बिहार विद्यापीठ के स्थापना भइला पर प्राचार्य के पद पर काम, 1922 में गया कांग्रेस का अधिवेशन के स्वागत मंत्री, 1923 से 1927 ले देश के तूफानी दौरा, पटना म्युनिसपैलिटी के चेयरमैनी, नमक सत्याग्रह के दौरान 1930 में जेल यात्रा, अखिल भारतीय कांग्रेस के 1934, 1939 आ 1947 में सभापतित्व आदि के चरचा कइले बानी।

राजेन्द्र बाबू के साहित्यो से गहिर लगाव रहे। लेखक के अनुसार- हिन्दी-अंग्रेजी में दर्जनों किताब के रचना क के इहाँ का सिध्द क देले बानी कि अगर अवसर मिलल रहित त देश के अइसन साहित्यो के भरपूर सेवा कइले रहतीं आ आपन अनमोल निधियन से माँ भारती के भंडारो भरले रहतीं। राजेन्द्र बाबू अखिल भारतीय स्तर के हिन्दी साहित्य सम्मलेन के सभापति पद के सुशोभित कर चुकल रहीं। 'सरकारी सेवा में' शीर्षक के अंतगति 2 सितम्बर 1946 में बनल अंतरिम सरकार में कृषि-मंत्री, 11 दिसम्बर 1946 में भइल भारतीय संविधान परिषद् के सभापति, 26 जनवरी 1950 से 13 मई 1952 तक भारतीय गणराज्य के अंतरिम राष्ट्रपति आ 1952 से 1957 आ फेर 1957 से 1962 तक राष्ट्रपति पद पर रहला के चरचा भइल बा।

विदेश यात्रा के प्रसंग में राजेन्द्र बाबू के अनेक बार विदेश यात्रा कइला के उल्लेख बा। पुस्तक के आखिरी दू गो शीर्षक महाप्रयाण आ उपसंहार का बाद जीवन के झाँकी में जन्म से ले के महाप्रयाण तक के घटनन के चरचा क के गागर में सागर भरे के सराहे जोग काम भइल बा। भोजपुरी में अइसन पुस्तकन के बहुत जरुरत बा। ***

गजल

गजल जिन्दगी के गवाए त देतीं
दिया साधना के बराए त देतीं

कहाँ माँगऽ तानी महल, सोना, चानी
टुटलकी पलनिया छवाए त देतीं

कहाँ साफ लउकत बा केहू के सूरत
तलइया के पानी थिराए त देतीं

बा जाये के सभका, त हम कइसे बाँचब
मगर का ह जिनिगी, बुझाए त देतीं

रही ना गरीबी, गरीबे मिटाइब
अरे, रउआ अबकी चुनाए त देतीं

लिखाई, तबे लूर आई लिखे के
मगर रउरा चिचरी पराए त देतीं

मचल आज 'भावुक' के दिल में बा हलचल
हिया में हिया के समाए त देतीं

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

विष्णुदेव तिवारी

समय के साँच से उपजल शब्दन के साँच

भोजपुरी काव्य क्षेत्र में शारदानन्द प्रसाद अपना खास तेवर आ सामयिक बोध भरल रचना कौशल खातिर जानल जाले। उनकर काव्य पुस्तक 'का कहीं' के बेसिए कविता छोटहन बाड़ी सन। ओमे आज के आदमी के हाव-भाव-सोभाव, ओकरा अगली-बगली उठत-गिरत व्यक्तिगत भा सामाजिक समस्या आ राजनीतिक खपचाल साफे झलकत बा- कतहूँ गोट अभिधेय रूप में त कतहूँ चोख व्यंजना आ लक्षणा के सहारे।

कवि के आकलन बा जे संसार सुख आ सगुन देबे वाला ठहराव ना होके जरत अलाव हो रहल बा- 'एने बा आग/ त/ ओने बा भउर' ('का कहीं' पृ०-38)। जिनगी के अर्थ आ मकसद अलोपित हो गइल बा। कठोर आ क्रूर यथार्थ सुकवार भावना आ कोमल बोध के अँखुआये नइखे देत। नाता-रिश्ता, स्नेह-सम्बन्ध सबके माने आ परिभाषा बदल रहल बा। केकरा पर विश्वास करो आदमी? धूर्तई, लंपटता, बरजोरी, भ्रष्टता आ परपीड़ोन्मुखता में डूबल संसार से जइसे ओकर लय-ताल रूस गइल होखे –

जिनिगी के साज/ आज बाजत/ बेसुरा।
मिठका सपनवाँ/ आज रह गइल/ अधूरा।
अंखिया से/ टपक रहल/ खून के कतरवा।
प्रेम से सिंचाइल गाछ/ निकलल धतूरा।

नेक-शरीफ आदमी के दर्द इहे बा। सबकुछ बेतरतीब आ सुधार के आधार नदारथ। बाकिर कवि के आँख तेज आ आधार खोजी होले, ओकरा हिसाबे डँवाडोल घरी में क्रान्ति पोसाले आ झूठ-कुत्सा पर साँच आ स्नेह के जीत होला –

आदमी/ एक दिन जागी।
आ/ इतिहास के राखी में से/ टकटोर के/ एगो लुत्ती निकाली।
तब/ ओह लुत्ती से/ ऊ सूली धह-धह क के/ धहका दी
जेपर/ कवनो ईसा/ चढ़ावल जाये वाला बाड़न।

कवि का मानवता के सोभाविक शक्ति पर पुरहर आस्था बा, जवन आस-विश्वास सृजन धर्म के असली निचोड़ आ युग-धर्म के पहचान ह। रेत में छटपटात मछरी के पानी के जरुरत होला ना कि आग के। जवन रचना में खाली मर्शिया उधार होखे, ऊ समय का साथे चले के कूबत छोड़ देले।

'का कहीं' में जीवन-यथार्थ के तीन गो भाव बा। पहिला एगो दायरा में

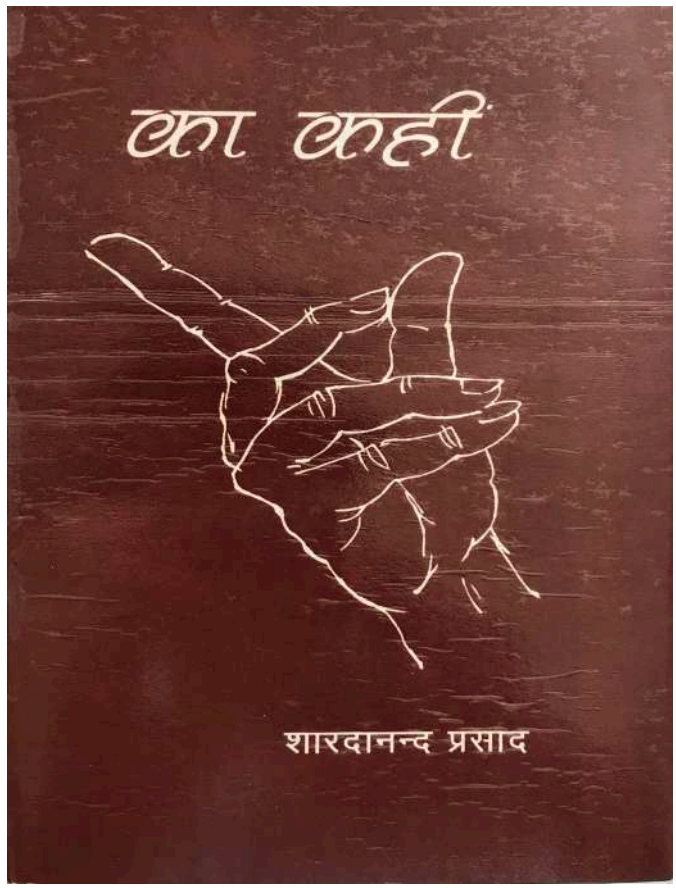

किताब: का कहीं
लेखक: शारदानन्द प्रसाद
विधा: भोजपुरी कविता-संग्रह
प्रकाशक: भोजपुरी संस्थान, पटना
प्रकाशन वर्ष : 1997
कुल पृष्ठ: 64
किताब के मूल्य: 40 रु

मानवीय पतन के दशा-संकेत, दोसर भारतीय राजनीति में अपराधीकरण, जैविक ठाटबाट, मूअत-छटपटात सामान्य जन के व्यथा-वेदना आ तीसर सार्वभौम प्रेम आ नेकनीयती के अंकन।

कुछ कवितन में भोगल साँच से उपजल सहज बिम्बन के सधल प्रयोग बा। कविता, दर्द आ दर्शन के मौलिकता का संगे आम जन के यथार्थ से गहिर ताल्लुकातो राखत बा। एह से ओकर भावो सहजे समझे लायक बा। रूढ़ि आ आत्मघाती पुरातन मोह पर मारल गाभी द्रष्टव्य बा –

हमरा जूता के एगो काँटी/ खिया गइल बिया।
चलत-चलत बेचारी/ कबो-कबो सुगबुगाले/ त चभकेले।
हम चाहीले जे/ ओकरा के नोच के फेंक दीं।
ओह घड़ी/ ऊ छोट काँटी सुकपुका जाले
आ धरा ना पावे/ त हम जोर से ओकरा के/ ठोक दीहीले।
बाकिर/ ऊ मानेले का?
फेर सुगबुगाले/ आ फेर सुगबुगाले।

काँटी प्रतीक बा, जवन परंपरित आदर्श आ विमूढ़ लगाव के डेगे-डेगे गढ़ऽता। आदमी काँटी वाला जूता एह भ्रम में नइखे फेंकत कि तनी ठोकठाक दिहला से सब ठीकठाक हो जायी। बाकिर कुछुओ ठीक नइखे होत। एहिजा पुरान जूता फेंके आ नया के जरुरत रेखांकित बा, जवन बेवस्था परिवर्तन के द्योतक बा। कवि के मतलब राजनीतिक बेवस्था से बा। ओइसे ई सामाजिक भा आर्थिक भा तीनो हो सकेला।

भारतीय जनतंत्र मखौल बन गइल। साधारण आदमी पहिलहूँ गुलाम रहे, अबो बा, जबकि सुराज-संघर्ष में ओकरे सर्वस्व जरिछार भइल रहे –

जे जनमावल/ उहे तवाँ गइल/
घलुआ के पूत/ पड़ोसिन पा गइल।

'हरामखोरन' के सेतिहे में ताकत, तख्त आ सगरी संशोधनन पर एकाधिकारो भेंटा गइल–

बाकिर/ इहाँ एक मुट्ठी के/ के कहो
बुढ़िया त/ भर मुँहे/ लाई चोरवले बिया।

कुपात्रन का हाथे स्वतंत्रता के शील-हरण हो गइल। सच्चरित्र-देशभक्त राजनीति से कटले त बलात्कारी, गिरहकट आ राष्ट्रद्रोही अन्हरदउड़ में शामिल हो गइले। आम जन के मोल जानवरो से गइल-बहाइल बा –

पता ना/ आज फेर/ केकर मउअत/ ऊ ले आई।
हऊ देखीं/ मचान पर चढ़ल बा/ ऊ बउरहवा
आ ओकरा मुँह में/ माइक समाइल बा।

जनतंत्री जोंक जिनगी के सब रस चूसि लिहले सन आ कोढ़ि में खजुलाहट, ई करनी रावण के आ आवरण-अवलेप राम के। आसुरी वृति जइसे कउआ के जीभ खइले होखे –

ऊपर-ऊपर/ राम मुस्कियाले/ आ भीतर से/ रावण ठहाका मारेला।
एही बीचे/ रावण के जरत पुतला
उठ के चले लागल/ त/ बड़ा हड़कंप मचल/ आ
आदमी के होखे लागल/ भरम/ अपना जियला के।

उपभोक्ता संस्कृति भा अपसंस्कृति आदमी का बीचे अइसन बीया रोपलस जे कृतघ्नता जनमल। सम्बन्ध तरजूई पर जोखाये लागल। अपना सवारथ ले सिकुड़ल आदमीयत एक दोसरा से कटत अनचीन्हार जस अपना खोल में लुकाइल बा –

आसमान छुअत/ इमारतन का नीचे/ सँसरत बा लोग,
सहमल-सहमल/ कि कहीं/ आदमी से भेंट ना हो जाय !

'का कहीं' के केन्द्रीय स्वर विरोधात्मक रहला से कविता प्राणवान बाड़ी सन। संग्रह में राजनीतिक सड़ांध के रूप के चित्रण परतोख जोग बा –

लमहर तकरीर रैली के/ आ बेजान तस्वीर
xxx
तब/ मकड़ी के जाला अस/ चारो ओर आभा फइला के
ओकरा बीच में/ बइठल कवनो किरौना
आँख मूँद के/ रसे-रसे झूलत रहेला,/ डोलत रहेला।
xxx
आ कबो-कबो/ रात के अन्हरिया में पिछुअरियो के दरवाजा खुलेला,/ धीरे से।
बाकिर काहे त/ पहरा पर के कुतिया ना भूँके।
xxx
बाज/ खा के किरिया/ बइठ गइल डाढ़ी पर।
का दो/ अब ऊ ना मारी झपट्टा।

कुछ कवितन में जीवन-मरण, राग-विराग, प्रेम-घृणा जइसन सनातन सत्यन के काव्य भंगिमा द्रष्टव्य बा –

दरपन में/ अपने के निहार-निहार
चान नियर सिरजना के/ सभे देखेला।
बाकिर/ केहू के/ ई ना पता चलेला
कि ऊ केने से उगेला/ आ/ केने बिसवेला।

संवेदना आ भाव-प्रवणता एह संग्रह के विशेषता बा। एमे स्वार्थी मानसिकता के संगे आदमी के अडोल विश्वास आ निरीह अलेव प्रेम के सम्यक छवि बा –

खंडहर के/ दुआरी पर बइठल
बुढ़िया/ सीयत बिया/ आपन फाटल-पुरान लुगरी,/
जवन/ ठहरत नइखे/ सूई के नोख पर,
भरनी हो गइल बा/ तार-तार।

महँगी के रूप चित्रित करत, अरूप-रूपन शैली से ओकर कारणन आ प्रभावन के सुघर चित्रण द्रष्टव्य बा। बुढ़िया के सम्बन्ध भारत माता आ ओकरा बेटा के सम्बन्ध आज के 'भारत भाग्य विधाता लोग' से जोड़ल जा सकत बा –

तनो/ सुबहित बाँचल नइखे / ताहम/ ऊ लुगरी जोगावतिया
काहें कि/ कहले बा ओकर बेटा/ अबकी फागुन में भेजे के लुगा।

समीक्ष्य कृति में मानवीय भावना आ संवेदना के व्यंजना करुणा के भीतर से उरेहाइल बा आ मर्मछुअन व्यंग्य के जवरे राजनीतिक त्रासदी के उटकेरत बहरिआइल बा। 'का कहीं' बेशक भोजपुरी के एगो श्रेष्ठ कविता-संग्रह बा।***

पुस्तक समीक्षा

डॉ.संध्या सिन्हा

आशारानी लाल के 'सितली'

भोजपुरी कथा साहित्य के दुनिया मे आपन विशिष्ट पहचान राखे वाली कथाकार श्रीमती आशारानी लाल के कथा संग्रह 'सितली' भोजपुरी साहित्य मे कथा खास करके संस्मरणात्मक कथा के सुन्दर वितान बीन रहल बा। आपन सुन्दर आवरण मे हिरणी अस निर्दोष आँखिन से राह ताकत एगो मेहरारू के चित्र अनासे कह जाता कि संग्रह के कहानी सभ नारी संवेदना, सवाल आ विमर्श के लेखा जोखा बाड़ी स।

सितली सन 2007 मे मुंबई से प्रकाशित भइल बा जे उनकर पति स्वनामधन्य साहित्यकार डॉ.रमाशंकर लाल जी के समर्पित बा। संग्रह में कुल 18 गो कहानी बाड़ी स। भूमिका हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय पूर्व अध्यक्ष श्री रामजी तिवारी जी के सधल लेखनी से हिंदी में रचल गइल बा। आ एकरा बाद बहुत कम शब्द मे आपन हिरदया के उदगार लेखिका लिखले बाड़ी।

कुल 18 कहानियन मे स्त्री के सामाजिक, आर्थिक आ सम्वेदनात्मक जटिलता के गहन अवलोकन आ चिंतन के जमीन प ओकर द्वन्द, निराशा, सहनशक्ति, बेबसी के साथ। जीवनी शक्ति आ हिम्मत के सांवेगिक आ मनोवैज्ञानिक चित्रण बा। कहानी पढला से ई साफ-साफ लउकता कि कहानी के पात्र अगले बगल से लिहल गइल बा। कहानी लिखल नइखे गइल बलुक पात्र खुदे लेखिका के हाथ पकड़ के लिखववले बा संग्रह के पहिलकी कहानी 'के बताई' में बड़की भउजी के परित्यक्त जीवन ढोवे के बेबसी, 'ई बुझउल' मे एगो मेहरारू के शारीरिक भिन्नता के उजागर ना कर सके के सामाजिक विवशता, गोपा आ मोना के समानांतर नारी-चरित्र के बुनावट कर के विधवा के जीवन के त्रासदी आ ओकर दोसर बियाह भइला प ओह नया जीवन के विडम्बना के चित्रण अत्यन मार्मिक कइल गइल बा। संग्रह के शीर्षक कहानी 'सितली' मे एगो गूँगी स्त्री के अपना अपंगता प विजय के कहानी पिरोवल गइल बा। जे सकारात्मकता से आशा के संचार कर रहल बो अगिला कहानी 'हमरो पता जान ल' मे एगो विवाह पूर्व जनमल बेटा के मतारी के **मर्यादा** के प्रश्न गुथल बा त 'पापा बानी त बानी' में आजकाल्ह के जिनगी के सच्चाई आ भारतीय समाज के स्खलन के कथावस्तु मे विवाहेतर सम्बन्ध के दुष्परिणाम के सोगहक बिनावट बा। 'हमार का होई' कहानी बहुते ज्वलंत मुद्दा वृद्ध विमर्श प रचल बा जेमे मरणोपरांत

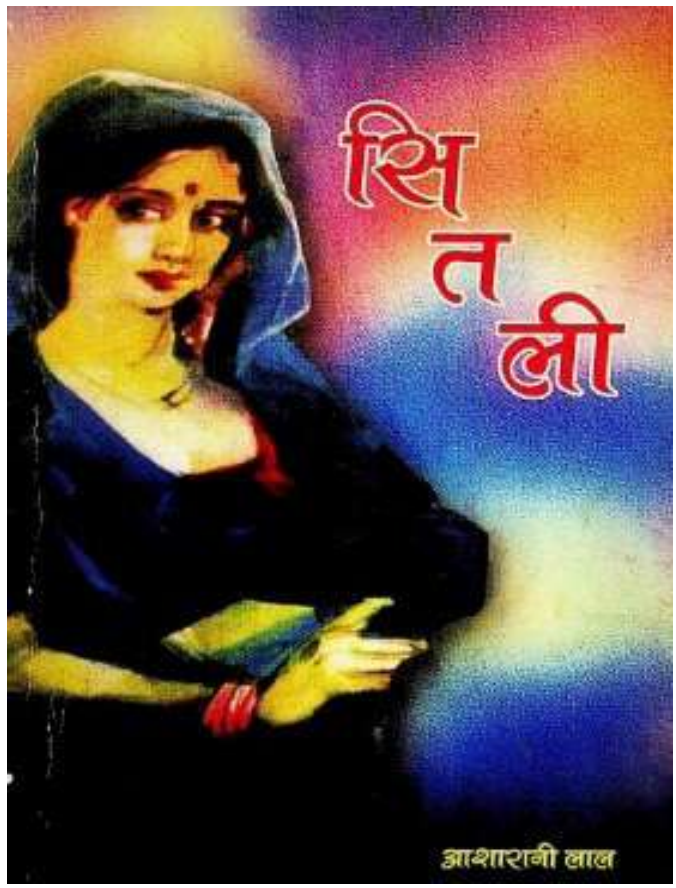

किताब: सितली
लेखिका: आशारानी लाल
सम्पादक: कन्हैया सिंह 'सदय'
विधा: कथा संग्रह
प्रकाशन वर्ष : 2007
मूल्य: 80 रुपये

कर्मकांड आ जीवित व्यक्ति के सेवा में द्वन्द के स्थिति चित्रित बा। अगिला कहानी 'करिया कोट' में कहानीकारा बहुत ही चतुराई से ई कहे के कोशिश कर रहल बाड़ी कि आज के औरत आपन बंधन के अपने काट के सही मायने मे आधुनिक हो रहल बिया। एह संग्रह के अगिला कहानी 'परिछावन' मे समाज आ ओकर धुरी स्त्री के साकारात्मक आधुनिकता के स्थापित कइल गइल बा। 'सुबहा' कहानी में विवाहेतर सम्बन्ध के विडम्बना आजकाल्ह के महानगर के सत्य बतावत बा त 'ढाई आखर' में पौराणिक कथा घटना के आधार प प्रेम के महिमा के वर्णन बा जे वास्तव में कहानी ना कहाई। 'कइसे उकेरीं' एक प्रकार के रेखाचित्र हवे जवना में एगो बहुते निर्दोष आ मासूम किरदार के सुन्दर चित्रण बा। 'गुदरा' कथा मे एगो शिल्पी के कला प्रेम आ ओकर स्वाभिमान के देश आ संस्कृति के प्रति अगाध प्रेम से जोडत आत्मकथा के बुनावट बा। जे हस्तशिल्प के वैश्वीकरण से जोड़े के कथा बा। 'हमार गाँव' एगो विचार हवे जवना में नारी आपन घर-गाँव के तलाशत बाप,पति आ बेटा के घर के परिक्रमा कर के निराश लवट रहल बिया। 'सिया बाबू' रेखाचित्र में एगो सिरफिरा प्रोफेसर के रुचिकर चित्रण बा। 'अबला' में स्त्री के शक्ति के त 'रूप क नाता' मे अलौकिक प्रेम, त 'राधा' मे राधा रानी के सौन्दर्य आ प्रेम के पौराणिक प्रसंग के माध्यम से वर्णन कइल गइल बा। एह तीनों रचनन में आपन कवनो कथा विन्यास नइखे।

'सितली' कहानी संग्रह में 18 गो कहानी बाड़ी सं बाकी साँच अर्थ मे एह मे लगभग 5 गो रचना कथा विन्यास से भिन्न बा। रेखाचित्र भा ललित निबंध के श्रेणी मे जेतना कहानी बाड़ी स ऊ सब समाज सम्मत आ नीतिपरक बाड़ी स। भारतीय संस्कृति के साथै आधुनिकता बोध भी एह कहानियन के विशेषता बा। कहानी में भारतीय मध्यमवर्गीय मूल्य के समर्थन लउक रहल बा। स्त्री विमर्श के साक्षात तस्वीर बा ई संकलन निष्ठा, प्रेम, त्याग, हिम्मत आ आधुनिकता बोध के सोगहक सरुपा नारी के चित्रण बा। भारतीय समाज में स्त्री के हालत के चित्रण बा। रेखाचित्र आपन विशिष्टता के साथे बा। निबंध आ संस्मरण के उपस्थिति जहाँ एह संग्रह के विविधतापूर्ण बनावत बा उहई एकरा के कहानी संग्रह के खाँचा से बाहर कर देत बा।

मुहावरा, लोकोक्ति, आत्म कथन आ गीत आदि से पूरा संग्रह बहुते रुचिकर आ मनगर हो गइल बा। भोजपुरी साहित्य खातिर संग्रह 'सितली' एगो उपयोगी संग्रह कहाई। कहानी सभ एक तरह के ही बो कई कहानी में कथोपकथन के अभाव बा, जे कहानी के कमजोर कर रहल बा। कई जगह लेखिका कहानी प स्वयं हावी देखाई दे रहल बाड़ी। कुछ कसर रह गइला के बादो संग्रह आम पाठक के बाँध के राखता, इहे एह संग्रह के खास बना रहल बा। ***

गजल

फूल हम आस के आँखिन में उगावत बानी
लोर से सींच के सपनन के जियावत बानी

प्रीत के रीत गजब रउआ निभावत बानी
घात मन में बा, मगर हाथ मिलावत बानी

रूप आ रंग के हम छंद में बान्हत-बान्हत
साँस पर साध के अब गीत कढ़ावत बानी

आजले दे ना सकल हमरा के रोटी कविता
तबहूँ हम गीत-गजल रोज बनावत बानी

पेट में आग त सुनुगल बा रहत ए 'भावुक'
खुद के लवना के तरे रोज जरावत बानी

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

कनक किशोर

कब कहलीं हम : गाँव-परिवार के रेखाचित्र

'कब कहलीं हम' बलभद्र के उनचास गो छंदयुक्त आ छंदमुक्त भोजपुरी कवितन के संग्रह ह। कवनो कविता उठाइब ओहि में एगो कहानी पाइब। गाँव-परिवार के कहानी, खेत-बधार के कहानी, चिरई-चुरूंग के कहानी, गाछि-वृक्ष के कहानी। अब कहब कि किताब कविता के आ बाति कहानी के। हँ बलभद्र के इहे दृष्टि त दोसर रचनाकार से अलग खड़ा कर एगो विशेष के दर्जा में राखेला।

जिनिगी के देखल-भोगल सांच के, अनुभूतियन के गझिन बुनावट में अइसे रखल गइल बा जइसे बँसखट के रंगीन सुतरी से बिन सजावट के वस्तु बना के रख देल जाला। गाँव के जिनिगी के बहाने लेखक सामंतवाद, बाजारवाद, आधुनिकता, नारी विमर्श, पलायन, बेरोजगारी आ पर्यावरण पर बात कइले बाड़न एह किताब में। बलभद्र लोक आ माटी के कवि हवन। 2015 में प्रकाशित उनुकर ई संग्रह भोजपुरी के परंपरागत ढर्रा के भोजपुरी कविता से तनिक अलगे बा। गाँव-परिवार जवन एह किताब में देखे के मिली ऊ साठ-सतर दसक के गाँव ह। आजु ऊ खोजलो से ना भेंटाई। भोजपुरी के ठेठ शब्दन के उपयोग खूब कइल गइल बा जे कवितन के सरस आ खूबसूरत बना रहल बा। कई एगो कविता में वर्णित घटना आजु के पीढ़ी के माथ के ऊपर से निकल जाई काहे कि ऊ उहे बुझी जे ओकरा के देखले-भोगले बा। गूगल बब्बो ओह के समझे-समझावे में नाकाम बाड़न। हँ जवन गाँव-परिवार एह संग्रह के कविता-कहानी में भेंटाई ऊ खाली बलभद्र के गाँव-परिवार ना ह, हमा-सुमो के गाँव-परिवार कहानी ह। कवनो साहित्य के विधा होखे जब ऊ पाठक के जिनिगी के हिस्सा बुझाला त पाठक ओह के आकर्षण से ना बाचे आ ऊ साहित्य एगो अलगे आपन छाप छोड़े में सफल हो जाला।

आज के समाज त झूठा दिखावा में जी रहल बा। मुखौटा आ मास्क के प्रचलन में तेजी आ गइल बा। दिखावा समय के अनुसार रूप बदल लेला। धरम आ जाति के नाम पर समाज में व्याप्त तरह-तरह के खेल से पीड़ित जन के दुख देखि लेखक बोल पड़त बा-

'भलहीं जे रहबो कुजतिया
ना ढोअले ढोआला इज्जतिया'
.....
'बड़े-बड़े लोगवा से नेवता हँकारी
बड़का कहाए के बड़की बेमारी
जतिए भइल जहमतिया
ना ढोअले ढोआला इज्जतिया।'

झूठ लाम लिफाफा खातिर जाति आ इज्जत ढोअत मनई के सोच गाँव समाज के जमीन से जुड़ल कवि देख सकत बा दूसर केहू ना। 'अबेर होई जाई' में चेन पुलिंग देखि गाँवन में परिवहन के दुर्दशा पर कटाक्ष देखत बनत बा–

'नाहीं बा सड़किया, ना सुविधा सहूर बा
टेसन से गँउवा हमार बड़ा दूर बा
साँप-बिछी गोड़वा कँटेर होई जाई
ठाँवे-ठाँवे रोकब, अबेर होई जाई
गड़िए में बचवा सबेर होई जाई।'

ओहिजे 'घरी छने आवे जे बिजुरिया' में गाँव में बिजली के समस्या आ ओकर आँखि मिचौली के खेल के सुनर वर्णन बा। 'गम काथी के बा' में देखे के मिल रहल बा आम जन के निफिकिर आ सामंतन के झूठ आडंबर भरल जिनिगी के बढ़िया रूप। ई देखि लेखक कह रहल बा–

'देह अँइठलऽ रोबे आपन
लोक बिगड़लऽ रोबे आपन
हम त साँच-साँच कहवइया
हमरा गम काथी के बा।'

ऊँच-नीच समाज बा। एक ओरि दुख से लड़त मनई त दूसर ओरि बड़का के गोल। ई अंतर के देखावत कविता–

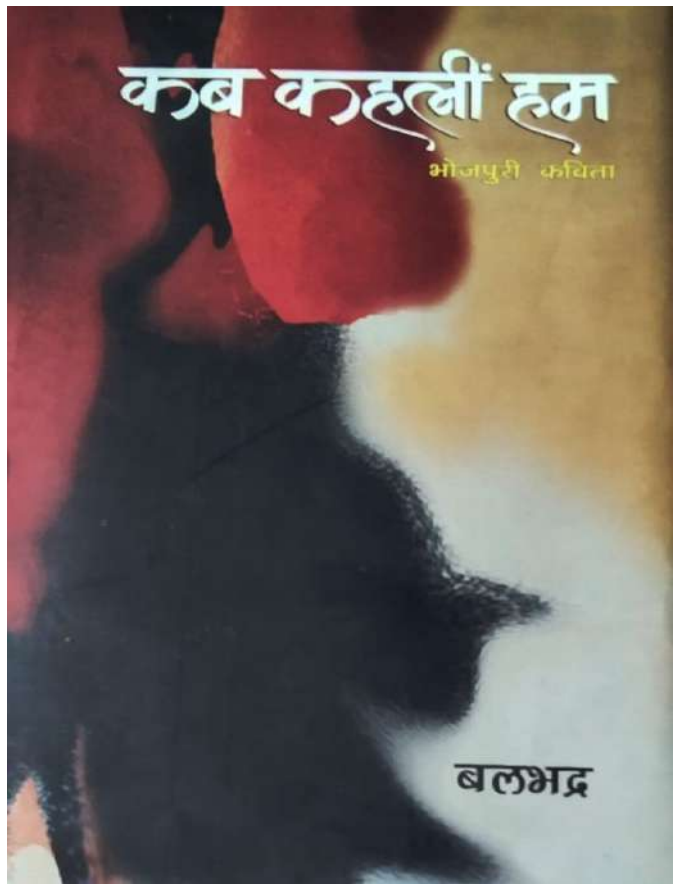

किताब : कब कहलीं हम
विधा : कविता
प्रकाशक : लोकायत प्रकाशन, वाराणसी
पृष्ठ : 116
मूल्य : 150/

'कहीं आफत असवार कहीं सूझे जलूआ
राउर जिनिगी सिराई जहुआवत जहुआ।

बाटे बड़कन के नांव रउवा ओठे पर इयाद
नाहीं सुनले सुनाला कवनो छोट फरियाद।'
(नाहीं सुनले सुनाला से)

पति रोजी-रोटी खातिर बहरा कमाये चल जाला त ओकर असर जेकरा माथे अधिका परेला ऊ पत्नी होले। महेंद्र मिश्र के पूरबी होखे, भिखारी ठाकुर के विदेसिया होखे,रजमतिया के चिट्ठी होखे सब इहे बखानेला कि एक त बिरह के मारल आ दूसरे परिवार के बोझ, एगो अबला बेचारी करो त का करो। 'खत अगिला में शेष' अइसने अबला के खत ह पिया के नांवे। दुख ओराते नइखे तब त कहतिया–

'होला कांव कीच हाला
झूठ भइले धरमसाला
जाने कतना दो बोझा
लउके केहू नाही सोझा
आहो बखरे बेहाल बखरिया नू हो
आहो दूनो हाथे बजिहें थपरिया नू हो
खत अगिला में शेष
जालऽ कवना दो देस।'

पलायन भोजपुरिया क्षेत्र के नियति बन गइल बा। कारण पलायन के अनेक बा बाकिर दुख एके बा। केहू रेलिया के दोष देता त केहू भगिया के बाकिर प्रवासी के सपना सपने रह जाला। 'दिल्ली' में ओह प्रवासी के दरद देखीं –

'हमरा गाँव-घर खातिर
कतने-कतने गाँव-घर खातिर
हाथ-गोड़ जोगावत-चलावत
महिनवा दिने
हजार-बारह सौ रुपया ह दिल्ली
'ना' प के 'हँ'
केहू तरे एगो आह-अलम।'

पलायन रूके के नाम नइखे लेत। रोटी के ललसा आ परिवार के सपना बाध्य कर दे रहल बा गाँव से दूर जाये के अपना के छोड़के। कवि का कह रहल बा देखीं –

'जा रहल बा लोग
अबकियो
कतने कुल्हि बात
कतने फरमाइस
कतने कुल्हि आस-फाँस लिहले
लवटि के आवे के दिन धइले
जा रहल बा लोग
अबकियो...'
(जा रहल बा लोग, अबकियो से)

'उछाह से' रोपनी-कबरिया के काव्य में वर्णित एगो दृश्य देखीं–

'माथा डोलावत पानी के अकुलाइल हिलकोरा
एने-ओने कहे-सुने के फेरा में
लड़ि मरत रहे आरि-मेंड़ से
बिलाइयो जात रहे बिचहीं में कबो-कबो।'

बताई ई एगो किसान छोड़ि के देखले बा एह के। गूगल बाबा असमर्थ पइहें अपना के एह दृश्य के बखाने में। इहे ना कई जगह लेखक एह तरह के गंवई दृश्य के वर्णन कइले बाड़े जे लेखक के माटी से जुड़ाव के साथे गंवई लगाव के प्रमाण बा। भर घरे देवर भतारे से चउल के रामकिसुन आ रामकिसुन ब के रोपत घरी के संवाद आ करनी से बढ़िया परितोख कहाँ भेंटाई? अँटिया बन्हले बाड़ऽ/ कि अपना बहिनिया के जूड़ा .. सुनते रामकिसुन के अपना मेहरारू देने घुमाके छपाक दे बिचड़ा के आँटी फेंक छिटिका उछालल उन्हिन के प्रेम के साथे मजूरन के जिनिगी जीये के आ आपन दुख भुलाये के तरीका बता रहल बा हँसी-मजाक के बहाने। किसान आ मजूर के मेहनत देखि आग उगिलत सूरुजो लजा जालन आ तबो मजूर हार ना माने। चाम जरे त जरे काम ना।

माई, बाबू, काका, ईया के एगो अलगे संसार होला। ऊ लोगिन के जिनिगी अपना खातिर ना परिवार खातिर होला सांच पूछीं त जिनिगी जियेला ऊ लोगिन घर-परिवार खातिर। घरे परिवार के फिकिरे भूला जाला अपना के। अपना खातिर खुशी टोहे-टकोरे के समय मिलबे ना करे। कवि एह सब के काल्पनिक ना वास्तविक रूप जे आँखिन देखले उहे लिखले।

'कबो बेटा के तरफ
कबो पतोह के तरफ
कबो बेटी
कबो दमाद के तरफ
बोलेली माई
बेटा-पतोह के तरफ जतना
कम ना तनिको बेटी-दमाद के तरफ।'
(अपनापन एगो जियला अस से)

माई बिना घरवा घरे ना लागे ई हम ना कवि कह रहल बाड़े –

'चुल्हा-चउका
आँगन-घर सम्हरले ना सम्हराला
तहरा बिना
तू बाड़ू, बेरा पर सँझवत बा
जाँत बा, जँतसार बा
बोरा-टाट
मेंटा-पतुकी तक के
आपन मरजाद बा।'
(माई के नांवे से)

काका के अनुभूति के बहाने आदमियत पर बात, परिवार में बिलगाव के दरद, केहू के ना रहला के दरद 'काका के गइला के बाद' में बड़ी सुनर ढंग से कइल गइल बा। आदिमी के आदिमी बने के सीख –

'कि साचहूं, जाति-जनेव से आदिमी के पहचान बा अनेर कि आदिमी के सोचे के परी, आदिमी बन उनुका जिनिगी के रहे ई निचोर, कि कवनो मुँह देखल बात!'

गाँव-गिरान में लइकिन के प्रति समाज के नजरिया एगो अलगे रहल बा आ अबहूं बा। रोक-टोक के बादो अपना दुनिया में खुश रहि अनुशासन में रह रहल बाड़ी स। कवि ओह के देखि कहल नइखे भुलात –

'हद बा
अतना रोक-टोक के बादो
गा-बजा रहल बाड़ी स
अतना गवला-बजवला के बादो
रोक-टोक में बाड़ी स
हद बाड़ी स।'
(हद बाड़ी स! से)

इहां नारी जीवन के संग 'रोक-टोक' आ 'रोक-टोक' के बावजूद अनुशासन में नारी के रहल समाज के नारी के प्रति नजरिया पर प्रश्न चिन्ह खड़ा कर रहल बा त ओह सामाजिक रवैया के बावजूद नारी के अनुशासनप्रियता नारी के महानता के बाति कर रहल बा। 'शिवपातो से' में शिवपातो के जिनिगी के बहाने नारी जीवन के तींत अनुभव के रखल गइल बा जे इज्जत के ढोवत आपन ऊ जिनिगी जी रहल बिया जेकरा के जिनिगी के संज्ञा देल ठीक ना होखी –

'अइसन मरद के ढोअलू, जेकरा
जोर ना जाँगर
तन के-मन के बात करे के
रहलू ना कुँआर
ना जनलू मरम बियहला के तू।'

'के पतियाई' एगो ढेर छोट कविता ई कहि रहल बा कि कवि के नजर से गाँव, प्रकृति के एगो छोटो बदलाव छुपल नइखे रहि पावत। ओह बदलाव के मरम का बा इहो बुझता आ ओकरे बहाने समाज के सामाजिक संरचनो प चुपे कुछ कह जात बा आ सवालो करि जाता कि के पतियाई एह परिवर्तन के देख भीतर के छुपल दरद आ मरम के। ऊपर से हरियरी आ भीतरी पियरई देखे खातिर जवन आँखि चाही ऊ बलभद्र भिरी बा। 'जाड़ा से' में कवि के उहे सुक्ष्म दृष्टि देखे के मिलत बा। एहिजा एक देने ऊ जाड़ा के जल्दी आवे से माना करता कि धान के खेती गड़बड़ा जाई आ दूसरा देने आ गइला प रोकतो बा कि आ गइल त भाग जनि रूक ना त गेहूं गड़बड़ा जाई। ई एगो किसाने कवि कह सकेला, रच सकेला। जाड़ा के एह आँखिन से देखे वाला रचनाकार खोजलो पर ना मिली कवनो भाषा में आ कल्पनो में ना समाई कवनो रचनाकार के जल्दी ई बाति। दूगो अनूठा कविता जाड़ पर। 'तेजले तेजाइल ना!' धान के बिया से बाल के कहानी ह। इहो बूता बलभद्र छोड़ि आन में ना लउकी। 'तीन महुआ' में गाछ-वृक्ष के महता-उपयोगिता दरसावत बता देल गइल बा कि तीनो महुआ ना खेत-बधार के पुरनिया हवन स। अतनो सुक्ष्म नजर रखला के बादो कवि जी के ढेर चीज ना बुझाइल तब त 'पूछे के रहे' में माई से ढेर बाति के अर्थ पूछत बाड़े।

लोकतंत्र वोट के खेला ह। 'कुछ लोग' में वोट के राजनीति पर सच्चाई आ बढ़िया कटाक्ष देखे के मिल रहल बा। बाल मन के मनोविज्ञान देखे के मिलत बा 'बता के हमार औकात'। आधुनिकता आ बाजारवाद के प्रभाव में मनई के जिनिगी में झूठ के बढ़त पैसार आ सांच के सिकुड़त पांख के सुनर चित्रण देखे के मिलत बा 'कबले सउनाए के' में।

'अगराइल आधुनिकता के जलसा अस धुंध
छपले जात बा सत-विचार प आदिमी के
रचत बा बजारू ताल-छन्द
अपने में मस्त-मगन जिनिगी के जरी-जरी
कि लागल सकताए अब
मेल-मिलाप के दवर
दायरा-दरकार।'

'आ बाबा, चुप त चुप' में बाबा के मउवत के बहाने एगो ओह मनई के चित्र आँखिन त रखे में सफल बा कवि जेकर दुनिया घर-दुआर, खेत-बधार, आपन परिवार, हर-हेंगा, दँवरी-ओसवनी, मोट-रेहँट, आर-गओहट, करहा-आहर, खाद-बिया, गाँव-जवार होखे। अंत में 'कब कहलीं हम' में कवि प्रकृति आ जैवविविधता के संबंध पर बड़ बात बाकिर सांच बात करत नजर आ रहल बा। आज एह पर बात होखे के चाहीं आ खूब होखे के चाहीं। एह के जात-जात पत्ते के बात कहल जाव त कवनो हरज ना। कवि त अउरो बहुत बात कइले बाड़े। आधुनिक बोध के कवि हवन त छोड़ीं इहां के बात बाकिर इहां के पुरनिया बाबा के बात जरूर सुनीं सभे –

'ऊ त कहत रहलें कि ई सब बाड़न स
त जानऽ कि खेत बा, खेती बा
जहँवा ई होले स, जवना बधार में
कंचन बरसेला, कंचन उपजेला।'

पढ़े जोग एगो बढ़िया किताब जे शुरू से अंत ले पाठक के बान्हि के रखत बा। ई किताब कविता के रूप में गाँव के रेखाचित्र ह उहो खाली बलभद्र के गाँव के ना हमा-सुमो के गाँव के ह। अइसे बता दीं कि अब गँउवो ऊ ना भेंटाई। गाँवे जाइब त चलीं 'कब कहलीं हम' पढ़ि घूम आईंजा आपन गाँव के।***

पुस्तक समीक्षा

चंद्रेश्वर

एगो नवका आ टटका आस्वाद के आलोचना

भोजपुरी के समकालीन आलोचना में एगो नयकी पुस्तक के आमद भइल बा- 'भोजपुरियत के थाती'। एकर लेखक-आलोचक हँवे डॉ. प्रमोद कुमार तिवारी। 21 सितंबर 1976 के बिहार के भभुआ ज़िला के परसियाँ गाँव में एगो सामान्य किसान परिवार में पएदा भइल प्रमोद कुमार तिवारी एहघरी गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर में हिन्दी के प्राध्यापक बाड़न। ऊ बी.एच.यू. आ जे.एन.यू. के विद्यार्थी रहि चुकल बाड़न। हिन्दी में ऊ अपना समय के शीर्ष कवि-गद्यकार केदारनाथ सिंह के शोधनिर्देशन में पी-एच. डी. के उपाधि प्राप्त कइले बाड़न। ऊ हिन्दी आ भोजपुरी में समान भाव से लिखत-पढ़त रहेलन। हिन्दी में साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली से उन्हुकर एगो कविता संग्रह 'सितुही भर समय' वर्ष 2016 में प्रकाशित भइल रहे। भोजपुरी के आलोचना पुस्तक 'भोजपुरियत के थाती' के प्रकाशन पिछला साल 2021 में साहित्य विमर्श प्रकाशन, गुरुग्राम से भइल बा ।

'भोजपुरियत के थाती' भोजपुरी आलोचना में एगो नवका आ टटका आस्वाद के संगे-संगे एगो नयकी दीठि के साथ लिखाइल पुस्तक बिया। 'भोजपुरियत' शब्द भाववाचक संज्ञा ह जेवन भोजपुरी समाज, संस्कृति आ साहित्य के पहचान से जुड़ल बा। जइसे इन्सान से इन्सानियत आ आदमी से आदमीयत बनल बा; जइसे एने हिन्दी के समकालीन काव्यालोचना में शमशेर से शमशेरियत,वीरेन से वीरेनियत आ मंगलेश से मंगलेशियत शब्द गढ़ल-बनावल गइल बा, कहल जा सकेला कि ओही तर्ज. आ तौल पर प्रमोद 'भोजपुरियत' शब्द के रचले -गढ़ले बाड़न एह पुस्तक में दू गो खंड बा -- 1. नेंव के ईंट, 2. किताब से बतकही।

पहिल खंड में भोजपुरी साहित्य के हजार-बारह सौ साल के महती परंपरा में जेवन बड़हन समाज सुधारक, कवि-चिंतक आ लेखक बा लोग, ओह में से खलिसा आठ गो समाज सुधारक, कवि-लेखक आ गीतकारन के 'आइकॉन' के तौर पर परोसल गइल बा। ऊ 'आइकॉन' बा लोग गोरखनाथ, कबीर, रैदास, तेग अली, महेन्दर मिसिर, रघुवीर नारायण, भिखारी ठाकुर आ शैलेन्द्र। एह लोगन के व्यापक सृजनशीलता आ रचनाधर्मिते से भोजपुरी के एगो ठाट बन रहल बा, एगो चेहरा सामने आवत बा, ओकर एगो अस्मितो उभरि के सामने आ रहल बिया, जेवना से 'भोजपुरियत' के शिनाख़्त कइल

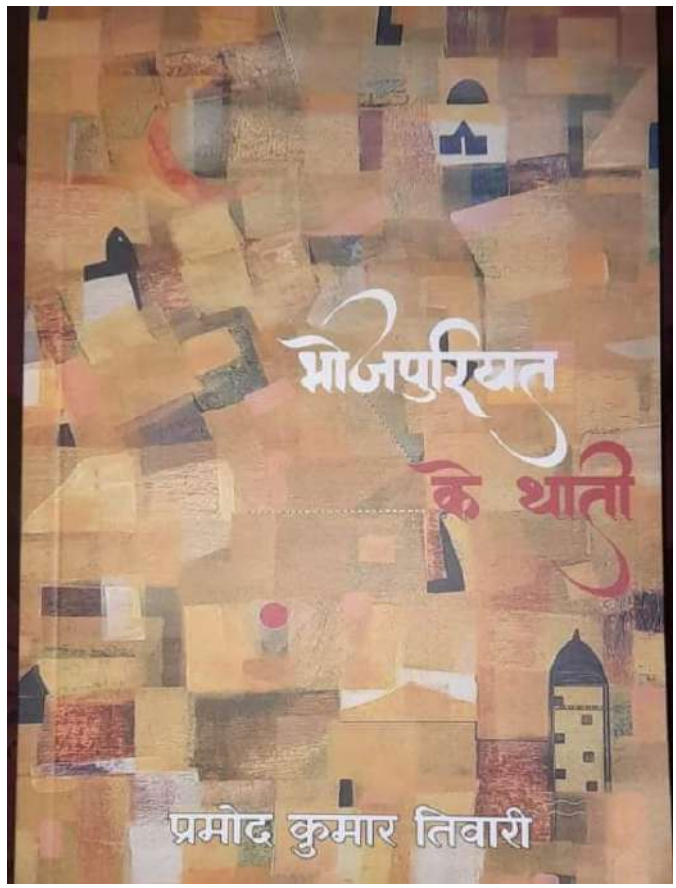

किताब: भोजपुरियत के थाती
लेखक: प्रमोद कुमार तिवारी
विधा: आलोचना
प्रकाशक: साहित्य विमर्श प्रकाशन
प्रकाशन वर्ष: 2021
पृष्ठ संख्या:138
मूल्य: 199 रुपये

जा सकत बा। प्रमोद आपन पुस्तक के एह खंड में भोजपुरी के एह नायकन के नवका सिरा से अन्वेषित करे, ढूँढ़े के कामो कइले बाड़न, जेवना पर धूल-गर्द के कइ-कइ गो मोटहन परत पड़ल बा। ऊ एगो जगह पर लिखत बाड़न--" ई अनायास नइखे कि नाथपंथ से लेके संतकाव्य धारा तक अउर हीरा डोम से लेके भिखारी ठाकुर तक जातिप्रथा आ वर्णाश्रम व्यवस्था प चोट करेवालन के एगो भरपूर शृंखला भोजपुरी इलाका में प्राप्त होखेला। असल में ई अभिजात्य संस्कृति के खिलाफ लोक के सामूहिकतावादी आ श्रमशील लोगन के प्रतिसंस्कृति ह, जवना के प्रतिनिधि कबीर, रैदास जइसन कवि लोग ह आ जिनकर मूलभाषा भोजपुरी हउए। भोजपुरिया समाज मूलतः श्रमिक समाज हउए।"

प्रमोद तिवारी भोजपुरिया समाज, संस्कृति आ साहित्य पर गंभीर विचार-विमर्श करत ओकरा में नायकत्व के तलाश करत बाड़न। एही क्रम में ऊ भोजपुरियतो के पड़ताल करत बाड़न। ऊ एह भोजपुरियत के पड़ताल में हिन्दी फिल्मन के स्टार गीतकार शैलेन्द्र के शामिल कइले बाड़न। सभे जानत बा कि शैलेन्द्र हिन्दी के क क गो हिट गाना खातिर जानल जाले। आलोचक प्रमोद तिवारी शैलेन्द्र के हिन्दी गीतन में भोजपुरी समाज आ संस्कृति के सुख-दुःख आ हरख-बिसाद आ साहस, उमंग-उल्लास के खोजे के परयास कइले बाड़न। पुस्तक के दोसरका खंड में भोजपुरी के किछु चुनिंदा पुस्तकन में 'जेहलि क सनद'(दंडी विमलानंद सरस्वती), 'भोजपुरी लोकगीतों में करुण रस' (दुगार्शंकर प्रसाद सिंह), 'भोजपुरी संस्कार गीत' (संपादक--हंसकुमार तिवारी, श्री राधावल्लभ शर्मा), 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' (उदयनारायण तिवारी), 'भोजपुरी लोकोक्तियाँ' (डॉ. शशिशेखर तिवारी), 'बिंदिया' (रामनाथ पाण्डेय) आ कुँवर सिंह' (चंद्रशेखर मिश्र) के आलोचनात्मक विमर्श में शामिल कइल गइल बा।

भोजपुरी साहित्य के संपन्न वाचिक आ लिखित परंपरा आ मूल्यवान थाती में से विमर्श खातिर खलिसा सात गो पुस्तकन के चयन एगो बहुते मुश्किल अवरू जोखिम भरल काम रहे, जेवना के आपन नवकी आलोचकीय दृष्टि भा दीठि के साथ संभव कइल गइल बा। एह खंड के पढ़त बेर भोजपुरी साहित्य-संस्कृति आ लोकजीवन के मर्म तक चहुँपल जा सकत बा। ओकर सही नायकन के चीन्हल-जानल जा सकता बा। वीर कुँवर सिंह सन 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के एगो अइसन महानायक आ महायोद्धा रहल बाड़न जेकरा पर भोजपुरिया समाज में सबसे ज्यादा लोकगीत आ महाकाव्य रचल गइल बा। एकरा में भोजपुरी के महाकवि चंद्रशेखर मिश्र के लोकप्रिय महाकाव्य 'कुँवर सिंह' के चर्चा में शामिल कइल गइल बा।

एही तरह से 'बिंदिया' पहिल भोजपुरी उपन्यास ह त 'जेहलि क सनद' पहिल कहानी संग्रह। एहनी में जेवन सामाजिक सच्चाई उभरल बा, ओकरा में ओह दौर के सामाजिक पात्रन के जरिए नायकत्व के ढूँढ़ल जा सकेला। केवनो समाज में नायकत्व के तलाश एक तरह से मानवीय मूल्य, संवेदना आ आदर्श के परख-पड़ताल होला। एह परख-पड़ताल के सबसे अच्छा माध्यम साहित्य आ लोकजीवन होला। ई सब कृतियन के आजादी के तत्काल बाद प्रकाशन भइल रहे। एह कृतियन में बदलत समाज -संस्कृति के नयका मूल्यन आ सपनन के अभिव्यक्ति मिलल बा। प्रमोद तिवारी के आलोचनात्मक लेखन में ई पुस्तक एगो नयकी शुरूआत लेखा बिया। एकरा में ऊ उत्तर आधुनिकतावादी आलोचना के 'टूल्सो' के इस्तेमाल कइले बाड़न। ई भोजपुरी आलोचना में जरूर एगो सोच के अलहदा प्रस्थान लेखा मानल जाई। वोइसे अबही प्रमोद के आलोचक के पोढ़ रूप के उभर के सामने आवे के बाकी बा। ***

गजल

बात खुल के कहीं, भइल बा का?
प्यार के रंग चढ़ गइल बा का?

रंग चेहरा के बा उड़ल काहें ?
चोर मन के धरा गइल बा का?

हम त हर घात के भुला गइलीं
रउरा मन में अभी मइल बा का ?"

आई अबहूँ रहे के मिल-जुल के
जिन्दगी में अउर धइल बा का?

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

दिव्येन्दु त्रिपाठी

भोजपुरी लोकाख्यान के विश्वकोश

"भोजपुरी लोककथाओं का सांस्कृतिक अध्ययन" डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' जी के द्वारा तइयार कइल गइल शोध प्रबंध ह जवन कि पी-एच० डी० खातिर तइयार कइल गइल रहे। एह शोध प्रबंध के निर्देशक राँची विश्वविद्यालय के सुप्रसिद्ध विद्वान साहित्यकार डॉ० सिद्धनाथ कुमार जी रहीं। ई प्रबंध 1979 में तइयार कइल गइल रहे। अब त डॉ० निर्भीक जी हमनी का बीच नइखीं बाकिर उहाँ के ई शोध प्रबंध जवन कि भोजपुरी लोक कथन के विश्वकोश जइसन बा, उहाँ का अन्वेषी आ अध्ययनशील स्वभाव के प्रमाण देत बा। एकरा में शायदे कवनो अइसन लोककथा छूटल होई जवन सदियन से भोजपुरी भाषी इलाका में प्रचलित रहल बा। ई शोध प्रबंध प्रबंधकार के गहन अध्ययन, यात्रा,निरीक्षण-पर्यवेक्षण आ मंथन के परिणाम ह। ई अइसन शोध प्रबंध बा जवन भोजपुरी संस्कृति आ भोजपुरिया संस्कृति के अध्येतन आ शोधार्थियन खातिर समर्थ स्रोत बनी।

ई शोध प्रबंध पंद्रह गो अध्यायन में विभाजित बाटे। हरेक अध्याय में भोजपुरी लोककथन के कवनो एगो विशेष सांस्कृतिक भा सामाजिक पक्ष के उजागर कइल गइल बाटे। पहिलका अध्याय में भोजपुरी भाषी इलाका के फैलाव आ सीमा के चर्चा बा। प्रबंधककार भोजपुर के ऐतिहासिक पक्षन के बड़ा विस्तार से चर्चा कइले बानी। उहाँ का ई सिद्ध करत बानी जे भोजपुर के संबंध ना त धार के परमारवंशी शासकन से रहे आ नाहीं प्रतिहारवंशी राजा मिहिर भोज से बलुक पुराण प्रसिद्ध भोज/भोजकवंशियन से ई क्षेत्र का नाँव परल जवन कि महर्षि विश्वामित्र के जजमान रहे लोग। दोसरका अध्याय में भोजपुरी लोक साहित्य के विविधता आ ओकर वर्गीकरण प प्रकाश डालल गइल बा। साथहीं भोजपुरी लोकाख्यानन के मूलभूत स्वभाव आ छवि प प्रकाश परल बाटे।

तीसरका अध्याय में एह बात के चर्चा बाटे जे भोजपुरी लोककथन में कवन कवन सामाजिक तानाबाना के वर्णन मिलेला। सामाजिक विभाजन आ स्तरीकरण, औरतन के हालत, छुआछूत, यौनाचार आ सादी-बियाह जइसन रीति रिवाजन के चर्चा बा ।

चउथका अध्याय में पारिवारिक संबंधन प आधारित लोकाख्यानन के चर्चा बा। ई दूनो अध्याय में प्रबंधकार समाजशास्त्रीय अभिगम (Sociological Approch) से पूरा-पूरा लाभ उठवले बानी। वर्गीकरण पूरा वैज्ञानिक बाटे।

पाँचवा अध्याय में लोककथन का हवाले से भोजपुरिया खानपान के चर्चा बा। इहाँ लिट्टी चोखा आ खीर-पूड़ी से लेके तरकारियन आ फलन के वर्णन बा। छठवाँ अध्याय में जानवरन से संबंधित जिक्र करेवाली

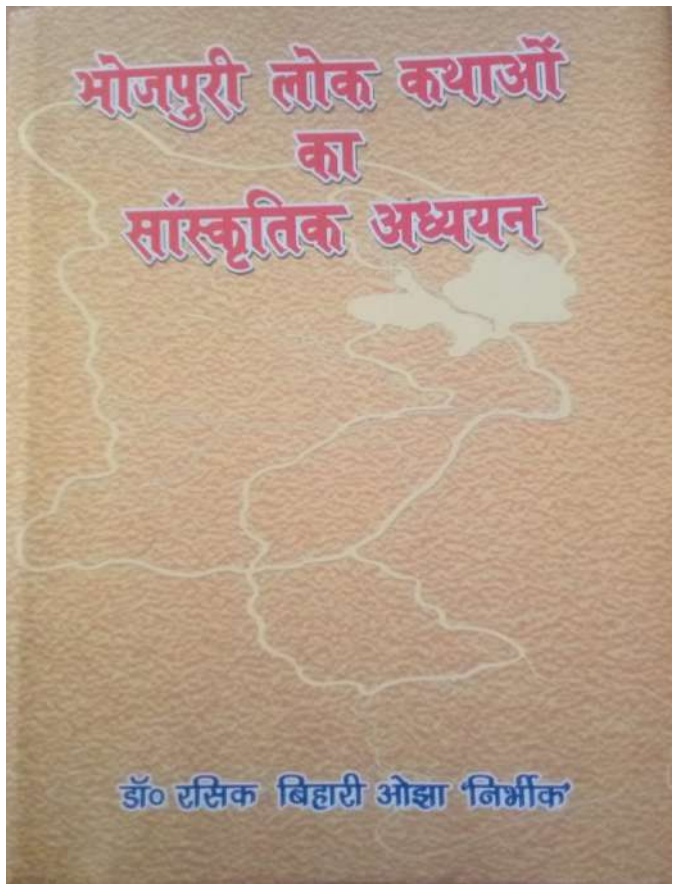

पुस्तकः भोजपुरी लोककथाओं का सांस्कृतिक अध्ययन
प्रबंधककारः डॉ. रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'
विधाः शोध प्रबंध
प्रकाशनः जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद्
पृष्ठ संख्याः 532
प्रथम संस्करणः 2022
मूल्य : 1100 /- (सजिल्द)

कहानियन के संग्रह बा। इहाँ सियार-बाघ आ कउवा-सुगा से लेके भरदूल चिरई आ पिलुआ -चिउँटी तक के चर्चा बा ।

सातवाँ अध्याय में लोकप्रचलित कहानियन के आधार प ई बतावल गइल बा जे भोजपुरिया समाज कइसन-कइसन बनस्पतियन से परिचित रहल बा आ ऊ बनस्पतियन के भोजपुरिया लोक जीवन का कइसन महत्व रहल बा। ऊख मकई तक के चर्चा सहजता से मिलि जाले। ओसहीं आठवाँ अध्याय में वर्णन बा कि भोजपुरी लोककथन में कइसन - कइसन पहनावा, गहना-गुरिया आ सौंदर्य प्रसाधन के जिकिर मिलेला। अमीर आ गरीब के पहनावा में कइसन फरक बा आ काजर, सेनुर, बुकवा आदि के चर्चा बा।

भोजपुरी लोककथा बहुत जीवंत बाड़ी स। ओकरा में जिनिगी के हरेक पहलू के चर्चा मिलि जाला। भोजपुरिया मनई तीरिथ-ब्रत के बड़ प्रेमी आ श्रद्धावान होले। एही से लोकविश्रुत कहानियन में तीर्थन आ दोसर-दोसर जगहन के वर्णन आसानी से मिलि जाला।

नउवाँ अध्याय एकरे प केन्द्रित बाटे। काशी-बनारस समेत काश्मीर आ सिंहलद्वीप के जिक्र करेवाली कहानियन के चर्चा मिलेला। भोजपुरिया समाज के आर्थिक जीवन के छवि प्रस्तुत करेवाली कहानियन के दसवाँ अध्याय में समेटल गइल बा , जेकरा में खेती -किसानी ,कारीगरी आ व्यापार तक के वर्णन मिल जाला।

एगारहवाँ से तेरहवाँ अध्याय विश्वास, चिंतन तथा दर्शन प केंद्रित बाटे। एगारहवाँ अध्याय में धार्मिक चिंतन, पौराणिक प्रसंग, साधु संतन से संबंधित लोकाख्यानन प केंद्रित बा। बारहवाँ राजनैतिक आदर्शन प आधारित बा। पंचायत के महत्व से लेके राजा-रानी के विविधमुखी कथन के वर्णन बाद अत्याचारी आ उदार दूनो तरह के शासकन के कहानी भोजपुरिया समाज कहत-समेटत आइल बा। तेरहवाँ अध्याय भोजपुरिया लोक के बौद्धिक ताना बाना के दर्शावत बा। पाप-पुन्य, भाग्यवाद, कर्मवाद, पुनर्जन्म, शकुन, जादू-टोना आ ज्योतिष से संबंधित लोकविश्वासन के रूपायन इहाँ भइल बा।

भोजपुरी लोककथा के कइ गो शैली बाड़ी स। गद्य, पद्य आ मिश्रित (चंपू) तीनों शैली मिलि जाली स। कवनो-कवनो कहानी मुक्त छंद के आभास देबेले। छोट आ बड़ दूनो तरह के कहानी मिलि जाली स। कवनो में त संवाद के प्रधानता रहेला। चउदहवाँ अध्याय शैली विज्ञान प केन्द्रित बा। पंद्रहवां अध्याय उपसंहार अध्याय ह। एकरा में उपयोगी मानचित्र आ कइगो महत्वपूर्ण सूची बाड़ी स। सहायक ग्रंथनो के नाम एह में शामिल बा। लेखक द्वारा कइल गइल गवेषणात्मक यात्रन के भी वृतांत दीहल बा।

एकरा में कवनो संदेह नइखे जे ई अपने आप में एगो विशिष्ट कृति बाटे। ई शोध प्रबंध एह बात के जोर देके साबित करत बा जे भोजपुरिया समाज ई आख्यानन के द्वारा सदियन से आपन परंपरा, विश्वास, सांस्कृतिक सातत्य आ सामाजिक तथ्यन के ज्ञान एक पीढी से दोसरा पीढ़ी तक अग्रसारित करत रहल बा। एह प्रबंध के जे पढ़ी ऊ भोजपुरी लोककथन के समृद्ध संसार से परिचित होई आ भोजपुरिया समाज आ संस्कृति के परिचयो पाई। हिन्दी में लिखित शोधग्रंथ गैर भोजपुरी भाषियन खातिर भोजपुरिया लोकजीवन आ आख्यानन का प्रति एगो समृद्ध आ बरियार समझ विकसित करे में आपन योग दी। एह शोधप्रबंध के ग्रंथाकार रूप देबे आ संपादन में डॉ० विष्णुदेव तिवारी आ डॉ० अजय कुमार ओझा के योगदान बा।***

गजल

रेशम के कीड़ा के तरे खुदहीं बनावत जाल बा
ई आदमी अपने बदे काहें रचत जंजाल बा

पानी के बाहर मौत बा, पानी के भीतर जाल बा
लाचार मछरी का करो जब हर कदम पर काल बा.

झूठो के काहे आँख में केहू भरेला लालसा
काल्हो रहे बदहाल ऊ, आजो रहत बदहाल बा

कइसे रही, कहँवाँ रही, ई मन भला सुख-चैन से
बदले ना हालत तब दुखी, बदले तबो बेहाल बा

अइँठात बा मन्दिर के बाहर भीखमंगा भूख से
मंदिर के भीतर झाँक लीं, पंडा त मालेमाल बा

केहू के नइखे पूत तऽ, केहू के नइखे नोकरी
'भावुक' धरा पर आदमी हरदम रहल कंगाल बा

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

डॉ. सत्येंद्र प्रसाद सिंह

दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह के किताब: भोजपुरी के कवि और काव्य

'भोजपुरी के कवि और काव्य' दुगार्शंकर प्रसाद सिंह के अनमोल कृति बा। सिंह जी बिहार सरकार के जनसंपर्क विभाग में पदाधिकारी रहनीं। पदाधिकारी के अलावे उनकर पहचान एगो निमन कवि आउर साहित्यकार के रूप में भी बा। हिन्दी के नामी-गिरामी पत्र-पत्रिकन में इनकर निबंध छपल बा। इनकर उपन्यास, गद्य काव्य, कहानी,नाटक विधा में भी रचना बा। इनकर 'फरार की डायरी' प्रगतिशील साहित्य के उत्कृष्ट उदाहरण मानल जाला। सन 1857 के क्रांति के अमर नायक बाबू कुंवर सिंह के भी जीवनी दुर्गा बाबू लिखले बानीं। 'भोजपुरी लोकगीत में करुण रस' भी इनकर दमदार कृति बा। इनकर 'भोजपुरी के कवि और काव्य' भोजपुरी साहित्य के बेशकीमती थाती बा।

लेखक के 'भोजपुरी के कवि और काव्य' के लेखन शैली रोचक आउर सुगम बाटे। उहां के भोजपुरी कवियन के परिचय सरल से सरल शब्दन में देले बानीं। सरल शब्दन के वजह से भाषा में प्रवाह बनल बाटे। कवनो आम पाठक किताब के पढ़ के एकर विषयवस्तु आसानी से समझ सकत बाड़ें। हरेक अध्याय में कवियन के परिचय संक्षिप्त दिहल गइल बा आउर उनकर एक या एक से अधिका कविता के नमूना देके समझावल गइल बा।

किताब के भूमिका में लेखक भोजपुरी भाषी प्रदेश के बारे में पाठक के बतवले बानीं। लेखक भोजपुर के भोजपुरी से संबंध बतावत भोजपुरी के शब्द, मुहावरा, कहावत आउर पहेली के चरचा करत भोजपुरी व्याकरण के विशेषता बतवले बानीं। भूमिका में ही लेखक भोजपुरी साहित्य के पांच गो काल में बटले बानीः

1.**प्रारंभिक अविकसित कालः** सिद्ध काल (700 ई. से 1100 ई.): एह समय में सिद्ध आपन रचना भोजपुरी में लिखे के शुरूआत कइलें।

2.**आदिकाल :** ज्ञान प्रचार काल आउर वीर काल (1100 ई. से 1325 ई.) : एह समय में गोरखनाथ के चमत्कार, राजपूतन के वीरता के कहानी, साधक के तंत्र-मंत्र सहित गाथा गीत भोजपुरी काव्य के विषय बनल। सोरठी वृजभार, नयकवा गाथा काव्य, लोरिक गाथा गीत, गोपीचंद गाथा गीत, भरथरी गीत, कुंवर विजयी, आल्हा, विहुला आदि काव्यन के रचना एह काल में भइल।

3. **पूर्व मध्य काल :** भक्ति काल (1325 ई. से 1650 ई.) : एह काल के भक्ति काल कहल गइल बा जवना में कबीर के रचना प्रमुख बा।

4.**उत्तर मध्य काल :** रीति काल (1650 ई. से 1900 ई.): एह काल में शंकर दास, रामेश्वर दास, शिवनारायण आदि लोग कवि भइल।

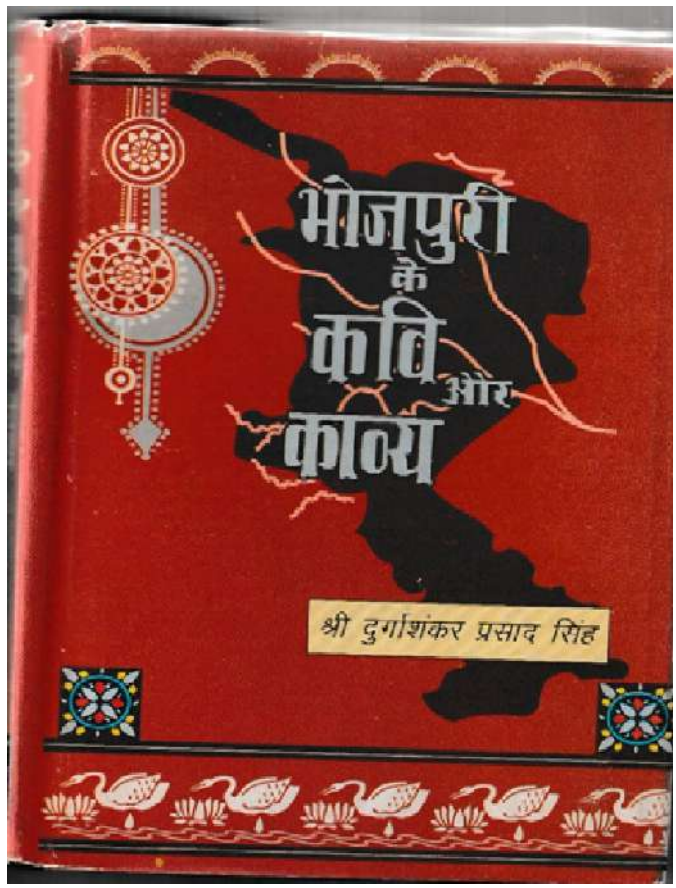

किताब : भोजपुरी के कवि और काव्य
लेखक : दुगार्शंकर प्रसाद सिंह
विधा : साहित्य के इतिहास
प्रकाशकः बिहार राष्ट्रभाषा परिषद , पटना
प्रकाशन वर्ष :2001
पृष्ठ संख्या : 319
मूल्य : 150

दरबारी कवि तोफा राय के 'कुंवर पचासा' भी एही समय में रचल गइल।

5.**आधुनिक कालः** राष्ट्रीय कालः विकास काल : एह काल के काव्य रचना प्रगतिशील, समुन्नत आउर प्रौढ बा। एह काल के रचना आउर समृद्ध भाषा के साथ खड़ा होखे में सक्षम बा।

दोसरका खंड में आठवीं सदी से ग्यारहवीं सदी तक के कवि आउर उनकर काव्य पर लेखक प्रकाश डलले बाड़ें। तीसरका खंड में चौदहवीं सदी से उन्नीसवीं सदी तक के कवियन आउर उनकर काव्य के चरचा बा। चउथा खंड में भोजपुरी के बीसवीं सदी आउर आधुनिक काल के कवि आउर काव्य के चरचा भइल बा जवना में बीसू, महादेव, बेचू, खलील, अब्दुल हबीब, घीसू, धीरू, रसिक, चुन्नीलाल, गंगू, काशीनाथ, बटुकनाथ, बच्चीलाल, जगन्नाथ रामजी, बिसेसर दास, जगरदेव, जगन्नाथ राम, धुरपत्तर, बुद्धु, रसिक जन,लालमणि,मदनमोहन सिंह, सुरूजलाल, अम्बिकादत्त व्यास, शिवनंदन मिश्र 'नन्द', बिहारी, खुदाबक्स, मारकंडे दास, शिवदास, दिलदार, भैरो, ललर सिंह, रूपकला जी, द्वारिकानाथ झिंगइ, दिमाग राम, मोती, मतइ, रसीले, मानिक लाल, रूपन, फनीन्द्र मुनि, भागवत आचारी, शायर महादेव, नरोत्तम दास, कैद, भगेलू, अजमुल्ला, रामलाल, पन्नू, देवीदास, झग्गू लाल, बुझावन, बिहारी, श्रीकृष्ण त्रिपाठी, शाहवान, गूदर, होरी लाल, चन्द्र भान, निराले, रसिक किशोरी, जगेसर, देवीदास, भगवान दास, श्री केवल, केशवदास, रामाजी, राजकुमारी सखी, रघुवीर नारायण, भिखारी ठाकुर, महेन्द्र मिश्र, देवी सहाय, रामवचन द्विवेदी, दूधनाथ उपाध्याय, माधव शुक्ल, राय देवीप्रसाद पूर्ण, मारकंडे,रामाजी, चंचरीक, मन्न द्विवेदी, सरदार हरिहर सिंह, परमहंस राय, रामेश्वर सिंह 'कश्यप', महेन्द्र शास्त्री, रामविचार पांडेय, प्रसिद्ध नारायण सिंह, शिवप्रसाद मिश्र, डॉ.शिवदत्त श्रीवास्तव, वशुनायक सिंह, रामप्रसादसिंह, बनारसी प्रसाद, सिद्ध नाथ सहाय, वशिष्ठ नारायण सिंह, भुवनेश्वर प्रसाद भानु, विमला देवी, प्रिसिंपल मनोरंजन प्रसाद सिंह, विन्ध्यवासिनी देवी, हरीश दत्त उपाध्याय, रघुवंश नारायण सिंह, महादेव प्रसाद सिंह, युगल किशोर, मोतीचन्द सिंह, श्याम बिहारी तिवारी, लक्ष्मण शुक्ल, चांदी लाल सिंह, ठाकुर विश्राम सिंह, रामचंद्र गोस्वामी, महेश्वर प्रसाद, रघुनन्दन प्रसाद, कमला प्रसाद मिश्र, रामनाथ पाठक प्रणयी, मुरलीधर श्रीवास्तव, विश्व नाथ प्रसाद शैदा, मूसा कलीम, शिवनंदन, गंगा प्रसाद चौबे, अर्जुन कुमार सिंह अशांत, उमाकांत वर्मा, बरमेश्वर ओझा, गोस्वामी चन्द्रेश्वर भारती, सूर्य लाल सिंह, पांडेय कपिल देव नारायण सिंह, भूपनारायण शर्मा, सिपाही सिंह पागल, शालिग्राम गुप्त राही, रामवचन लाल, नथुनी लाल, वसंत कुमार, हरेंद्र देव नारायण आउर दुगार्शंकर प्रसाद सिंह कवियन के चरचा कइल गइल बा।

भोजपुरी के आरंभिक काल से लेके आधुनिक काल तक के कवियन के एह किताब में शामिल कइल गइल बा। सांच मायने में गागर में सागर भरे के काम भइल बा। एह किताब में कवियन के कविता के नमूना दिहल गइल बा जवना में से कुछ कविता जनमानस के कंठ में बस गइल बा। एह से इ किताब पाठकन खातिर रूचिकर बाटे। भोजपुरी साहित्य के काल विभाजन आउर भोजपुरी काव्य के इतिहास जाने खातिर इ किताब बेजोड़ बा। किताब के आरंभ में राष्ट्रभाषा परिषद के तत्कालीन निदेशक रामधारी सिंह दिवाकर के भूमिका, संचालक शिवपूजन सहाय के वक्तव्य आउर संपादक विश्वनाथ प्रसाद के मंतव्य लाभकारी बा। किताब के अंत में कविनामानुक्रमणी, नामानुक्रमणी आउर पद्यनामानुक्रमणी दिहल गइल बा जेकरा से पाठक के किताब में कवनो कवि,स्थान आउर पद्य खोजे में आसानी होई। इ किताब भोजपुरी साहित्य के विकास में एगो मील के पत्थर बा। इ किताब विद्यार्थीयन आउर शोधार्थीयन खातिर एगो मानक किताब के रूप में बनल बा। भोजपुरी साहित्य में इ किताब एगो धरोहर के रूप में बनल बा। ***

गजल

कबहूँ लिखा सकल ना तहरीर जिन्दगी के
कबहूँ पढ़ा सकल ना तकदीर जिन्दगी के

केहू निखोर देले बा घाव सब पुरनका
आवँक में आ रहल ना दुख-पीर जिन्दगी के

जब-जब भरेला छाती साथी के घात से तब
देला सकून आँखिन के नीर जिन्दगी के

गोदी से लेके डोली, डोली से लेके अर्थी
अतने में बा समूचा तस्वीर जिन्दगी के

तहरे बदे रहत बा पागल परान 'भावुक'
तूहीं हिया के थाती, जागीर जिन्दगी के

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

डॉ. अशोक द्विवेदी

सुन्नर काका: कल्पना आ जथारथ के मेल से एगो आदर्श चरित्र के सिरजन

उपन्यास कल्पना आ वास्तविकता का मेल से बुनल एगो नया आ जियतार संसार होला। कबो-कबो कवनो उपन्यास का कथ में कवनो अइसन सुखद भरम बुनाइ जाला कि पढ़े वाला ओही में भुला के रहि जाला। उपन्यासकार अपना कथा में कल्पना आ जथारथ के एगो अइसन जिनिगी सिरिज देला, जवन जिनिगी लेखा होइयो के, असल जिनिगी से कुछ अलग, अनोखा ढंग के होलो।

विन्ध्याचल राय 'अचल' जी अपना गँवई भाव-बोध आ अनुभव-संसार के बदउलत, एगो अइसन चरित्र के स्केच खड़ा कऽ देत बाड़न, जवन उनुका आदर्श के जीवन्त बनावऽता। "सुन्नर काका" के कथा- संसार, गाँव का पृष्ठभूमि पर चलत-फिरत कल्पना आ जथारथ का अन्विति से बनल एगो आदर्श गँवई-संसार बा, जवना में जीवन अपना मानवीय क्रिया-व्यापार में गतिशील लउकत बा।

अचल जी भोजपुरी के पुरान आ मँजल कहानीकार हउवन। उनका लेखन में खेतिहर-जिनिगी के श्रमशील रूप अपना जीवट आ आदर्श का साथ उभरल बा। उनका लेखन में भोजपुरी गाँव आ सरेहि के समझ आ चिन्ता का साथ ओह जीवन-जगत क गहिर पकड़ बा। ऊ खुदे, अध्यापन कर्म का साथ-साथ अपना कृषि-कर्म से जुड़ल रहल बाड़न। एह कारन उनका कथा-संसार में, गाँव का जथारथ के सकारात्मक पक्ष तलवर्ती रूप मे उभरल बा। गाँव में बुराइयो बा तऽ अच्छाइयो बा। विषमता बा त ओके दूर करे आ संतुलन बनावे क कोसिसो बा, दबंगई बा तऽ भलमानुसो लोग बा। तमाम बिपरीत अवस्था में, अपना सँग-सँग दोसरो के सम्हारे के भाव-विचार बा। कम्मे सही बाकिर समाजिक आचार-बिचार में शील-संकोच आ मरजादा बा। कहे क मतलब कि एम्मे जहाँ आ जतना सकारात्मकता (पाजिटिविटी) बा, "अचल" जी का लेखक के पसन्द बा। "सुन्नर काका" का चरित्रांकन में कथाकार अपना एही 'पाजिटिव'-सोच के साकार रूप रेखा देले बा।

दरअसल ई उपन्यास कवनो फारमूलाटाइप, मनोरंजक उपन्यास ना होके, लोकजीवन के, ओकरा उपयोगी कारकन का साथ, अभिव्यक्ति देबे वाला मौलिक उपन्यास हऽ। एकरा में गँवई जिनिगी का रचनात्मक उभार का दिसाईं, कथाकार के अटूट आस्था, उपन्यास में सुरू से अन्त तक लउकत बा। एकर कहानी संघर्ष आ तनाव का उतार-चढ़ाव से अलग, सहज आ सोझ कहानी बा। एह कहानी के बुनावट, सुभाविक

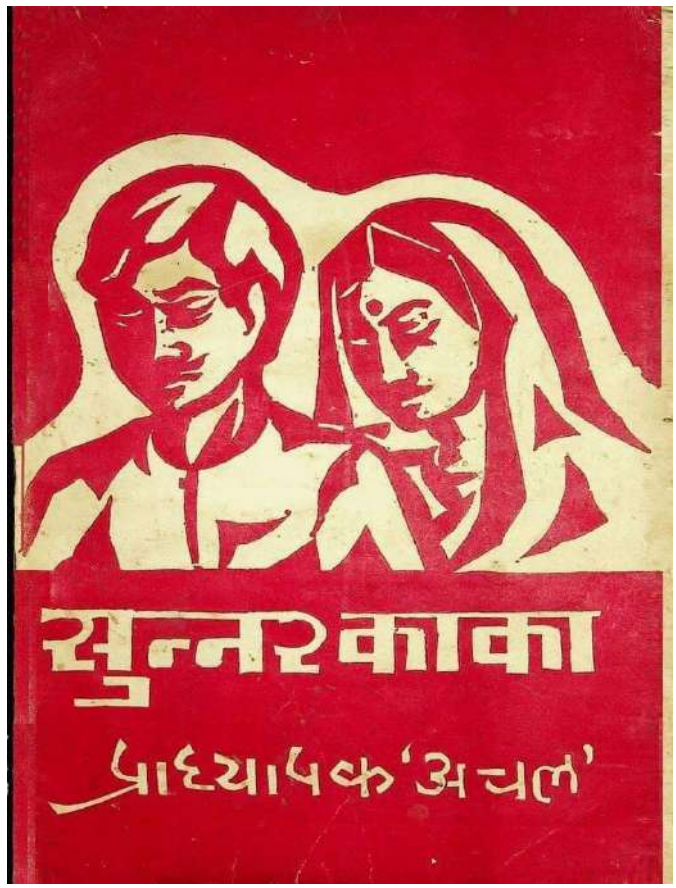

किताब : सुन्नर काका

लेखक: विन्ध्याचल राय 'अचल'

विधा: उपन्यास

बा। कहानी खतम होते, एगो सुन्दर सोगहग आ आदर्श चरित्र का साथ, एगो आदर्श गाँव के चित्र उभरि आवऽता।

उपन्यास के सुरुआत फगुआ का उछाह आ उमंग भरल वातावरन से होता आ अन्त दिया-दियारी (दीप महोत्सव) से। उल्लास आ उमंग का बिच्चे, अचके नाटकीय ढंग से कहानी गंभीर हो जात बिया- मुख्य पात्र सुन्नर, संघर्ष में अझुरात, अझुरहट सझुरावे क उतजोग करत बा। ऊ उपेक्षा, उपहास आ तिरस्कार का नकारात्मकता के अपना पर हावी नइखन होखे देत। सुन्नर जइसन निरभिमानी लोग कम्मे मिली, जे आपन व्यक्तिगत हित-चिन्ता छोड़ि के, तमाम तिरस्कार आ अपमान के परवाह ना करत, शान्त-भाव से अपना डहर पर बढ़त जात होखे।

सुन्नर काका का जरिये, कथाकार गाँव के आदर्श सरूप गढ़त बा। सुन्नर खातिर गाँव के हित सर्वोपरी बा। 'बिरजनपुर' गाँव आखिरकार चेतत बा। घर-घर, सूप-दउरी पीटत मेहरारू उद्घोष करत बाड़ी सऽ... "इस्सर पइसस, दलिद्दर निकससु ! महादुआरे परमेसर बइठसु ! "परम्परा से चलल आइल एह घोष में छिपल लोक-कामना फुरत बा। गाँव चेतन होता आ ओके एह घोष क अरथ समझ में आवत बा आ एक बेर फेरु सब केहू आपुस में एकवटत बा, सोच-बिचार आ आपुसी सन्मति से, गाँव का दलिद्दरपन का खिलाफ अभियान छेड़ देता। गान्ही बाबा के प्रिय प्रार्थना रहे- "रघुपति राघव राजाराम। सबको सनमति दे भगवान!" कथाकार अपना कथा में ए मंत्र का व्यावहारिकता के चरितार्थ करावत बा। बिरजनपुर गाँव अपना लगन आ उद्दम से अँजोरपुर में बदलि जाता। आजकाल्ह, गाँवन का जथारथ के देख सुनि के, एह परिकल्पना पर सुखद अचरज होई कि भला अइसनो होई कवनो गाँव।

ब्राकिर कथाकार वास्तविक जथारथ से अलगा, एगो बेहतर आ आदर्श गाँव के कल्पना करत बा तऽ एहू का पाछा ओकर सोच बा। उनुका मोताबिक रचनाकार जथारथ क जस के तस उरेह ना करे, ऊ अपना रचना में वर्तमान के बेहतर आ आदर्श रूप गढ़ेला। ई उपन्यास, गाँव आ ओमे रहे वाला लोगन के रचनात्मक दिशा देबे के जतन करत बा। कथा-शिल्प का अनुसार, भा समानान्तर भाषा में एघरी के रचाइल उपन्यासन नियर "सुन्नर काका" उपन्यास के कथा-शिल्प नइखे, एमें उरेहल जथारथ अटपटाह लागि सकत बा। एकर कथा सोझ-सपाट बा, बिना कवनो द्वन्द, तनाव भा नाटकीयता के। तबो भोजपुरी उपन्यास विधा का बढंती में एकर जोगदान मानल जाई। उपन्यास में क्षेत्रीय बोली के मन मिजाज आ तेवर बा। लोक-कहाउत आ मुहावरन का सुभाविक प्रयोग से एकर भाषा चोख आ असरदार हो गइल बा। ***

गजल

आखिर जुबां के बात कलम में समा गइल
गजलो में हमरा जिन्दगी के रंग आ गइल

बरिसन से जे दबा के हिया में रहे रखल
अचके में आज बात ऊ कइसे कहा गइल

उनका से कवनो जान भा पहचान ना रहे
भइले मगर ऊ दूर त मन छटपटा गइल

एह जिन्दगी के राह के होई के हमसफर
सोचत में रात बात ई मन कसमसा गइल

अबले ना जिन्दगी से मुलाकात हो सकल
ऊ साथे-साथ जबकि बहुत दूर आ गइल

कइसे भुला सकी कबो ऊ मदभरल अदा
जवना निगाहे-नूर प 'भावुक' लुटा गइल

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

केशव मोहन पाण्डेय

जिनगी के हर रंग में रँगाइल: फगुआ के पहरा

एगो किताब के भूमिका में रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव ऊर्फ जुगानी भाई लिखले बाड़े कि 'भाषा आ भोजन के सवाल एक-दोसरा से हमेशा जुड़ल रहेला। जवने जगही क भाषा गरीब हो जाले, अपनहीं लोग के आँखि में हीन हो जाले, ओह क लोग हीन आ गरीब हो जालंऽ।' ओही के झरोखा से देखत आज बड़ा सीना चकराऽ के कहल जा सकत बा कि भोजपुरी समृद्ध बा, भोजपुरिया मनई समृद्ध बा। हमरा ई बात कहला के बहाना श्रेष्ठ शिक्षक, सुलझल मनई आ सरस मन के मालिक कवि-साहित्यकार डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल जी के किताब 'फगुआ के पहरा' बा। एह किताब के पढ़ला पर बिना कवनो चश्मे के साफ लउकत बा कि माटी के गंध जहवाँ ले फइलल बा, विमल जी के कविता के विषय ऊहवाँ ले बाटे। कविश्री अपना भोजपुरिया परम्परा के निभावत लगभग सगरो विषय पर आपन लेखनी चलावत माटी के सुगंध के असली रूप में पेस कइले बानी। जइसन कि किताब के नाव से लागत बा कि एहमें प्रकृति के सरस आ उदात्त रूप पर रचना ढेर होई, बड़लो बा, बाकिर ओहके देखे के आँखि दोसर बा।

'वनांचल प्रकाशन' से प्रकाशित ई 'फगुआ के पहरा' के दूसरका संस्करण हऽ। भोजपुरी कविता के किताब के दूसरका संस्करण छपल अपने-आप में इतिहास बनल बा। एह उपलब्धि खातिर मन ऊँहा के बेर-बेर बधाई देत बा। ई किताब में तीन तरह के रचना बा। ओह रचनन के कविश्री गीत, गजल आ कविता नाम से अलगा कइलहूँ बानी बाकिर कवनो स्तर पर ऊहाँ के शब्द-शिल्प आ प्रस्तुति कहीं भंग नइखे। काव्य परम्परा के निर्वाह करत कवि के पहिलका रचना सरस्वती माई के गोहार 'बरिसावऽ माँ नेह सुधा' बा जेहमें कवि स्वार्थ से ऊपर उठ के परमार्थ खातिर प्रार्थना करत बानी। देखीं ना –

अनाचार के सगरे पहरा
बिलखत जिनगी के भिनसहरा
फइला दऽ ना ग्यान जोति
जड़ बुधि होखो चंचल।

कवि के क्रांतिदर्शी कहल जाला। कवि भूत-भविष्य, सबके ज्ञाता मानल जालें। कवि विमल जी के गीतन में ओही गुण से साक्षात होता। आज समाज में ढेर फूट-मतभेद समाइल बा। लोग हर एक घटना-परिघटना के जाति-धरम के आँखि से देखत बा। सभे अपना के सयान बूझत बा। साहित्यकार अइसन जीव होलें, जे के ना कवनो जाति होला, ना कवनो धरम। उनका खातिर सगरो धरती घर हऽ आ सभे केहू आपन। तबे नू 'वसुधैव कुटुम्बकम'

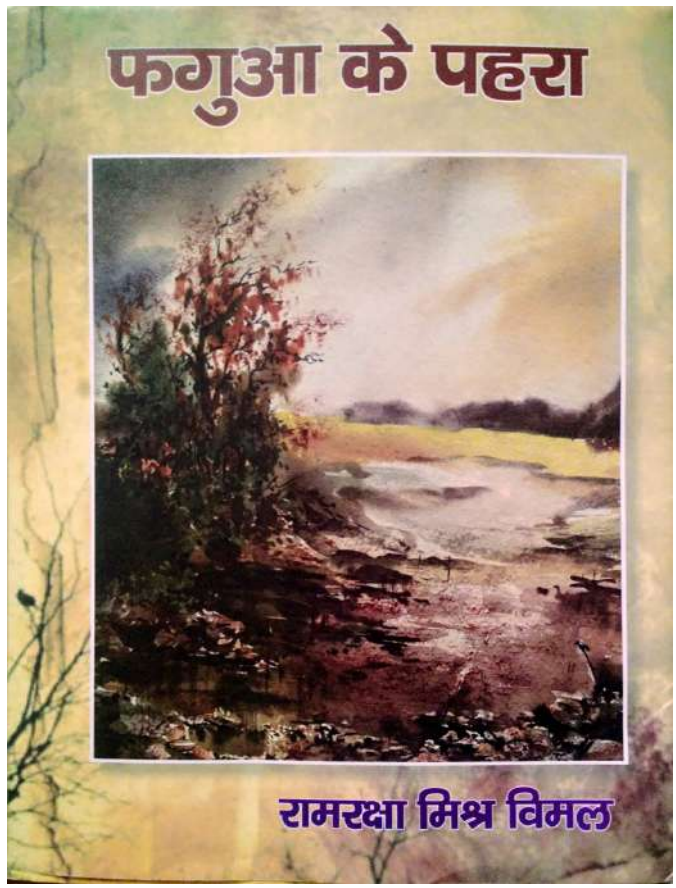

किताब: फगुआ के पहरा (भोजपुरी काव्य संग्रह)
कवि : रामरक्षा मिश्र विमल
प्रकाशक: वनांचल प्रकाशन
मूल्य : 150/ (अजिल्द), 250/ (सजिल्द)

लिखल गइल। कवि रामरक्षा मिश्र विमल जी ओही साहित्यकार जाति-धरम के माने वाला हवें, जे आपसी मनभेद-मतभेद भूलवा के सँघतिया बने खातिर बोलावत बानी। एगो उदाहरण देखीं ना, –

आई हमनी सभ बइठीं सुख-दुख आपन बतियाई जा
घरफोरवा बा के हमनी के ओकर पता लगाई जा
मान बढ़ाई जा माटी के भेदभाव सब छोड़ के
दुअरा-अँगना कहिया छिटकी मधुर किरिनिया भोर के..

श्री विमल जी के गीतन के बिम्ब बड़ा साफ बा। पढ़ते पाठक के मन में एक-एक बिम्ब अँजोर कऽ देत बाऽ। मन बरबस कहीं अउरी चल जाता। 'असो जाए फगुनवा ना बाँव सजना' के बात होखे चाहें, 'लागेला रस में बोथाइल परनवा' के बात होखे, 'दूब के सुतार' चाहे 'फागुन के आसे' के बात, एह सब रचनन में चित्रन के देख के मन कुछ अउरी सोचे खातिर बेसूध हो जात बा। एगो चित्र रउरो देखीं ना –

डर ना लागी
बाबा के नवकी बकुली से
अँगना दमकी
बबुनी के नन्हकी टिकुली से
कनिया पेन्हि बिअहुती
कउआ के उचराई।

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल जी के रचना संसार के विशेषता में ऊहाँ के लोकोक्ति आ मुहावरा के सहज प्रयोग बा। एह किताब में प्रस्तुत सगरो विधा में लोकोक्ति आ मुहावरा के सहज आ रोचक प्रयोग लउक सकेला। ऊहाँ के अपना आँखिन के देखी के मुहावरन से गढ़ि के प्रभावशाली रूप से सामने राखत बानी। कुछ उदाहरण देखीं –

खतरा बा लँघला पर आपन सिवान
कठवति के गंगा में कउआ नहान।
XXX
अब तऽ पनियो में अगिया के
हलचल होखे लागल बा.
XXX
मिले सेर के सवा सेर
औकात बुझाए लागल।

कवि जी अपना लेखनी के ताकत से गीत, गजल आ कविता के आपन जरिया बना के अपना सर्जना के सथवे भोजपुरी संवेदना के नया दिशा देहले बानी, जवन हमेशा साहित्य-प्रेमी लोग खातिर अनुकरणीय रही। ऊँहा के 'आँखि लाग गइल' जइसन कवितन में सबके आँख भर देबे के कूबत बा। ओहके पढ़ते भाव के अइसन दरियाव बढ़िया जाला कि कवनो बान्ह टूट जाला। कविश्री के दोहा मीठ पाग में पगल सीख देत बाड़ी स। ऊहाँ के सगरो दोहा में ठेठ भोजपुरिया, सुभाव आ बात-व्यवहार के पाग बा। एगो देखीं ना, –

झट से निरनय जनि लिहीं, घिन आवे भा खीस।
झुक जाए कब का पता, कट जाए कब सीस..

किताब के भूमिका पढ़त में कई बेर पता चलत बा कि कविश्री रामरक्षा मिश्र विमल जी खाली एगो कवि ना हईं, ऊँहा के रचनाकार के सथवे एगो सरस गायको हईं, एगो मजल कलाकारो हईं। ऊहाँ के गजल के पढ़ के ऊपर वाला सगरो बातन के सत्यापन हो जात बा। कवि के गजल के रदीफ आ काफिया बड़ो बा आ छोटो बा, बाकिर मतला, बहर, सबमें ऊहाँ के रचनाकार अनुभव साफ झलकत बा। पाठकगण गजल एक, दू, आठ, दस, चउदह, सोलह, अनइस, बीस, एकइस, बाइस आदि के बड़का आ तीन,चार, छव, नौ आदि के छोटका रदीफ-काफिया देख सकेला। कवि के गजल के विषय-वस्तुओ देखे जोग बा। 'स्वाइन फ्लू' रदीफ पर एगो गजल देखीं –

बंद भइल अब सब खिरिकी दरवाजा आइल स्वाइन फ्लू
बचिहऽ भइया आफति के आफति अफनाइल स्वाइन फ्लू

'फगुआ के पहरा' में विषय आ विधा के विविधता कवि के मौलिकता, प्रगतिशीलता आ रचनाशीलता के प्रमाण बा। एह किताब में 'जिनगी के रंग' विषयक हाइकुओ बाटे। हाइकु पढ़ला के बाद आजु के हाइकु-प्रकृति के धेयान आ गउवे। पिछलके साल हिंदी हाइकु के सौ साल मनावल गइल ह। ओहके आधार पर कहीं तऽ आजु-काल्ह हिंदी हाइकु-विधा के जवन विधि चलत बा, ओहमे दू गो धारा मिलेला। एगो धारा मानेला कि हाइकु में प्रकृति के चित्रण के साथे दू बिम्बन के प्रस्तुति होखे के चाहीं। एह हिसाब से खाली पाँच–सात–पाँच वर्ण के मिलन के हाइकु नइखे हो सकत। दू गो बिम्ब हाइकु खातिर अनिवार्य मानल जाला। वइसे कविश्री के हाइकु में कइगो बिम्ब बनल बाऽ आ प्रकृति के लगहूँ बा। देखीं –

जीयत चलीं
बहार पतझड़
लागले रही।

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल जी एगो प्रयोगधर्मी कवि बानी। ऊहाँ के कवितन में विविधता बा, विचार में विविधता बा, जिनगी के हर कोना के अनुभव में विविधता बा आ आदर्शो प्रस्तुति के माध्यम में विविधता बा। किताब पढ़त घरी कई बेर हमके कुछ शब्दन के लिखावट में विविधता लउकल। जइसे 'अंगना' चाहे 'अँगना' खातिर 'अङना' के प्रयोग हमरा कुछ खटकल। भोजपुरी में हमार अनुभवहीनता आ अल्पज्ञता हो सकेला। पहिले कबो ना पढ़ले रहनी हँऽ। एतने ना, सङे, बङला, अङुरी, अमिरित, बिशवास, भूँकल आदि हमके ओही तरह के शब्द लागत बा। किताब में 'ङ' के प्रयोग ढेर मिली। एगो उदाहरण –

सखियन का सङे जाके गंगा नहाइल
सङे-सङे नून मरिचा साग खोंटि खाइल
नइहर के सुख सब गइले छिनाई
अँखिया लोर बरिसाई .....

'फगुआ के पहरा' निश्चित रूप से भोजपुरी के कइगो मरत शब्दनो के जियतार करे वाला किताब बा। कुछ तऽ अइसन शब्दन के प्रयोग भइल बा, जवन भोजपुरी भाषा के धरोहर बा। ओह शब्दन के सहारे कवनो पंच पर भोजपुरी के पक्ष में सभ्यता, संस्कृति आ साहित्य पर बृहद् चर्चा हो सकेला। बाँव, छवरी, पेन्हि, गरहुआइल, घरफोरवा, सुसुकत, चुहानी, पखाउज आदि ढेर अइसन शब्द आ भाव बा जवना कारने ई किताब पठनीय, लोकप्रिय आ संग्रहणीय बा। पाठक लोग के एह किताब के एक-एक अक्षर पढ़े के चाही। ई किताब खाली काव्य के किताब नइखे रहि गइल, विद्वान लोग के विचार के किताब हो गइल बा। किताब के पहिलके फ्लेप पर प्रेमशंकर द्विवेदी जी के लिखल एकहक गो शब्द रचनाकार आ किताब, दूनो के जोरदार भूमिका प्रस्तुत करत बा। पहिलका फ्लेप से ले के पिछला कवर ले सगरो विचार एगो पाठक आ भोजपुरी साहित्यानुरागी खातिर थाती बा। ई थाती कविश्री विमल जी के लेखनी के कारने बा, ऊहाँ के लेखनी के बहाने बा, एहू खातिर भोजपुरी ऊहाँ के ऋणी रही, आ 'फगुआ के पहरा' के बहाने अपना सरस साहित्य के रसास्वादन कराहूँ खातिर ऋणी रही। एही शब्दन के साथे कवि के लेखनी के कोटि-कोटि नमन आ सादर प्रणाम।***

पुस्तक समीक्षा

राम मनोहर मिश्र "माहिर विचित्र"

श्रीसत्यनारायण व्रत कथा (लीलावती-कलावती) भोजपुरी में

हास्य रसावतार पंडित कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र' जी के भोजपुरिया जगत के अइसन कवनो मनई नइखन जे ना जानत रहलन ह। उहाँ के लिखल लगभग पच्चीस किताबन में ई लीलावती-कलावती(सत्यनारायण व्रत कथा)एगो प्रसिद्ध किताब बा जवना के भोजपुरिया जगत में सत्यनारायण व्रत कथा के सुनवईया लोगन में बहुत मांग बा।

ई किताब में पांचो अध्याय के संस्कृत कथा के भोजपुरी भाषा में हूबहू अर्थ के साथ पद्य में अनुवाद कइल गइल बा।

कथा शुरू भइला की पहिले के बतकही त बहुते नीमन बा, तनी रउरो सभे देखी-

एजी !
काहें रउरा मन मरले बानी? कवना हरानी परेशानी में बानी जी? अन्न-धन त नइखे नू घटल? भगवान रउरा के त बेटा-नाती दिहले बाड़न नू? बोलीं जी। रउआं कर्जा उधार से लदाइल बानी आ कि केहू बान्हता छानता कि जाने-अनजाने में कवनो पाप-चूक हो गइल बा जवना से उद्धार भइल चाहतानी। आखिर का चाहतानी? काहें नइखीं बोलत? आईं-आईं हमरी लगे आईं। हम रउआं के सहजे उपाय बताईं। कवनो ढेर टीम-टाम के जरूरत नइखे। नहा-धो के गाई के गोबर से जगह लिपवा के पूजा के सामान आ परसाद लेके धूप-बाती जरा के पूरब चाहे उत्तर मुंह बइठि जाईं। आ हई भोजपुरी में लिखल श्री सत्यनारायण भगवान की कथा बांचीं, चाहे बाबाजी से बचवाईं। गांव-घर के लोग के बोला के बइठालीं। हां, एगो बाति बा- 'मन मोर इहवां, चित्त भुसवली' ना रहे के चाहीं। मन चंचल रहला से सुनल-सुनावल बिरिथा हो जाला। जब पांच अधेयाय हो जाए त धूप, आरती कईके परसाद अपने खाईं आ सांच बोले के ढंग सीखीं।

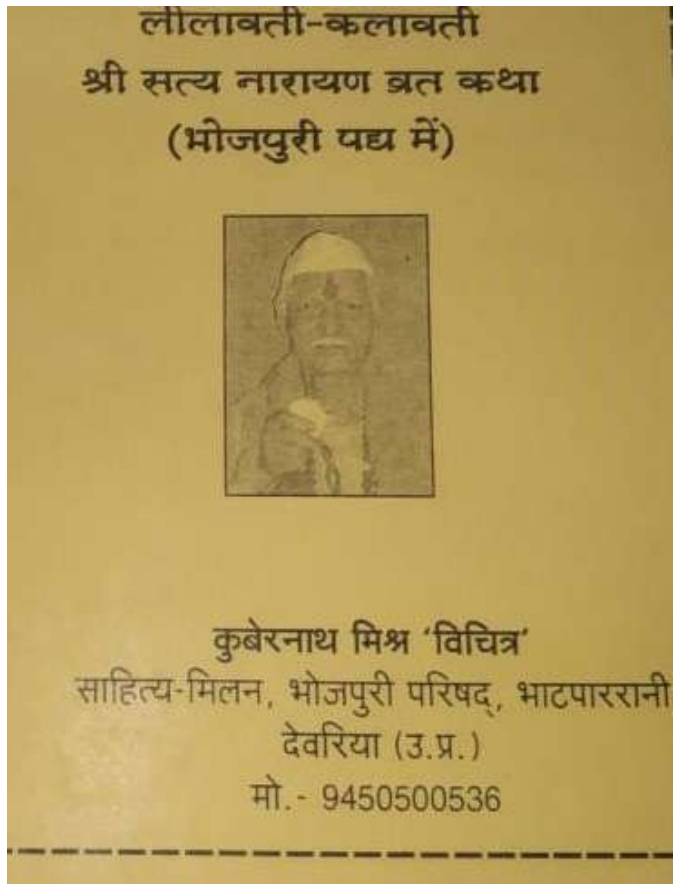

पहिला अध्याय के शुरूआत बा की–

एक समय नेमी सारण में सब शौनक आदि ऋषि बिटुरइलें।
वेद पुराण के पूरन पंडित व्यास के शिष्य से पूछत भइलें।।
सूत जी रउरे बताईं दया करि का फल होत तपोव्रत कइलें।
नारद विष्णु सवाल जवाब के सूत मुनी समुझावत भइलें।।

सूत जी कहले-

एक समय मृतुलोक में घुमत घामत नारद जी चलि अईलें।
देखि दुखी सब जीव जतीन के मुक्ति कि फेर में ऊं परी गइलें।
कौन उपाइ करीं कि कटे दुख, विष्णुपुरी उ त धावत गइलें।

किताबः लीलावती-कलावती
लेखकः पंडित कुबेर नाथ मिश्र "विचित्र"
विधाः श्रीसत्यनारायण व्रत कथा भोजपुरी पद्य में
प्रकाशकः भोजपुरी परिषद "साहित्य मिलन"
प्रकाशन वर्षः 1975
पृष्ठ संख्याः 20
मूल्यः 21 रु

जोरी के हाथ नवाइ के माथ कि नारद नम्र निवेदन कइलें।।

भोगत लोग महादुख हे प्रभु! हल्लुक कौनो उपाय बताईं।
ई दुखिया, सुखिया मुखिया बनी जाए उपाइ हमें समुझाईं।।

होई प्रसन्न प्रभु कहलें बस एक उपाइ इहे निबहाईं।
सत्यनारायण की व्रत से दुख दूरि भगी जग में सुख पाईं।।

नारद जी पुछलें व्रत के फल अउर विधान सजी बतलाईं।
कइसे करीं सब ,का बिधिहऽ,कहिया ब्रत ठानि के का-का जुटाईं।।

यह व्रत में कवनो दिन के कथा सुनल जा शकत बा जइसे कि-

"कौनो दिने गुरु बाभन बंधु बोलाई विभिन्न प्रसाद मंगाईं।
दूध दही घिउ चीनी पीसान से अमृत रोट पंजीरी बनाईं।।

सत्यनारायण जी के कथा सुनी पाईं प्रसाद कुल्ही बंटवाईं।
बिप्र जेंवाइ कुटुंब खिआइ के ढोल बजाई के कीर्तन गाईं।।

ई व्रत ह तिनुताप नशावन पुत्रधनादि सजी सुख पाई।
हे मुनि नारद ज्ञानी गुनी ,मृतलोक की लोग से ईहे कराईं।।"

चउथा अध्याय में श्री सत्यनारायण भगवान की परीक्षा में बनिया फिर फेल हो गइलें-

का लदले? पुछलें प्रभु तऽ बनिया धनिया तेजपात बतौलें।

इहे रहो ,श्रपलें हरि; झूठ उच्चारन के बनियां फल पौलें।।

पांचवा अध्याय के अंत में निष्कर्ष बा की-

हे ऋषिराज-समाज कथा कहले सुनले सूरधाम मिलेला।
ई कलिकाल कराल हवे एइमें व्रत के फल खूब फरेला ।।

काल कहे केहू, सत्य कहे केहू ईश्वर आ सत्यदेव कहेला।
जे सत्देव कथा नीत बांचत सूनत रंच न पाप रहेला।।

एह तरह से ई किताब बहुत उपयोगी बा आ संस्कृत की तुलना में भोजपुरी में कथा सबकी समझ में आ जाला, जेकरा से समाज की लोगन के लाभ मिलत बा। ***

गजल

का बा तहरा-हमरा में
जिनिगी प्रेम-ककहरा में

जीत-हार सब धोखा हऽ
कुछ नइखे एह झगड़ा में

धन-दौलत सब तू ले लऽ
माई हमरा बखरा में

चिन्हीं कइसे केहू के
सौ चेहरा इक चेहरा में

गाय कसाई के घर में
कुतिया ए° सी° कमरा में

हमरे खातिर पागल तू
अइसन का बा हमरा में

मत मारऽ कंकड़-पत्थर
हमरा मन के पोखरा में

'भावुक' के भी राखऽ तू
कतहूँ अपना हियरा में

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

डॉ. रजनी रंजन

एगो निबंधकार के गजल-संग्रह "सुर ना सधे"

'सुर ना सधे' नगेन्द्र प्रसाद सिंह जी के गजल संग्रह ह जवना के प्रकाशन लोक प्रकाशन पटना से भइल रहे। इ गजल संग्रह 2000 जनवरी में छपल रहे। लेखक महोदय आपन मन के बात अपना जीवन संगिनी श्रीमती शांति कुमारी जी के 40 वां वर्षगांठ पर सप्रेम भेंट कइले रहीं। 'सुर ना सधे' इ गजल संग्रह में 35 गो गजल के संग्रहित कइल गइल बा। श्री नागेंद्र प्रसाद सिंह निबंधकार के रूप में प्रसिद्ध रहीं। इ उहां के पहिला गजल संग्रह रहे।

इ गजल संग्रह में लेखक के मन के संवेदना बा जवना में जिनिगी के उतार-चढ़ाव में अपना आसपास के लोगन से मिलल संवेदना के विद्रूप भा सुंदर स्वरूप के चित्रण कइले बानी। पहिलका गजल के पहिलके शेर में कह तानी-

"हमरा जिंनगी में भोर ना होई ।
हमरा करनी के शोर ना होई।।
आदमी आदमी से टूट रहल।
केतनों जोड़ी, सांगोर ना होई।।"

इ पंक्ति से कवि के समाज में आदमी के बेवहार से उपजल बोध झलकता। समाज के छलिया सोभाव साफे लउकता। सच्चाई के बयान बाजी भी बड़ी सुंदर बा-

मन बहुत बाटे साधन थोर बा।
का खरीदी का हम किफायत करी"

अगिला गजल में मन के जे गहिर भाव बा ओकरा के थाहल अख्तियार में नइखे। एकरे के उहां के कहतानी- **"कतना गहिर ई कूप बा-ई के बता सकी"**।

आदरणीय शायर के रचना के पढ़ के लागत बा कि समाज से उहां के खूब गहिर अघात मिलल रहे जेकरा चलते उहां के पारस पथर नियन हो गइल रहीं। लोहा आ सोना के फरक बूझे के बोध, सामाजिक ताना-बाना में छनल बिनल खूब सुनर लउकता।

बाकी उहां के निराश नइखीं। जोश-जज्बात में खूब पाकल आ टांठ भइल होई तबे ई लिखाइल होई कि-

"बुताई ना दियना जरवले जे बाड़ऽ
जिये के ललक तू जगवले जे बाड़ऽ
अबहियों ले छूटल ना सपनन में भरमल

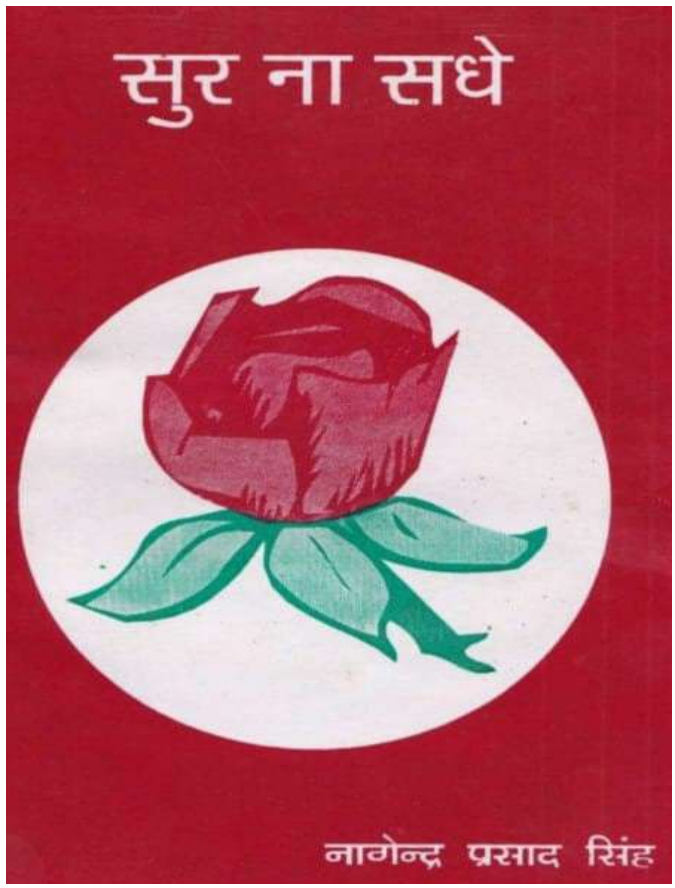

पुस्तक : सुर ना सधे
लेखक : डॉ. नागेन्द्र प्रसाद सिंह
विधा: गजल
प्रकाशक : लोग प्रकाशन
प्रकाशन वर्ष : जनवरी 2000
पृष्ठ संख्या : 63
मूल्य: 30 रूपया पेपर बैक, सजिल्द: 50रूपया

तृषा जाल में अस फँसवले जे बाड़ऽ"

फेर

**"सांझ गहिरात उमिर के जाता
प्राण के दीप जरावत बानी।"**

जीवन के दर्शन भी उहां के शेर में स्पष्ट लउकत बा–

**"टूटल दांत पाकल केस आंखिन के गइल आभा
खड़ा बानी अरज डलले बताव यार का होई।"**

समाज के ताना–बाना से लेखक दुखी रहीं। उनकर मन समाज के छली आ कपटी लोग के सिरिजल गलत सोच के बारे में रहे–

**"दोस हमरे गिनात बा शहरिया में
बानी चढ़ल समाज के नजरिया में
ठेलि हमरा के मँझधार बीच उ त यार
खेल खेलताड़े अपना लहरिया में।।"**

अइसन केतना गजल के शेर में समाज के विडंबना, आडंबर आ सामाजिक कुरीति संगे लोगन के खराब व्यवहार, छल–कपट ढेरे खराबी के चर्चा लेखक कइले बानी।

एक तरह से गजल संग्रह एगो समाज के, परिवार के आ सामाजिक कुरीति के आइना बा जवना के प्रभाव से आदरणीय भी बाँचल नइखीं। समाज के सभे रीत–कुरीत के आपन छोटहन शेर में बांध के समाज खातिर परोसल गइल अनुपम अद्भुत संग्रह बा। ई गजल संग्रह में लेखक के भाव गहीर कुइयां जइसन बा जेकर व्यंजना भा शब्द समंजन 'गागर में सागर' कहल जा सकेला। शब्द के गहराई तक पहुँच के ओह में आपन भाव के मोती गजलकार के सोच के परिणाम बा। भोजपुरी आ हिन्दी दुनो भाषा पर समान अधिकार के साथे आदरणीय नागेन्द्र सिंह जी समाज में आपन नाम कमइनी। लेखकन के बड़हन लिस्ट में बड़ी इज्जत आ प्रतिष्ठा से राउर नाम लिआता आ लिआई।

अंत में हमार मत ई बा कि 'सुर ना सधे' गजल संग्रह के शीर्षक नाम खूब सुनर रखाइल बा। ई शीर्षक नाम के दुगो अर्थ बा। पहिलका अर्थ त ई बा कि जवन सुर समाज में बनावल गइल बा, समाजिक ताना–बाना के साथ ओह पर उनकर मन सहज नइखे हो पावत आ दुसर ई कि जे समाज के सुर बा ओकर साधना सभे के बूते के नइखे। एकर राग कवनो विशेष मर्मज्ञ, शब्द साधक भा ध्वनि लोक के रसज्ञ मनई ही बूझ सकेलन इहो हम नइखीं कहत बल्कि ई ऊ विशिष्ट बुझक्कड़ आदरणीय के ही कहनाम बा–

**"नागेन्द्र सचेत रहे के बा।
अब समय गजब के आइल बा।"**

हमार थोर मति जे बुझले बा उहे हम लिखले बानी। गहिर समुन्दर नियन उहाँ के साहित्यिक गति लउकत बा,बुझात बा, ई हमरा अंतस के झिंझोड़ देहले बा बाकिर एकरा के थाहल हमार मंद बुद्धि के वश के बात नइखे। ओकर बखान कतनो कइल जाव कमे होई। बेरि–बेरि ई बिराट पुरुष के हमार नमन बा।***

गजल

**गजबे मुकद्दर हो गइल
गड़ही समुन्दर हो गइल**

**साथी त टंगरी खींच के
हमरा बराबर हो गइल**

**घरही में सिक्सर तान के
बबुआ सिकन्दर हो गइल**

**राजा मदारी कब भइल?
जब लोग बानर हो गइल**

**'भावुक' कहाँ भावुक रहल
ईहो त पत्थर हो गइल**

मनोज भावुक

समीक्षक : डॉ. संजय कुमार यादव

भोजपुरी अनुवादः ऋतु राज

रमबोला: बूने-बूने समुंदर

तुलसीदास के जीवन किंवदंति, विसंगति, विरोधाभास आ मिथक से निर्मित भइल बा, जेकरा लेके कईयन रचनाकर कईयन महत्वपूर्ण शोधपरक आ भावपरक रचनन के सृजन कइले बाड़न। अइसने एगो सफल आ सराहनीय सृजन हिन्दी आ भोजपुरी के समर्थ हस्ताक्षर डॉ. हरीन्द्र हिमकर जी 'रमबोला' शीर्षक खण्डकाव्य रच के कइले बानी, जे आपन छोटहन कलेवर में विराट जीवन सत्य के काया समेटले बा। ई खण्डकाव्य लोकभाषा भोजपुरी में रचल एगो श्रेष्ठ काव्य हऽ जवन लोकनायक तुलसीदास के जीवन पर आधारित होके भी मात्र हुनकर जीवन गाथा ही ना बा बलुकि आपन प्रस्तुति, आपन संदर्भ आ आपन भाव आकाश के व्यापकता के कारण वर्तमान युग आ युवा पीढ़ी खातिर एगो महान जीवन दर्शन बन गइल बा, जे मानव जीवन के कईयन प्रश्नन के समाधान प्रस्तुत करे के संगे-संगे कईयन नया प्रश्न भी खड़ा करेला जवन प्रेषित पाठक आ श्रोता के मानस संसार में हलचल मचा देवेला आ जीवन में एगो अनुपम क्रान्ति घटित हो जाला।

बिजुरी के फूल भरल अँजुरी। लवका के लहक भरल कजरी।
छितराइल राग चलल चसकल। जन-गन मन के कोंचा कसकल।

रमबोला पृष्ठ-22

रमबोला खण्डकाव्य अइसे तऽ कवि के युवाकाल के रचना हऽ, तेपरो एकर प्रोढ़ता, एकर बंध, एकर कसाव, एकर छंद, एकर विन्यास रचना सहृदय पाठक के अभिभूत क देवेला। भाव के शब्दन में बाँन्हे के कौशल कवि के अद्भूत रचनात्मकता के चिन्हासी बा।

छितनार भइल कचनार नार। रंगरेज बनल आइल बहार।
कोंचा कोंचा रस मात गइल। रीसे लागल रस के फुहार।

रमबोला पृष्ठ -23

'रमबोला' खण्डकाव्य के कथावस्तु तुलसी के जीवन से जुड़ल किंवदंति के ही आधार बनाके रचल गइल बा। एकर कथावस्तु अत्यन्त संक्षिप्त बा। मुगल के शासनकाल में हिन्दू समाज में चारू ओरी अन्हार फइलल बा। भक्तन खातिर धोर कलिकाल हऽ, सनातन हिंदू धर्म घुप्प अन्हार में डूबल बा। प्रकाश के कतहूं से कवनो भरोसा नइखे लउकत।

अंगे-अंगे धहकल धिंधोर। धरती लिहली अँचरा बिटोर।
तब धू-धू-धू सब ओर मचल। रीसे लागल अंखिया करोड़।

रमबोला पृष्ठ -19

अइसन कुसमय में तुलसी के जनम भइल। माता हुलसी प्रसव के समय ही टिटनस से मर गइली। पिता आत्माराम बेटा के मुँह ना देखे सकलन। दासी चुनिया तुलसी के लालन-पालन अभावे में कइली।

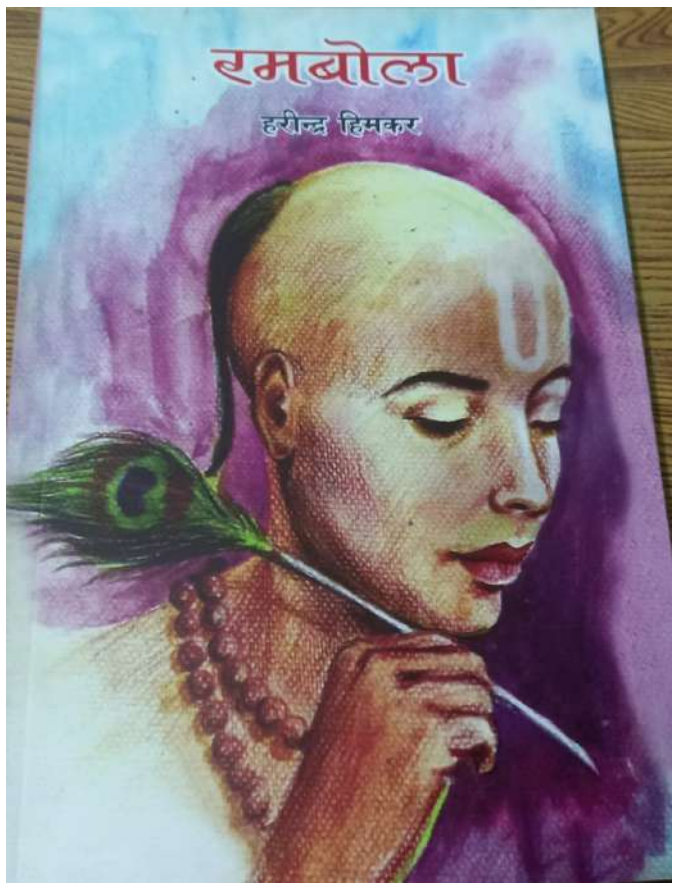

किताबः रमबोला
लेखकः डॉ. हरीन्द्र हिमकर
विधाः खण्डकाव्य
प्रकाशकः नवारंभ
प्रकाशन वर्षः 1977
पृष्ठ संख्याः 62
मूल्यः 150

"टुअर बन बिलख-बिलख घूमे। दुख लाख-लाख आगे जूमे।
जरिये जे जूझ गइल जग से। हारो लगली तरवा चूमे।"

तबही एक दिन संत नरहरि दास तुलसी के अपना संगे ले गइलें। तुलसी आश्रम में गुरुअन के सानिध्य में पढ़-लिख के विद्वान, ज्योतिष आ स्नातक आचार्य बन गइलन। तुलसी पूर्ण युवक हो गइलन। तुलसी के बिआह रतना नाम के सुनर कन्या से भइल आ कामुक तुलसी रतना के रूप सागर में डूब गइलन।

एक बेर जब रतना नईहर गइल रहली, तुलसी कामज्वर से पीड़ित होके भादो के अन्हार अधरतिया में पिष्टगृह में सुतल रतना के लगे चल गइलन। रतना लजा गइली, दुखी हो गइली, व्यथित हो गइली, खिसिअइली आ आपन निर्लज्ज पति के तीव्र कामुकता आ मयार्दाहीनता खातिर बड़ा धिरकरली।

"जिनगी के जोत जगाई ना, जगति के भूत भगाई ना।
जब नेहि राम से ना होई, जाये के बेरिया का होई।
परलोक सुधारीं, खुद सुधरीं। दुनिया उधार सउदा उधरी।
छोड़ीं छलचिकनी जपीं नाम। एगो मंतर बस राम-राम।"

रमबोला पृष्ठ- 35-36-37

रतना के फटकार सुनके तुलसी अवाक रह गइनी, हुनकर बुद्धि खुल गइल। उहाँ के काम के जगहे राम के चुननी आ पत्नी अउरी घर के छोड़-छाड़ के संन्यासी बनके भटके लगनी। उहाँ के राममय होके रामचरितमानस के रचना कइनी आ दिग्भ्रमित समाज के आदर्श अउरी मर्यादा के ज्ञान दिहनी।

"गुन-गुन के तुलसी भइलें गुनी। बइठल लहका के ज्ञान धुनी।
कन-कन के कादो काछ-काछ। रोपल रमबोला राम गाछ।"

जइसे-जइसे तुलसी प्रसिद्ध होखत गइनी, वइसे-वइसे रतना के वियोग, विछोह, विरह आ विषाद के भाव गहिर होत गइल। रतना अपना आप के दोषी माने लगली। उहाँ के पछताए लगली, गर में तुलसी के माला पहिर लिहली। फेर एक दिन तुलसी आ रतना के अन्तरमिलन हो गइल।

"रतना के पसीजल रीस-खीस। आँखि के माड़ा फाट गइल।
मरिचा के पानी परल आँखि, पसरल रग-रग में पाट गइल।
रम गइलें राम रमा गइलें, रतना के डाह बुता गइलें।
रतना के घर संसार भइल। तुलसी माला गलहार भइल।"

रमबोला पृष्ठ - 47-55

'रमबोला' खण्डकाव्य के कथावस्तु संवेदना, संदेश आ चिंतन के साथे-साथे एकर संरचना शिल्प भी बड़ा मोहक बा। कवि परंपरागत लोक शब्दन के प्रयोग कइले बाड़ें। कतहीं ओकर संस्कार कइले बाड़ें, त कतहूं ठेठ गँवई शब्दन के जइसे के तइसे राख देले बाड़ें। शब्दन लोक जीवन से चुनल गइल बा। बाकिर ओकर अर्थ संप्रेषण शिष्ट जन, रसिक जन, सहृदय भावुक जन तकले आसानी से पहुँच जाता। कुछ शब्दन के मनोरम बानगी देखत चलीं-रूस गइल, छुँछे-छुँछे, ओछर, सँउसे, मनमोर, पनसोखा, एहवातिन, सोहाग, अँजूरी, कोंचा, लछिमिन, छितनार, बाँझिन, बनचट, बिधना, सगेयान, मनमउजी, मऊअत, सतबादी, धरमात्मा, टूअर, टेम्हुआइल, छरिआह, ढेकरी इत्यादि।

अतने ना ई खण्डकाव्य भोजपुरी के जातीय कहाउत के अक्षयकोश ही बन गइल बा। कुछ उदाहरण देखल जाई- रग रग राग भइल, अंगे-अंगे धहकल धिधोर, राजा से रूस गइल रानी, बात भइल छूँछे-छूँछे, घर-घर मचल महाभारत, ओछर के बाज गइल डंका, अबरी के पेट भइल पतुहा, जन-जन के कोंचा कसकल, बनचट छूटल सूझल रहिया, थथमाइल खीस खरक आइल, टीपन पर पारस हो जाला।

वस्तुतः 'रमबोला' काम पर राम के विजय के काव्य ह, असद् पर सद् के जयघोष के काव्य ह, आवेग पर विवेक के जययात्रा के काव्य ह, पुरूष के दर्प पर स्त्री अंतःप्रज्ञा के जीत के काव्य ह, अकर्मण्यता के शव पर कर्मठता के शंखनाद के काव्य ह। 'रमबोला' आपन अंतरात्मा के आत्मसंभवा वाणी सुनके चैतन्य हो जाए आ लोक कल्याण के मंगल यात्रा पर निकल सके जे से कि कवि के ई प्रश्न अनुत्तरित न रह जाए-

"ऊ रामचन्द्र के राज भुलाइल बा कहवाँ
का अबही ले ना भइल इहाँ के धरम हान।
कब होई ऊ अवतार भठाइ ऊँच खाल,
कब होई सबका घर से अगहनुआ बिहान?
कब दूध मतारी के पी के लइका ढेकरी,
कब कवनो तुलसी का घर ही होई काशी
कब कवनो हुलसी टेटनस भइले ना मरिहे,
कहिया ले ई सतमी होई पुरनवासी?"

रमबोला पृष्ठ - 59-60

***

गजल

काँट ही काँट बा जो डगर में
फूल ही फूल राखीं नजर में

मन बना के ना देखीं उड़े के
जान अपने से आ जाई पर में

कुछ भरोसा त उनको प राखीं
जे बसल बाड़ें सबका जिगर में

देर होई मगर दिन ऊ आई
जब खुशी नाची आँगन में, घर में

हौसला, आस, विश्वास राखीं
होके निर्भय चलीं एह सफर में

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

भूपेन्द्र कुमार

रामप्रसाद साह के हीरामन सुगा

कवनो भी साहित्यिक सांस्कृतिक कारज के शुभ शुरूआत ईश्वर के साक्षी मानके हर सनातनी करे के चाहेला। एह संग्रह के शुभ शुरूआत भी सुरसती वंदना से भयील बा, जवन की एगो सहज सरल गद्य बा।

सुरसती आगे बढाव आपन पाँव।
एवमस्तु ! कह द मातु, असीस भाव।।

इ वंदना रचनाकार के देवी में आस्था अउरी भक्ति के परिचायक बा....

चरण पर पुष्प अरपन दात्री ज्ञान।
भाव भरल गीत सृसन हम नादान।।

संग्रह के पहिला रचना आस्था अनास्था, आस्तिक नास्तिक के भँवर से निकले खातिर एगो सुनर सुधर निर्गुण से भयील बा जवन परमात्मा से मिले खातिर एगो सही उपाय बा। देखीं इहाँ के निर्गुण के भाव...

प्रेम नेह मन के भीतर
विषय भोग तन के भीतर
जब जब आवे स्मृति के झोंका
माथ मोर ठनके भीतर।

हमनीं के भोजपुरिया लोक संस्कृति में निरगुन के विपुल भण्डार बा। वो भण्डार के बढ़ावत रचनाकार कयी गो निर्गुण एह संग्रह में संकलित कयीले बानी...

काहे के भयीलऽ अनचिन्हार ए हीरामन सुगा
भभुति रमवलऽ ना दरकार ए हीरामन सुगा।
माई बाबू तोहके सँघत धरवले
नीमन से रखिह तोहे समजवले
तेहू पर नइखे पतियार ए हीरामन सुगा .....।

एगो अउरी निर्गुण के रस भाव देखीं....

पहिले पहिले हम अइनी गवनवा
बिहारी हो ! धक धक करे ला करेज।

हमनीं भोजपुरिया के लोक संस्कृति लोकसंगीत अउरी लोकजीवन मे पूरबी गीतन के भी बहुत महत्वपूर्ण योगदान आ भण्डार बा। ये विधा के जोगावत संवारत कवि महोदय संग्रह में कयी गो पूरबी गीत के भी जगह देले बानी....

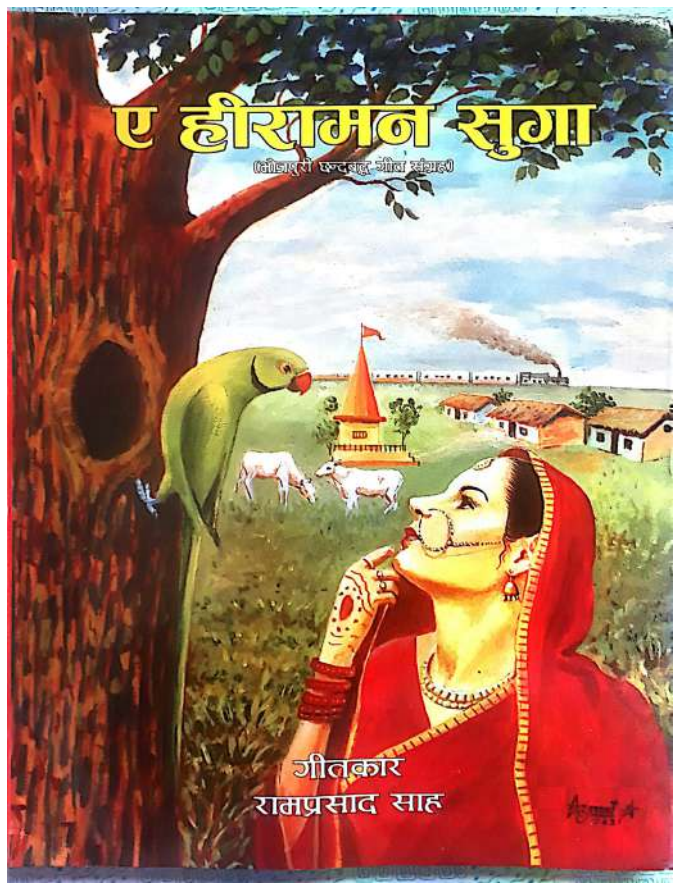

किताब : ए हीरामन सुगा
रचनाकार : श्री रामप्रसाद साह
विधा : गीत संग्रह
प्रकाशक : भोजपुरिया माटी, नेपाल भोजपुरी प्रतिष्ठान, बारा, कलैया नेपाल
प्रकाशन वर्ष : ई. सन २०२२
पृष्ठ संख्या : १००
मूल्य : ने. रुपैया २००/ भा. रु. १२५/

ए ननदो! आजु होरी गावे दऽ
ए ननदो! तोरा भैया के आवे दऽ।
काल्हे पाती मिलल हमरा
कबसे लागल बा असरा
आजु पुआ पकावे दऽ। ए ननदो.....

ये पूरबी गीत में हमनीं के लोक संस्कार अउरी लोक संस्कृति के गीतकार कविवर श्री राम प्रसाद साह जी द्वारा बड़ी सुनर दृश्य उकेरल गयील बा ....

तोहरो असरा हम पुगाइब
झुलनी नाक में हम पेन्हाइब
एगो होरिला के आवे दऽ ।ए ननदो.....

भोजपुरिया लोकविधा के सृजन हो आ कजरी गीत ना रचाय तब सब सुने लागी। हमनीं के भोजपुरिया समाज में पारंपरिक रूप के कजरी के भरमार बा।

सावन के रिमझिम फुहार में बाग बगिया में जब झूला झूलत गाँव के लइकी जब कजरी गावेली तब कोयल भी आपन सुरताल से कुहू कूहू कुहूक उठेली।

सावन आइल रसधार पिअवा ना अइले
कजरी माथे पर बजरी ए सखि।
दिन ना चैन रैन ना निन्दिया
साटल रह गयील माथे बिन्दिया
कथि पर करी सिंगार पियवा ना अइले
ढोल मजिरा ना खजडी ए सखि
कजरी माथे .....

एगो अउरी कजरी के भाव देखीं...अहा!! कजरी संगे विरह वेदना...

दादुल बोल भयावन लागे
झरझर बरसे सावन लागे
का करी वैदा गोसाई पिअवा ना अइले।

कवि के पत्नी के असामयिक निधन के साहित्य सृजन पर प्रभाव ये संग्रह में खुलके सामने आइल बा। कयी गो विरह गीत के संकलन खुद बता रहल बा....

संग्रह के शीर्षक "ए हीरामन सुगा" के प्रतिनिधित्व करत एगो विरह गीत ....

पूरबी बनिजिया में गइले मोर बलमुआ
ए हीरामन सुगा....

ओतही गइल बाड़े नू हेराय
ए हीरामन सुगा .....।

विरह गीत में केतना मार्मिक भाव आइल बा...

पूरब ही देशवा में बसे बंगलिनिया
ओतही गइल बाड़े लोभाय
ए हीरामन सुगा.....।
वियोग में जेठवा बितावेले धनि
राहत बूनवा बँचावे।
जब ही पपिहरा बोलिया के तान मारे
मनवा ओकर भरमावे।

कवि हृदय के अथाह भावना के सागर बा इ "ए हीरामन सुगा" ।

चन्दा रे तु जागे रहियो बलम गइले सो आवे ना
विरह के रतिया छटपट मन घर अंगना मन भावे ना।
बाया दहिना करवट फेरी
चित चन्दा मन शरमावे ना
धहऽ धहऽ धनके तन मोरा
वेदना भीतर से उसकावे ना
बलम गइले सो आवे ना.....

हमनीं के समाज में दहेज एगो अइसन कोढ़ के तपन बा जेकरा से झुलस के केतना परिवार बरबाद हो गयील। ये कुरीति पर कवि हृदय के भाव ....

बेंच दिहलें बाबूजी हमर गोयडा घराड़ी
नगद मांगे बेटहा लडकी बाटे कुआँरी
ये कर अन्तिम छन्द के भाव देखीं ...
बेटी के नतिजा होखी बाची बूटी बूटी ना
धन धरम दूनू गयील दहेज के बीमारी ।

ये संग्रह के सिंगार गीतन से बड़ी सुनर सिंगार कयील गयील बा, जवन कि रचनाकार के सिंगारबोध के परिचय करा रहल बा।

कोयली निरासी बड़ी भोरे जगावे
निनिया के मातल अखिया खोलावे
नयना के फरकल खबरी बुझाइल
सावन भादों अखियन में समाइल ....

सावन अइसहीं सुहावन हऽ ओह पर अगर रसिया कवि के मनमोहक भाव उतर पडे तब अउरी मनभावन हो जाला। संग्रह में सावन गीत के सतरंगी छटा उमड़ल बा।

बिन कजरा ना नैन सुहावन
बिन बदरा ना शोभे सावन
सखि री सावन रुत मनभावन।

भोजपुरी लोकगीत के विपुल भण्डार में जवना तरह रचनाकार शारीरिक रुप से सांसारिक, सामाजिक अउरी सांस्कृतिक प्रतिभा के विविधता के पोषक संरक्षण के धनी बानी वइसही इहाँ के संग्रह में हर विधा के भरपूर जगहा मिलल बा। भोजपुरी साहित्य के समृद्ध करत हर मौसम हर तिउहार हर विधा पर अलग अलग भाव पर विरह गीत, सिंगार गीत,कजरी दहेज गीत किसाना गीत अउरी सारललित छन्द पर एक से बढ़िया एक गीतन के जगहा मिलल बा । विवाह पंचमी पर आधारित मंगलगारी गीत.... समधिन के चाहीं कुंथवनी के कसार, ए सुहागीन सुनऽ। बड़ी मजगर भाव उतरल बा।

लइका लइकिन के मानसपटल पर भोजपुरी के बिम्ब देखावत बालगीत। बेटा बेटी के फरक बतावत बालगीत अउरी भोजपुरी के शेक्सपिअर कहाएवाला स्व. भिखारी ठाकुर जी के पुण्य स्मृति पर आल्हा छन्द में गीत।

कोरोना काल भी इहाँ अछूता ना रहल बा ओहु पर आल्हा छन्द में गीत पारंपरिक आल्हा छन्द के जोगवे के सार्थक प्रयास बा।

नेपाली, हिन्दी अउरी भोजपुरी तीनों भाषा पर इहाँ के समान अधिकार बा बाकि माईभाषा भोजपुरी के चलते भोजपुरी के विकास खातिर इहाँ के तन मन धन से समर्पित योद्धा बानी।

हर आदमी के मन में येगो हिरामन सुगा बसेला कोई ओकरा के निखार देला कोई विसार देला। इहाँ के सुगवा खुलल आकाश में सहज सरल उड़ान भरत बा।

संग्रह के कुछ इकार उकार आ शब्दन के त्रुटि दोस के विसार के एह के भोजपुरी साहित्य खातिर सुनर सहयोग कहल जाई। इहाँ के "ए हीरामन सुगा" भोजपुरी काव्य संसार में आसमान के ऊंचाई छुये इहे शुभकामना बा।
***

पुस्तक समीक्षा

आनंद अमित

लोक से जुड़ल गीतन क खजाना हउवे "लोक मंजरी"

कहल जाला की भोजपुरी बोली दुनिया के सबसे मीठ बोली हउवे। भोजपुरी के ई दर्जा तक पहुँचावे में भोजपुरी गीतो क बड़ा योगदान रहल हऽ। आजकल के सिनेमा अउर एलबम वाला कुछ फूहर गीतन के छोड़ दा त भोजपुरी गीतन में जवन परम्परा आ संस्कृति से जुडल मधुर शब्दन क प्रयोग देखे के मिलेला उ दूसर बोली आ भासा में बड़ा कम दिखेला। टीवी आ सिनेमा देखे वाला लोगन से भोजपुरी गीतन क चरचा कइदऽ त उ लोग तुरन्ते फूहड़ता क बिचार अपने मन में लेके बइठ जाला अउर नाक-भौं सिकोड़े लगेला। लेकिन सिब्बू गाजीपुरी फूहड़ता से बहुत दूरी बनवले रहेलन।

"लोक मंजरी" सिब्बू गाजीपुरी क भोजपुरी गीत संग्रह हउवे। चूँकि एह किताब क जादातर गीत के शिल्प लोकगीत से संबंधित ह, एसे ई किताब के नाम "लोक मंजरी" रख के कवि बढ़िया कइलन। ई किताब के प्रकासित भइले से पहिले आ बाद में... मतलब दूनो स्थिति में... कई बार अवलोकन क सौभाग्य मिलल। जेतना बार पढलीं ओतना बार मन पहिले से अउर जादा हरियर भईल।

गीत विधा के शिल्प में 'लोक मंजरी' क कवि माहिर देखात हउवन। होली, कजरी, चइता, निरगुन अउर सोहर जइसन अनेक पारम्परिक विधावन के लिखे में कवि क कलम कहीं ना डगमगाइल बा। बात गीत आ लोकगीत क आवेला तऽ कई ठो मुद्दा सामने निकल के आ जाला। गीत आ लोकगीत में अंतर के चर्चा उठ जाला। लेकिन देखल जाव त लोकगीत भी गीत क ही एगो रूप बा। फिर एह बिसय पर बहुत चर्चा क कउनो मतलब ना ह। एह किताब के भूमिका में भोजपुरी पर खोजबीन करे वाला विद्वान रामनारायन तिवारी जी भी लिख रहल बाटें "ई बँटवारा आजु काल्हु के लोक गायक लोग करत बा हम ना।"

"लोक मंजरी" में शिब्बू जी कुल 101 गीत सामने लेके आइल बाटें। सुरुआत में सारदा माई के शब्द-पुष्प अरपित कइले बाटें कवि जी। इगारह गो भगती क गीत पढि के मन स्थिर हो जाई। फिर आगे के गीत पढ़े में मन क नइया बीच भंवर में ना डगमगाई। एह किताब में "बीच भंवर में नइया" शीर्षक से लिखल कजरी क जेतना तारीफ कईल जाय कम बा।

प्रभु जी बीच भंवर में नइया परल हमार बा,
केहू न खेवनहार बा ना।
झुरु-झुरु बहे पवन पुरवइया, डगमग-डगमग डोले नइया,
घेरलस काली बदरिया, चारो ओर अन्हार बा,
केहू न खेवनहार बा ना।

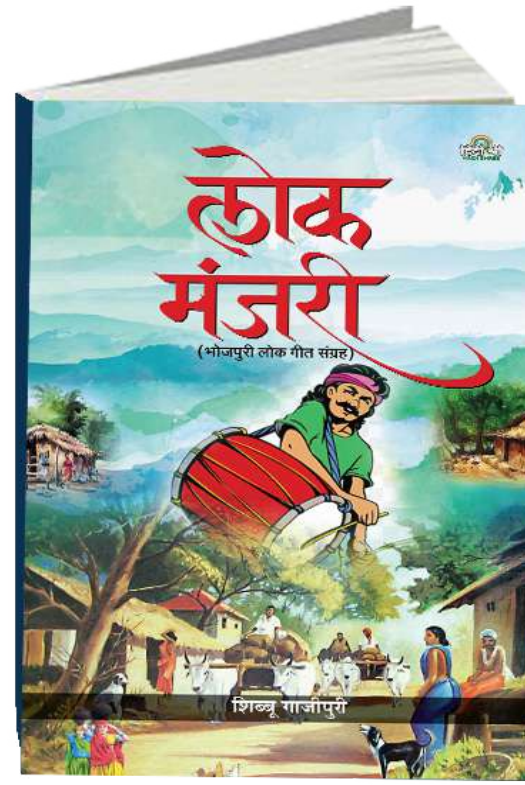

किताब : लोक मंजरी
लेखकः शिब्बू गाजीपुरी
विधाः गीत संग्रह
प्रकाशकः हिंदी श्री पब्लिकेशन, उ. प्र.
प्रकाशन वर्ष : २०२२
पृष्ठ संख्या :136
मूल्य : 350/- रुपये (पेपरबैक)

सिब्बू जी क कलम से निकल देस भगती के गीतन में जोस भरे क क्षमता ह त उहवें भारत क विसेसता के बड़ा सहजता से कहे क हुनरो बा। कुछ पंक्ति देखीं।

रंग-बिरंगा पहिरावा बा, तरह-तरह के बोली बा,
एके अलग-अलग मत बुझिहऽ, मिलके एक्के टोली बा।
मौसम तीन, ऋतु छौ आवे, आवे जहाँ बसन्त बहार।
हिमगिरि से बा हिन्द महासागर तक भारत देस हमार।

देवी-देवता आ देस के नमन कइले के बाद कवि जी "लोक मंजरी" में सावन के रिमझिम फुहार पर लिखल गीत के ओर बढ़ चलल हउवन। सावन में बरस रहल रिमझिम फुहार से खाली नायक-नायिका के भावना ना जुड़ल रहेला बल्कि मजदूर, किसान आ भगवान भोले बाबा के भगतो क भावना जुड़ल रहेला, लोक क भावना जुडल रहेला।

चढ़ते सवनवा बा ललसा अपार।
बनि के काँवरिया आइब रउवे दुआर।

सावन क रिमझिम फुहार बरसा के सिब्बू गाजीपुरी एक बार फिर भगती गीत के ओर मुड़ि आइल हउवन। एना पारी छठ माई के गीत के साथ। छठ परव उत्तर परदेस आ बिहार के सबसे बड़ तिउहार बन चुकल ह। भोजपुरी बोले वाला लगभग हर घर ई तिउहार के मनावेला। अइसना में छठ पर गीत लिखके कवि जी एह किताब के लोक से जोड़ देवे में कउनो कोर-कसर ना छोड़ले हउवन। बिसेस रूप से छठ माई पर लिखल कुल दस गो गीत ई किताब में शामिल बा आ गीत केतना सुन्दर बन पड़ल बाटे, एकर एहसास ई लाइन से हो जाई-

एहि साल छठिया मनाइब, कोसिया भराइब हो।
नाचि-नाचि अपना मइया के रिझाइब, छठि घाटे जाइब हो।

"लोक मंजरी" में छठ गीत के बाद होली गीत क क्रम सुरु भइल ह। लगभग दस गो होली गीत के बाद चइता गीत ह। ओकरा बाद विविध बिसयन पर सिब्बू जी क जानदार कलम हरहरा के चलल ह। लोक से जुड़ल सायदे कउनो बिसय होई जवन ई कलम से छूट गइल होई। सोहर बा, बिटिया के परेशानी प गीत बा, प्रीत क गीत बा त खेती किसानी प गीत बा।

खेत में उपजे हीरा मोती तब्बो ईहे हाल बा।
व्यापारी खुसहाल, किसनवां काहे भइल बेहाल बा।

कवि सिब्बू जी "लोक मंजरी" में अंत में निरगुन आ सूफी गीत सामिल कइके एह किताब के पूर्णता प्रदान कइले हउवन।

धू-धू कइ जरि जाइ चिता पर सोना जइसन काया।
ई दुनिया चार दिनन के माया।

अंत में हम ईहे कहब कि लोक से जुड़ल गीतन क खजाना हउवे "लोक मंजरी"। सिब्बू गाजीपुरी जइसन माटी से जुड़ल कवि के कलम चली तऽ अइसने सुग्घर गीतन क खजाना हाथ लगी। सिब्बू जी के कलम पर माई सारदा आपन किरपा अइसहीं बनवले रहें आ इहाँ के कलम से अइसहीं सुग्घर-सुग्घर गीत पढ़े के मिलत रहे...

अमित सुभकामना।***

गजल

एह कदर आज बेरोजगारी भइल
आदमी आदमी के सवारी भइल

पेट के आग से ई भइल हादसा
केहू डाकू त केहू भिखारी भइल

आग प्रतिशोध के कबले भीतर रहित
आज खंजर, ऊ भोथर कटारी भइल

बात बढ़ते-बढ़त बढ़ गइल एह तरे
एगो लुत्ती लहक के लुकारी भइल

रोजमर्रा के घटना बा, अब देश के
पार्लियामेण्ट में गारा-गारी भइल

एह सियासी मुखौटा के पीछे चलीं
इहवाँ चूहा से बिल्ली के यारी भइल

कौन मुश्किल बा सत्ता के गिरगिट बदे
छन लुटेरा, छने में पुजारी भइल

आम जनता बगइचा के चिरई नियन
जहँवाँ रखवार हीं बा शिकारी भइल

लोग मिल-मिल के ओझल भइल आँख से
जिन्दगी जइसे इक रेलगाड़ी भइल

नाम एके गो गूँजत बा मन-प्रान में
जब से 'भावुक' हो तहरा से यारी भइल

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

विष्णुदेव तिवारी

तेतरी: एगो अइसन कहानी संग्रह जे उजबुजावतो बा, खिसिआवतो बा आ उत्साहितो करत बा

कहल जाला इंगलैण्ड के एगो राजा ब्रूस, एगो मकड़ी से प्रेरणा लेके अपना प्रतिपक्षी राजा के हरवले रहले। जब मकड़ी अतना प्रेरित कर सकति बा, त' सिंहन के सिंह बाबू कुँवर सिंह के यश-गाथा कतना प्रेरित-उत्साहित कर सकत बिया, सहजे सोचल जा सकत बा। सरोज सिंह रचित कहानी संग्रह 'तेतरी' के कहानी 'हम सिंहन के सिंह शूरवीर कुँवर सिंह' से अइसन उत्साह, अइसन प्रेरणा मिल जात बा। कहानी पढ़े वाला पाठक के हीनता ध्वस्त हो जाति बा आ ऊ अपना बिहारी होखला पर गर्व करे लागत बा।

संग्रह के एगारह कहानियन में, बेसी कहानियन के मन-मिजाज में मुख्य बा- आज के नारी के जीवन के कुछ दुःखद पलन के चित्रण के आधार से ओकरा अस्तित्व आ अस्मिता पर कुछ सकारात्मक बातचीत। बाकिर, एकरा अलावे, कुछ कहानियन में, लरिकन के मनोविज्ञानो के कुछ दर्शन-दिग्दर्शन करावल गइल बा, जइसे ऊपर कहल गइल कहानी के अलावे 'नवका च्चा', 'सुपरमैन', 'माई बीया दे गाछ उगाइब' कहानी में। लागत बा कि ई सब कहानी बच्चने खातिर लिखल गइल होइहें स। ई दोसर बात बा कि कवनो उमिर के आदमी पर एह कहानियन के भरपूर प्रेरणापूर प्रभाव पड़त बा।

संग्रह के 'दूसरी' कहानी 'परधानीन' नारी अस्तित्व आ नारी स्वाभिमान के दस्तावेज अस बा। एह में, पुरुष के नपुंसक स्वार्थ आ नारी के आपन निर्दोष सत्ता के बीचे सीधे संघर्ष देखावल गइल बा, जेमे पुरुष हारत बा। ऊपरी तौर पर इहाँ, गाँव आ शहर के टकराहटो के कुछ झलक देखल जा सकत बा। मोंसिफ मजिस्ट्रेट शिवपूरन सिंह शहर के आ उनकर परित्यक्ता (पूर्व) पत्नी परधानिन बिमली गाँव के प्रतिनिधि के रूप में देखल जा सकत बा लोग। शिवपूरन सिंह के बिमली के प्रति अपना कइलका के पश्चाताप होत बा, बाकिर बिमली आत्मसमर्पण नइखी करत। पछतावा के आँच में झुलसत मजिस्ट्रेट साहेब शहर के रास्ता नापत बाड़े। लेखिका के शब्दन में- "गेट के बहरी शहर के आपन गाँव से जात देख के बिमली उनका रोके के बजाय संतोस के साँस लिहली।"

सरोज सिंह के कहानी बौद्धिक होखे से बाँच गइल बाड़ी

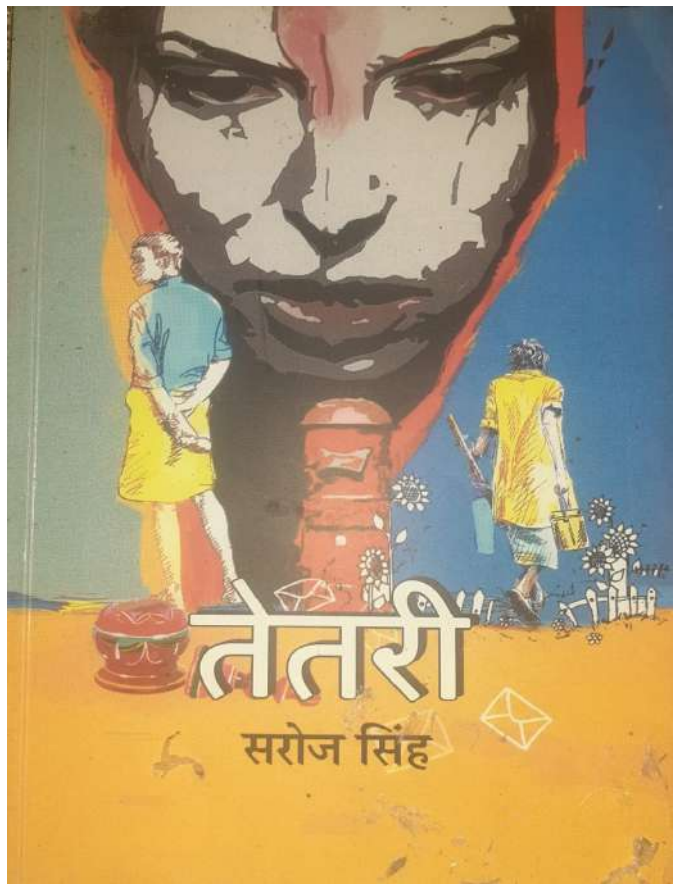

किताब: तेतरी
लेखिका: सरोज सिंह
विधा: भोजपुरी कहानी संग्रह
प्रकाशक: हिन्द-युग्म, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2018
कुल पृष्ठ: 104
मूल्य: 130 रु

स आ नारी पर बात करत बहु प्रचारित 'नारी-विमर्श' से फरका रहत बाड़ी स। सरोज का नजर में, गाँव होखे भा नगर, धनी होखे भा निर्धन, पुरुष-वर्चस्व वाला एह समाज में, नारी के हाल सगरे एके नियर शोषित-प्रताड़ित आ वजूद-वंचित बा। अपना कहानी 'दलित के' में ऊ एह बात के तीन नारी अंजोरा, सरिता आ सूजी मैडम के माध्यम से देखावत बाड़ी। एगो अन्य कहानी 'करियट्टी' में ऊ नारी-रंग के लेके एह समाज के गलीजपन आ पापमय सोच के उजागर करत बाड़ी। एह कहानी के नायक जगदीश नाँव के एगो मास्टर साहेब बाड़े, जे करिया होखला के वजह से अपना गुणवती पत्नी के जान ले लेत बाड़े आ समाज में आदर्श मानव के आपन मुखौटा सुरक्षित रखले रह जात बाड़े। उनकर चरित्र समाज के आँख में हमेशा बेदागे रहत बा।

पुरुष आ नारी के प्रति सरोज सिंह के कहानियन के दृष्टिकोण आलोचनात्मक त' बा बाकिर पक्षपाती नइखे। नारी अच्छा बाड़ी त' पुरुषो अच्छा बाड़े। पुरुष खराब बाड़े त' नारियो खराब बाड़ी। अच्छा होखल आ बुरा होखल एगो प्रवृत्ति ह। एह से, एकरा के खाली 'सामंतवादी सोच', 'पितृसत्तात्मक व्यवस्था के दोष' जइसन गींजल शब्दावली से नवाजल बड़ा ओछ बतकही हो जाई। 'हमार मुमताज' आ 'मेम साहेब' सहज-संयत शब्दावली आ संवेदना में लिखल प्रेम कहानी हई स। 'हमार मुमताज' में पति-पत्नी के बीच प्रेम के प्रकटन बा, 'मेम साहेब' में मालकिन आ नौकर के बीच अशरीरी नेह-मिलन। दूनों कहानी दुखांतक बाड़ी स।

बाकी बँचल दूगो कहानी बाड़ी स-एगो 'एगो रहली कलवा आजी' आ दूसरकी 'तेतरी'। 'एगो रहली कलवा आजी' एगो नारी के अपना वृहत्तर समाज के प्रति उदार सोच आ करुणा के दीपित आधार प्रस्तुत करति बा। आजी अपना धन (मए गहना बेंच के) से घरे-घरे कल लगववले रही। आजो, गाँव में लइका सब उनकर कहानी सुनल चाहेला।

अंत में, 'तेतरी', जे पर संग्रह के नाँव रखाइल बा। ई संग्रह के पहिली कहानी ह आ एही में लेखिका से बड़हन चूक हो गइल बा। बहुते बड़हन भूल-गलती आ तारीफ ई कि एके लेखिका के साथे-साथ संग्रह के कहानियन पर लिखे वाला लोग भी दोहरवले बा। एक वाक्य में कहल जाउ त' एह कहानी के संग्रह में रख के लेखिका अपना संगे-संगे ओह सब लोग पर अपइछा लगवा दिहली जे छपे से पहिले एह कहानी के पढ़ले होई कि-'केहू के भारतीय परंपरा, धर्म आ संस्कृति, लोक-आस्था आ लोक-विश्वास के ज्ञान नइखे।' एह तरह से ई कहानी कपोल कल्पित आ अविश्वसनीय होके रह जात बिया।

'तेतरी' के कहानी संक्षेप में ई बा कि सुंदर-सुरेख आ पढ़ल लिखल तेतरी के बियाह अइसना घर में होत बा जहाँ ओकरा मरद के अलावे सब केहू ओकरा पर जुलुमे करे वाला बा। ओकर लइका पेटे में मू जात बा। दुर्भाग्य के आकाशे ठेकावत दुर्योग से सरकारी नोकरी करेवाला मरदो मू जात बाड़े त' विधवा तेतरी के नरक के यातना शुरू हो जात बा। लेखिका के शब्दन में- "भरल सिन्होरा अब साज बन के आला पर धरा गइल। घर-जवार के लोग ओकरा के अभागी माने लागल।"

एक दिन अकेला में, पलखत पावते, तेतरी के जेठ ओकरा संगे दुष्कर्म कइल चाहत बाड़े त' ऊ आला पर राखल आपन सिन्होरा उनकरा कपारे पटक देत बिया। सगरो सेनुर छिटा जात बा। पकड़ाए के डरे जेठ घटना के कुटिलतापूर्वक दोसर रंग देत कहत बाड़े-" अरे ई डाइन हिय'.. देख' लोग सेनुर से ओझा गुनी करत रहल हिय। आपन कोख त' भक्ष गइल। अब हमार मेहरारू के कोख उजाड़े पे तुलल बिया।"

तेतरी के डाइन बना दिहल ओकरा खातिर नीके हो गइल। लेखिके के शब्द में देखल जाउ- "मगर तेतरी डाइन बन के खुश बिया। दिन के आराम अउर रात के चैन के नीन बा। पोस्टमास्टर अब डर से पेंसन डाइन घरे दे आवेला। सिन्होरा हाथ में लेहले तेतरी कहेले-ई सेनुर कपारे ना सोहाइल त' का, दुआरे त' सोहाता।"

जे भारत के सांस्कृतिक परंपरा के तनियो-मनी जानकार होई ऊ जानत होई कि विधवा हो गइला के बाद नारी के सिन्होरा घर में ना रखाला। ओके पति के देह के साथहीं अगिन के आँच भा नदी-सागर के प्रवाह के सउँप दिहल जाला।***

गजल

जाई तऽ जाई हम कहाँ आगे
दूर ले बा धुआँ-धुआँ आगे

रोज पीछा करीले हम, बाकिर
रोज बढ़ जाला आसमाँ आगे

के तरे चैन से रही केहू
हर कदम पर बा इम्तहाँ आगे

एक मुद्दत से चल रहल बानी
पाँव के तहरे बा निशाँ आगे

मन त बहुते भइल जे कह दीं हम
पर कहाँ खुल सकल जुबाँ आगे

टूट जाला अगर हिया 'भावुक'
कुछ ना लउके इहाँ-उहाँ आगे

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

दिव्येन्दु त्रिपाठी

सशक्त व्यंग्यविधान के नियोजन: रावण के पाती

भारतीय काव्यशास्त्रीय परंपरा में तीन गो शब्दशक्तियन के चर्चा मिलेला- अभिधा, लक्षणा आ व्यंजना। व्यंग्य सम्बंधी रचनन में तीसरकी शब्दशक्ति-व्यंजना शब्दशक्ति के प्रमुखरूप से बेवहार होला। व्यंग्य लिखल सबके बूता के बात ना ह। ई बहुत गंभीर विधा ह जेकरा में पैठ आ गति बनावे खातिर बहुत पैना दृष्टि आ सधल-सक्षम भाषा चाहीं ना त ई खाली वाग्जाल बनिके रहिजाले। जमशेदपुर, झारखंड के निवासी श्री ब्रजमोहन राय ''देहाती'' जी भोजपुरी व्यंग्यविधा के एगो माहिर हस्ताक्षर बानी। इहाँ द्वारा लिखल गइल ''रावण के पाती'' नामक व्यंग्य संग्रह एगो व्यापक ताना बाना वाला संग्रह बा जेकरा में कुल बाईस गो व्यंग्य रचना बाडी स। एकरा में बहुत तरह के सामाजिक विसंगतियन, कुप्रथन, नारी उत्पीड़न, राजनैतिक भ्रष्टाचार आदि प कलम उठावल गइल बा। ई संग्रह के शीर्षक में रावन का नाम आइल अपने आप में काफी कुछ व्यंजित करत बा। आज परिवार, समाज आ राजनीति के अइसन दशा हो गइल बा जे रावनो अचरज में बा। बलुक ऊ आपन बढत कद फैलत प्रभाव से अगराइयो रहल बा। खुद लेखक के शब्द में- ''तब के रावन आ आज के रावन में फरक पड़ि गइल बा। लंका के रावन सीता हरण। नीयत में खोट ना। मनुजता के **मर्यादा** बदनाम ना भइल।'' ई कृति में कुल बाईस गो व्यंग्य रचनन के संग्रह बा जवना में से पाँच गो 'रावन के पाती' शीर्षक के अंतर्गत बा। ई पाँचो रचना पत्रात्मक शैली में बाड़ी स।। रावन चिठ्ठी लिखत बा रामजी का नाम से। दूगो चिठ्ठियन में भारत के राजनैतिक दुर्दशा के व्यंग्यात्मक वर्णन बा, दूगो में बिहार आ एगो में झारखंड के राजनैतिक उठापटक आ सामाजिक विसंगतियन के व्यंग्यात्मक चर्चा बा। व्यंग्यकार के नजर से विसंगतियन के कवनो विषय लुकाछिपी नइखे कैइ सकत। उहाँ का नजर सब तरफ बा। कतना बेधत अंदाज में इहाँ का लिखत बानी जे राजनैतिक सफलता खातिर गांधी के सहारा लिहल जाला। गांधी नामक ट्रेन प बइठला प लोग सीधे राजधानी उतरेला। गांधी शब्द वटवृक्ष दूध अस फायदा करेला। असहीं परती सरकारी जमीन दखल करे खातिर हनुमत लोग के इयाद आवेले। ई संग्रह में रावने के पाती के साथ साथ सुपनेखो के पाती बा। अंतिम व्यंग्य रचना बा- ''सुपनेखा के पाती''। सुपनेखा पारबती जी के चिठ्ठी लिखत बाड़ी। ई चिठ्ठी में औरतन आ खासकर बेटियन के उत्पीड़न, भ्रूणहत्या जइसन विषयन प व्यंग्यगर्भित चर्चा बा। पत्रशैली का अलावे एह में एगो संवादात्मक शैली में भी व्यंग्यरचना बा। ''आफत कब अइहें''

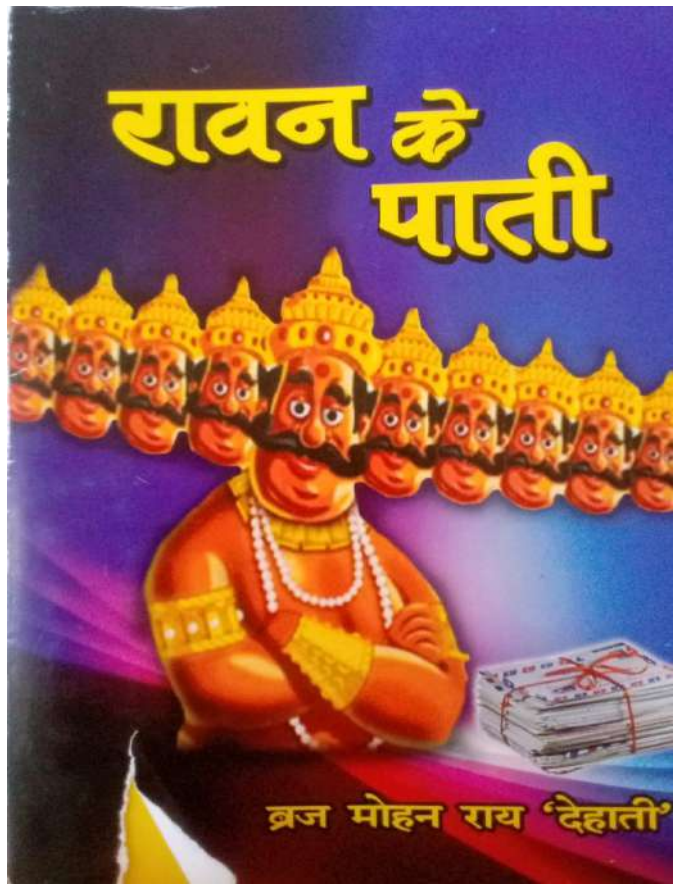

कृति: रावण के पाती
लेखक: ब्रज मोहन राय 'देहाती'
विधा: व्यंग्य संग्रह
प्रकाशक: जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद
प्रकाशन वर्ष: 2020
पृष्ठ संख्या: 112
मूल्य: 211 (फ्लैप-अजिल्द)

शीर्षक रचना में एगो सरकारी अधिकारी आ हनुमानजी के संवाद के चर्चा बा। ऊ अफसर हनुमानजी से प्राकृतिक आपदा भेजे खातिर चिरउरी करत बा जेकरा से कि सरकारी कर्मचारियन के कुछ उपरवारी कमाई-धमाई हो सके।

सब रचना सशक्त बाडी स। ''जोंक'' में जवन कि पहिलका रचना ह समाज में पसरल परजीवी प्रकृति के लोगन प करारा व्यंग्य बा। ''साँच के आँच'' में समाज आ परिवार सगरे मौजूद बेईमानी, झूठ आ कपट का साम्राज्य के तानाबाना देखावल गइल बाटे। ''बेटी कुँवारे रही'' में दहेज के समस्या चर्चित भइल बा। ''काल्ह ब्रम्हभोज होई'' में देह-प्राण के व्याज से उपेक्षित वृद्धावस्था आ खासकर मरणासन्न बुढापा के त्रासदी आ उपेक्षित-अपमानित स्थिति के चर्चा बा जवन कि आत्मकथ्यात्मक शैली में बा। ''भटक खुलि जाला'' में सेवा का नाम प राजनीति के दामन पकड़ के जनता के छले आ भरमावेवाला अरु जालफरेब रचेवाला लोगन के वर्णन बा। ''दिवाली में दिवाला'' में व्यापारतंत्र के तानाबाना प व्यंग्य बा। ''कोरोना के बायेन'' शीर्षक रचना में करोना के बहाने देश में फैलल भेदभाव, ऊँचनीच आ अन्य विसंगतियन प व्यंग्य बा। ''होश ठिकाने आई में'' दिल्ली जइसन बड शहरन में लड़कियन के असुरक्षित दशा प व्यंग्य-प्रहार बा।

एह कृति के भाषा बहुत समर्थ बा। शब्दसंयोजन आ वाक्यविन्यास बहुत मजल आ सधल बा। वाक्यंन में तीखा भेदेवाला हथियारन जेइसन बेधक क्षमता बा। देहाती जी भोजपुरी के आपन शब्दन-खाँटी शब्दन के खूब बेवहार केइले बानी। कुछ अइसन शब्द भी आइल बा जवन शहरी भोजपुरिया लोग नइखे जानत भा कम प्रयोग करत बा। ई किताब पढिके भोजपुरी शब्दन के सामर्थ्य आ ओकर विविधता के अंदाजा लागत बा। एह व्यंग्यकृति में देहाती जी प्रसंगोचित कहावतन आ मुहाबरन के ढेरिए प्रयोग कइले बानी जेकरा से एकर व्यंजनात्मकता खूब निखरिके सामने आइल बा। इहाँका पास भोजपुरी के कहावतन के समृद्ध भंडार बा। वर्तनी में रउवा खूब सजग बानी। ठेठ उच्चारण के व्यक्तकरेवाली वर्तनी के खूब प्रयोग भइल बा। ठेठ उच्चारणवाली वर्तनी साहित्यिक भोजपुरी में काफी कम लोग प्रयोग में ले आवेला। ई प्रयास सराहेजोग बा जवन कि गांवघर उच्चारण के काफी करीब आ आह्लादक बा। लेखक के पौराणिक चरित्रन का बारेमें खूब जानकारी बा। जगह जगह प पौराणिक चरित्रन के दृष्टांतरूप भा प्रत्यक्षपात्ररूप में उल्लेख भइल बा। राम, रावण, लक्ष्मण ,सुपनेखा, हनुमान, बलराम, साम्ब, लक्ष्मण जइसन चरित्रन के स्थान स्थान प जिक्र बा। सामाजिक, पारिवारिक आ राजनैतिक विसंगतियन के केन्द्र में रखत ई व्यंग्यसंग्रह में सब जरूरी सवालन के समेटे आ उठावे के प्रयास भइल बा। कवनो दोषी के बकसल नइखे गइल। जरूरत का अनुसार पक्ष आ प्रतिपक्ष सबके कठघरा में खाड़ कइल गइल बा। ई कृति भोजपुरी साहित्य के व्यंग्यधारा के समृद्ध करी अइसन हमार दृढ विश्वास बाटे। ***

गजल

फूल के अस्मिता बचावे के
काँट चारो तरफ उगावे के

ऊ जे तूफान के बुझा देवे
एगो अइसन दिया जरावे के

एह दशहरा में कवनो पुतला ना
मन के रावण के बा जरावे के

तय कइल ई बहुत जरूरी बा
माथ कहवां ले बा झुकावे के

आई हियरा के झील में अपना
प्यार के इक कमल खिलावे के

काम अइसन करे के जवना से
पीठ पीछे भी मान पावे के

जिस्म जर जाई एक दिन 'भावुक'
रूह के रूह से मिलावे के

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

डॉ.संध्या सिन्हा

रेखाचित्र संग्रह "सुरतिया ना बिसरे"

भोजपुरी साहित्य के विविध विधा से सजावे आ ओकर बढंती खातिर उत्जोग करे वाला सिपाही श्री रसिक बिहारी ओझा के लेखनी से रचल पुस्तक 'सुरतिया ना बिसरे' भोजपुरी में रेखाचित्र लिखे के एगो सुन्दर प्रयास बा।

'सुरतिया ना बिसरे' के सर्वप्रथम प्रकाशन जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् से जून,1964 मे भइल आ दुसरका संस्करण के 'ओझा प्रकाशन' से फरवरी, 1995 मे प्रकाशन भइल। दुसरका संस्करण में कुछ रचनन के बढावल गइल बा आ कुछ निकालल भी गइल बा। पुस्तक के समृद्ध करे के कोशिश कइल गइल बा। हमरा हाथ मे पुस्तक के दुसरका संस्करण बा, एकर प्रकाशकीय में लिखल गइल बा कि "नया संस्करण मे कुछ फेर बदल गइल बा। पहिला संस्करण क अंतिम रेखाचित्र 'चाक चलन के लेखा जोखा' के निकालि के नया छव गो रेखाचित्र निधी भईया, खाँटी राजपूत, जगतपती बैद्य, मनोरंजन बाबू, गोबरधन जी, रामनाथ जी सामिल कइल गइल बा। एह तरे दूसरकी संस्करण में कुल 28 गो रेखाचित्र बाड़ी स। प्रस्तुत समीक्षा में दूसरकी संस्करण के सामग्री के चर्चा हो सकी।

'सुरतिया ना बिसरे' भोजपुरी रेखाचित्र के दुसरका संस्करण के आवरण के चित्र से संग्रह के पात्र के चित्र-परिचय खुबे मजिगर मिल रहल बा। संग्रह के कुल 28 गो रेखाचित्रन में विविधवर्णी आभा लिहले पात्र बाड़न। प्रकाशकीय उदगार के बाद पहिलकी संस्करण के पाठ से प्राप्त विद्वानन के राय, प्रशंसा आ प्रतिक्रिया बा, जेमे पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, प्रिंसिपल मनोरंजन सिंह, डॉ. रघुवंश, प्रो. विवेकी राय, आ श्री गणेश चौबे जइसन विद्वानन के सुन्दर अभिव्यक्ति बा। रचनाकार के मार्मिक अभिव्यक्ति मे रचनाकार एक पुस्तक के लेखन के बीज कारण के बतावत आपन हिरदया निकाल के राख दिहले बाड़े। अपना छव मास के पुत्री के असामयिक मृत्यु प ओकर वियोग बखान करत ना बिसरे वाली पहिलकी सूरत ओहि नन्हकी बच्ची के सामने आवता जे पुस्तक के पढ़त खानी आद्योपांत बनल रहतो अइसन लागता जइसे उहे बचिया पाठक के हाथ धर के ले चलतिया आ सभ रेखाचित्रन के सैर करावतिया। आशीर्वचन साहित्य मनीषी डॉ. सत्यदेव ओझा जी के बा, जे पाठक के एह पुस्तक से उद्धरण सहित परिचय करावत पुस्तक के उपलब्धि बन जात बा। पुस्तक के भूमिका भोजपुरी साहित्य मनीषी प्रो. बच्चन

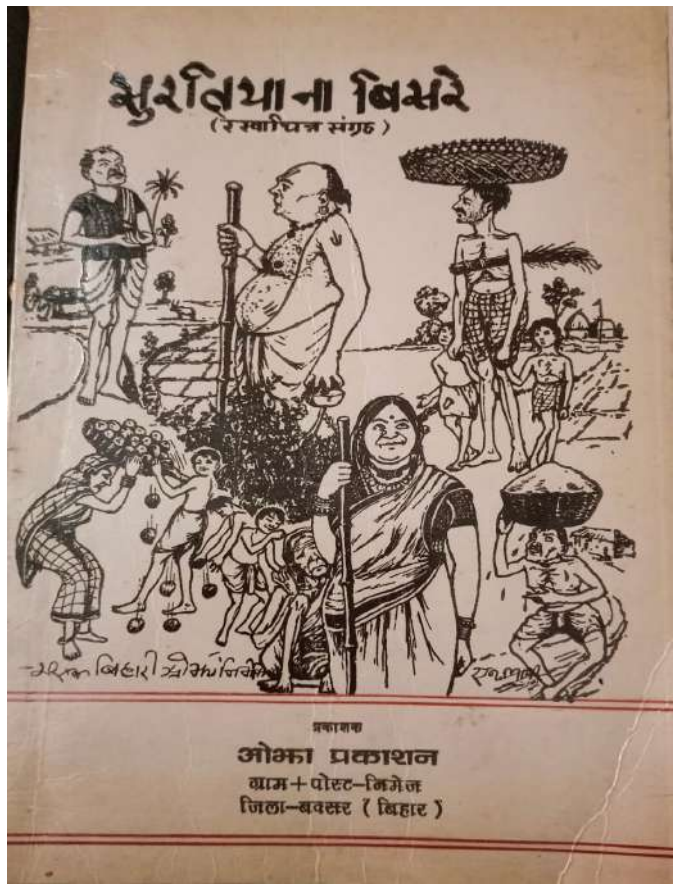

किताबः सुरतिया ना बिसरे (रेखाचित्र संग्रह)
प्रकाशकः ओझा प्रकाशन
लेखकः रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'
प्रकाशन वर्ष : 1995
मूल्यः 15 रुपये

पाठक 'सलिल' के लेखनी के चमत्कार बा, जेमे उन्हां के विधा के सुन्दर परिचय देत पुस्तक के सामग्री के उद्धरण सहित विस्तृत चर्चा कइले बानी रचनाकार के आपन बात दुनूं संस्करण के अलग अलग एह पुस्तक में संग्रहित बा। पहिलका संस्करण के 'आपन बात' में पुस्तक के रचना के प्रारंभ आ सम्पूर्ण रचना यात्रा के वर्णन बा जे आश्वस्त कर रहल बा कि ई कवनो एहिंग लिखल पुस्तक ना हवे बलुक भोजपुरी साहित्य के सांगोपांग विकास खातिर लिखल रचना बा। दुसरका संस्करण के भूमिका मे पुस्तक के सफलता के उदगार वर्णित बा।

रेखाचित्र प चर्चा कइल जाव त 28 गो रेखाचित्र मे सभ तरह के पात्र स्त्री-पुरुष, हर वर्ग के आ कई गो वर्ण से लिहल गइल बा। लेखक के समक्ष जवन पात्र जैसे आँखिन क सोझा आइल ओसहीं अवतरित भइल बा। पहिलका रेखाचित्र 'बुचुलिया' बा जवना मे एगो लइकी के सोगहग आ सजीव चित्र बा खांटी गाँव के पात्र के चित्रणे 'मोटका बाबा जी' मे गाँव के एगो बाबाजी के निश्छल मातृप्रेम के चित्रण बा। 'हाड़ के ठटर' में गरीब भिखारी के भूख ही रेखाचित्र के विषय बा। 'हथिया' मे बलिष्ठ तन में माई के कोमल मन के सुन्दर चित्रण बा। कई गो रेखाचित्र अपना प्रस्तुति में रेखाचित्र के कसौटी प खरा ना कहाई बाकिर ऊ सभ रचना भी अपना तरह के अनूठा रचना बा उदाहरण के तौर प 'बथान' जेमे मात्र दू गो मित्र मे झगरा बा। 'पगली' शीर्षक से एगो पति परित्यक्ता स्त्री के मानसिक संतुलन बिला गइल स्त्री के वेदना आ समाज मे ओकर बदतर दुर्दशा के मार्मिक चित्रण बा। 'बाबू रामसकल सिंह' रेखाचित्र के अगिला पात्र बाड़े जे पीढियन के अंतर के स्वीकार नइखन कर पावत। 'उन्हनी के फुदुक रहल बाड़ी स' मे बेटियन के जन्म प समाज के मुँह प कैसे करियरी छा जाला एकरे सुन्दर चित्रण बा। तीन गो परिस्थिति मे बेटी के जनम हो रहल बा आ तीनूं घर मे भिन्न भिन्न धर्म आ वर्ग के बा बाकिर बेटी के जनम प तीनूं घर मे मातम के माहौल हो गइल बा आ सबसे बेसी दुखद स्थिति त ओह माई के हो रहल बा जवना के कोखि से बेटी जनमल बाड़ी। 'लोग-बाग के चांप' में अनकहल प्रेम के अभिव्यक्ति बा जे व्यक्त नइखे करे के काहे कि चारू ओर से लोगवा देखतारे आ समाज के बन्हन केहू कइसे तूर सकेला। सामाजिक **मर्यादा** में कसमसात प्रेम के अनकहा कहाँ बा ई रेखाचित्र। पुरे संकलन मे कई गो अइसन रचना बाड़ी सं जे विशेष धेयान खींच रहल बाड़ी सं जेमे 'मनोरंजन बाबू' के नांव लिहल चाहब। एगो मुलाकात के प्रसंग बा आ मनोरंजन बाबू के व्यक्तित्व के हल्का परिचय मिल रहल बा 'जगतपती बैद्य' में भारतीय संस्कृति के जोगावे मे घर के मेहरारू के भूमिका के मजिगर चित्रण बा। 'गवर्नर साहब' आ 'राय साहब राधाकृष्ण राय' प्रभावशाली रेखाचित्र कहल जा सकता जेमे रेखाचित्र के लगभग सभ गुण लउकता। पात्र के बाह्य आ आंतरिक दूनूं गुण के साथे ओकर मार्मिक पक्ष के वर्णन बहुत सटीक ढंग से कइल गइल बा। 'उदेसा फुआ' मे संवाद शैली के सुन्दर प्रयोग से रेखाचित्र जीवंत बन पड़ल बा। 'सेठ जानकी लाल', 'रमेस भईया', 'बनरमुंहा', 'खून के सम्बन्ध', 'पगला तिवारी' इत्यादि सभ के सभ अपना आप मे विशेष रेखाचित्र बाड़े स। रेखाचित्र के कसौटी पर कुछ कमी गिनावल जा सकता बाकिर भोजपुरी के पहिलका रेखाचित्र के होखे के गौरव के राखत ई संग्रह आपन मान राख रहल बा।

पात्र हर वर्ग से बाड़े। सभे के रचनाकार बहुत नजदीक से देखले आ बुझले बाड़े बारीक नजर से ओकरा के समुझले बाड़े मर्म के बिन्दु ले पहुंचे के कोशिश कइल गइल बा। संग्रह मे भाषा के खांटी रूप पढनिहार के विशेष रूप से आकर्षित कर रहल बा। ***

गजल

आँख से कुछ कसर हो गइल
उम्र के कुछ असर हो गइल

बात पर बात खुलिये गइल
आज सभका खबर हो गइल

आँख से जमके बारिश भइल
साफ दिल के डहर हो गइल

लोर पोंछत बा केहू कहाँ
गाँव अपनो शहर हो गइल

अब चलल राह मुश्किल भइल
लोभी सभके नजर हो गइल

तहरा पीछे सुरीला रहे
सामने मौन स्वर हो गइल

अब अकेले कहाँ बानी हम
जब गजल हमसफर हो गइल

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

कनक किशोर

थेंथर मन जब बस में आ जाला तब स्वर्गानन्द भेंटाला

मनवा सुभावे से थेंथर होला। सत आ असत के बीच फँसल संसार माया ह। ओहि माया के अझुरहट बड़ा बरियार होला। जतने ओकरा के छोड़ल चाहब ओतने जोर से जकड़ले जाला। ओहि माया के अझुरहट में फंस के आदमी थेंथर हो जाला। दोष मढ़ा जाला मन के माथे। बाकिर मन थेंथर रहित त राम के अनुराग में आपन राग ना जोड़ित। सत्य के सारथी ना बनाइत। माया के मार ना भगाइत। गुरु के शरण में ना जाइत। थेंथरई ना छोड़ित। आ जो ई ना मानब त इहो सत ह कि आदमी थेंथर के राहि पर ले आवे के तरीका जानेला कबो पुचकार के, कबो दुत्कार के त कबो ठोक-ठेठा के। थेंथर मन जब बस में आ जाला त स्वर्गानन्द भेंटाला। चहुंओर आनंदे-आनंद। ओह आनंद में डूबल व्यक्तित्व में पैदा होला सच्चिदानंद आ ऊ व्यक्ति हो जाला स्वर्गानन्द। अइसने एगो समान्य मनई 'बिपिन बहार', जे थेंथर मन के बस में करि बन गइल 'स्वामी स्वर्गानन्द', से भेंट कराइब हम उनुकर हाले में प्रकाशित कृति भोजपुरी काव्य संग्रह 'थेंथर मन' के माध्यम से। अइसे बता दीं शुरूवे में कि रचनिहार खुदे कह ताड़न कि कविताई वासना ह, माया ह आ एगो थेंथरई ह। बाकिर रउवा जइसे-जइसे किताब में बढ़ब मन के थेंथरई नियंत्रित होत जाई, जग के खेला आ मेला प पटाक्षेप होत जाई, मन में पैदा होखे वाला माहुर के मरते देहि के भूला मन आत्मा से जुड़ जाई आ अंत में परम तत्व में विलीन हो मन के अस्तित्व बिला जाई। बाची खाली सच्चिदानंद आ थेंथरई परा जाई।

ई किताब तीन भाग में बटल बा। भाग एकः आसन थेंथरई, भाग दूः नादान थेंथरई आ भाग तीनः महान थेंथरई। तीनो भाग में कुल छोट-बड़ एक सई तैंतालीस गो कविता शामिल बा। हमरा बाँटे के रहित त हम भाग एकः जग के मेला-झमेला, भाग दू :धरम के राहि आ भाग तीन : खिलल कमल सहस्त्रार नाम दिहतीं। पहिला भाग मन के भौतिक थेंथरई से भरल बा। पहिला कविता 'डोम' एगो छोट कविता ह जेकरा पढ़ि हीरा डोम के कविता आँखि के सामने आ जात बा। एगो दलित के मन के प्रतिकार आ प्रतिरोध सामने आ जात बा। रउवो देखीं -

टुकी-टुकी कंकालन में
एगो खोपड़ी उनको रहे
जे जिनिगी भर पीयलें
खून डोमवा के,
एक ब एक दबल टीस उफनल
खरहरा बनल किरकेट के बल्ला
खोपड़ी के गेना बनाके मरलस ठक!

सामाजिक विद्रूपता आ दलित विमर्श पर बड़ बाति करत बा ई छोट कविता। उसिनाइल आह' पीड़ा भरल मनई के जिनिगी में भोर के आस मरे नइखे देल चाहत त कहता -

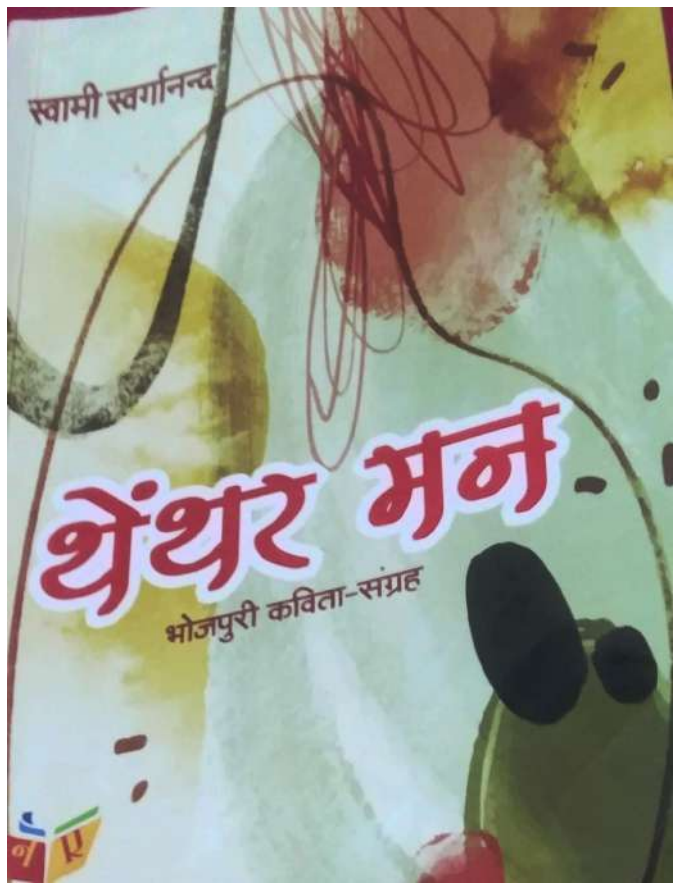

किताब : थेंथर मन
रचनाकार : स्वामी स्वर्गानन्द
विधा : कविता
प्रकाशक : नवजागरण प्रकाशन, नई दिल्ली
पृष्ठ : 140
मूल्य : 250/

आ कि नसे नस में
पसरत पीरा आ
बुकनी-बुकनी करेज में से
मुस्कियात कवनो किरिन?

आदमी बा लउकत बाकिर आदमीयत ना आजु के समाज में। 'डाह' कविता में लेखक बड़ी सुन्दर ढंग से रखले बाड़न एह के –

आदिमी के बढ़त बा डाह आदिमी से
कुकुरो बा कमे कटाह आदिमी से।

'बाबागिरी कब ले' में आजु के धरम समाज में उपजल कुकुरमुत्ता जस बाबा लोग के डब्बिया गोल करत –

बाबा के बाबागिरी कब ले?
चोरी धरात नइखे तब ले।
जहिया धरा जइहें बाबा
बाबा के गोल होई डाब्बा।

'गाँधी जी' में गाँधी के बहाने आजु के सांच से मुलाकात करावत बा रचयिता –

सगरो आतंक के जाजाद देख के जी
चोरी घुसखोरी के खाद देख के जी
लमहर अंगरेजी के लाद देख के जी
देसवा के आपन आजाद देख के जी
देखऽ देखऽ भगलें लजाइल बाड़ें गाँधी जी
बीचे बाजार भकुआइल बाड़ें गाँधी जी।

लेखक कहीं बेरोजगारी, कहीं भ्रष्टाचार, कहीं आदमियत, कहीं बेटी, कहीं माई, कहीं भोजपुरी, कहीं सत्ता में आरजकता आ सामाजिक विद्रूपता पर करेड़ नजर रखि ओकर गाथा गावत बा त कहीं ओह समस्यन के निदान टोहत-टकटोरत नजर आवत बा।लेखक के खून में माई भाषा भोजपुरी के प्रेम बसल बा तनि भोजपुरी भाषा आ भोजपुरियत के सुगंध देखल जाव–

चिरई के पांख नियन
मिरगा के आँख नियन
चिक्कन मोलायम बा भाषा भोजपुरी,
सगरी जहान में
इंगलिस तुफान में
बेंत नियन कायम बा भाषा भोजपुरी।

आगे सीखो देत बा कविता 'भाषा भोजपुरी'–

डाकडर इंजीनियर भा
रउवा ओकील होखीं
भोजपुरी बोलला में हीन भाव तेजीं,
फगुआ दिवाली भा
कवनो तेवहार होखे
चिट्ठी बधाई भोजपुरिये में भेजीं।

भौतिक दुनिया के नीक-बाउर चलन,कांट – कुस भरल राहि,मनई के मन में बइठल मइल मन के थेंथर बना देला। मनई के मन में दबल अध्यात्म के बिया ई देख अंकुरित होके मन के थेंथरई के रोकल चाहेला आ रोके के प्रयास करेला। भौतिकता के खेत में भरखर गुरुवाणी आ नाम के सहारा मिलते अध्यात्म के बीज फूट पड़ेला। माया के दुनिया आ लेखक के शब्द में आ एगो प्रार्थना देखल जाय –

हे भगवान अइसन कर दीं
ई जे गड़हा गुड़ही भइल बा
ऊँच-नीच के करेजवा में
एह के भर दीं।
....
माया में आदिमी
कीरौंधा वाला कुकुर
चाटेला आपन घाव
पीयेला आपने खून
पावेला खूब सुकून
आसीरबाद रहे माथ
जय तिरलैकीनाथ।

नादान थेंथरई शुरू होते 'अनदेखा ईश्वर' में बड़ ज्ञान के बात –

साधु संत औ वेद ग्रंथ ने शब्द जाल है फेंका
भिन्न-भिन्न ज्ञान सिखावे सबहीं,कोऊ में नहीं एका।
धरम पंथ के नाम पे जग में, जगह-जगह है ठेका
धरम करम के भरम भूत में,आन्हर हुए अनेका।

'जवानी में गोरिया' में निर्गुण के महक देखीं –

जवानी में गोरिया मारेलु खूब मटकी
अक्किल हेराई बुढ़ापा जब पटकी।

पाँच सखी संगे खूबे हंसि-हंसि के
धरती दबावत चलेलू दरमस के
संउसे परान जब घोंघा में अंटकी
भरम भूत भांवर चौरासी में भटकी।

अध्यात्म के ऊलझन –

द्वैत-अद्वैत झुलूआ में झूलऽता परान
भगवान हो,
कवना के बुझीं परम ज्ञान
(गेयान के झुलुआ से)

आपन सेवा के आपन साहेब के सौंप लेखक मन के उद्गार –

अगम अकाल महाकाल मोरे साहेब
कटि जइहैं पांच फंसरी के रसरी।
हमार नोकरी हो हमार नोकरी
सरगवा में लागल हमार नोकरी।
(हमार नोकरी)

एह भाग में देह के दुनिया में भरमत मन के सत के सच्चाई से साक्षात्कार करवात अध्यात्म के ऊंच-खाल जमीन पर चलत-विचरत मनई के मनोदशा के बोध शब्द के गझिन बुनावट में टाँकल गइल बा बड़ा सरल शब्दन में। कहीं लेखक जीवन-मृत्यु प त कही सत के सार बतावत नजर आ रहल बा आ कहीं अध्यात्म के बल पर दुनिया बदले के साहस राखत बा।आजु के समाज के नंगा करके रख रहल बा आपन कविता में तब त कहत बा –

जनम त भइल हमार बाभन के कुल में
रहन सुभाव बाकि हो गइल डोम के।
सोंचिला हर घरी किनका के नोंच लीं
करेले जीभ बाकि जप हरि ओम के।

धरम के दोकान के सच्चाई बतावत नादान थेंथरई में वर्णित सत लहरा के रचनाकार नादान थेंथरई कह सकेला हम ना कहब,हम एह के धरम के राहि कहब।

महान थेंथरई पर बात हम कुछ कहे के औकात नइखी रखत। महान थेंथरई में परम तत्व के बात होला, गुरु के बाति होला,ओह प्रकाश के बाति होला जहाँ तम ठहरबे ना करे,एह पर प्रमाणिक बाते होखे के चाहीं जे एगो महान व्यक्तित्वे कर सकेला।हम इहां लेखक के कुछ रचना जरूर रखल चाहब,देखल जाय –

आँख अछइत रहे अन्हार जिनगी
आँख मूंदनी तऽ जाके आँख खुलल।
..
केहू कहल बाटे बहुरूपिया,केहू कहे पाखंड
कृपा भइल गुरुदेव के,भइनी स्वर्गानन्द।
....
त्रिशंकु बनावे के बूता वाला विस्वामित्र
मेनका के मध से मधिम होई गइले।

माने कि खतरा टरे ना, परमोनंद भूला जाले कामनी का फेर में। कनक माने भले सोना होखत होखे बाकिर कनक-कामनी माहुरे ह भौतिके ना अध्यात्मो खातिर। अंत में लेखक के रचनाकार के प्रति भाव के ओरि ध्यान खिंचल चाहब –

बिरले ही कबि के, कबीर के करेज मिले
करूनानिधान कृपा पावले कलमिया
तेगा तेरूवरवो से धार तेज तगड़ा कि
तीनों ताप तुरत मेटावले कलमिया।

एगो पढ़े जोग सुनर किताब जेह में माया के संसार आ अध्यात्म में एक संगे डूबकी लगावे के मिली। मौका मिले त जरूर डूबकी लगाईं।
***

पुस्तक समीक्षा

डॉ. शंकर मुनि राय 'गड़बड़'

एगो अनुसंधानी शोध ग्रंथ : भोजपुरी काव्य धारा में हास्य-व्यंग्य

मनहूसियत के एह महादौर में यदि केहू के चेहरा पर हंसी के एगो रेखा लऊक जाए त ऊ बड़भागी अदिमी कहाई। हंसे वाला त बड़भागी कहइबे करी, केहू के हंसत देखेवाला भी कम भाग्यशाली ना कहाई, काहे कि हंसी देखला के मतलब ई भइल कि हंसे के तइयारी शुरू। माने हंसी एगो सुखद, संक्रामक अभिव्यक्ति ह। अइसन अभिव्यक्ति जवना के पावे खातिर-"जनम-जनम मुनि जतन कराहीं...!" ई एगो अलौकिक सुख ह। एकरे खातिर बड़े-बड़े पोथी-पतरा के रचना कइल गइल बा। एह हंसी खातिर लोग युग-युगांतर से कलम चलावत आ रहल बा। भोजपुरी के कविताई में हंसी आ व्यंग्य के कइसन इतिहास बा एकरा बारे में सुदर्शन प्रसाद राय के अनुसंधानी काम देख के सब केहू के आनंदित होखे लाएक बा।

अदिमी के सबसे सुखकारी क्षण तब लउके ला जब ऊ हंसेला। ई हंसी अदिमी के भितरिया चीज ह। ई काहें आवेले एकर रहस्य बड़ी गूढ़ बा। मन के भीतरे दूगो हिस्सा बा, एगो सुखकारी आ दोसरिका दुखकारी। सुखकारी मन हंसी देखावेला आ दुखकारी मन मुंह लटका देला। कहल जाला कि सुख आ दुख के अनुभव करे के गुन अदिमी के जनमे संगे उपहार में मिलल ह। बाकिर हमरा बुझाला कि अदिमिये काहें? ना, सब जीव के ई जनमें से मिलल बा। सुख-दुख आ हंसी-रोवाई के गुन सब जीव में प्रकृति से मिलल बा। हमनी के नजर जतना दूर जाला, ओतना समुझी लाजा। जानवरन के चेहरा देख के अदिमी बता देला कि ओकर का हालचाल बा। रोंआं गिरवले बा त दुखी आ कान फरकवले बा त खुश बा। बाकिर अदिमी आ जानवर के हंसी में बहुते अंतर बा। जानवर के हंसी-रोआई ओकरा शरीर के सुख-दुख पर आधारित होला जबकि अदिमी के हंसी-रोआई ओकरा दिमागी सोच में बसेला। अदिमी आ जानवर में इहे फरक होला।

एहिजा विचारे के बात ई बा कि आखिर अइसन का बात होला कि अदिमी हंसेला! एकर उत्तर मनोविज्ञान आ शरीर विज्ञान दूनों में बा। मनोविज्ञान कहेला कि हमनी के जइसन सोचबजा ओइसन हो जाइबजा। दुनिया में सुख-दुख बस अपना-अपना सोच के भरम ह। एक अदिमी खातिर जवन सुखदाई होला, दोसरा खातिर दुखदाई हो सकेला। हमनी के जवना के हंसी कहिलाजा ओकरा के अंगरेजी में ह्यूमर कहल गइल बा। एकर शब्दकोशीय अर्थ होला-हास-परिहास, हंसी-मजाक भा चिहुलबाजी। एकरा के एगो रस भी कहल गइल बा। रस के माने होला जवन तरल होखे आ ओकरा में बहे के स्वभाविक गुण होखे। जीव के शरीर में जब ई रस बहे शुरू होला तब ओकर प्रभाव जीव के हाव-भाव में लउके लागेला। हमनी के भारतीय वांग्मय में एह शरीरी रस के 'त्रिदोष' कहल गइल बा, जवना के वात, पित्त आ कफ कहल

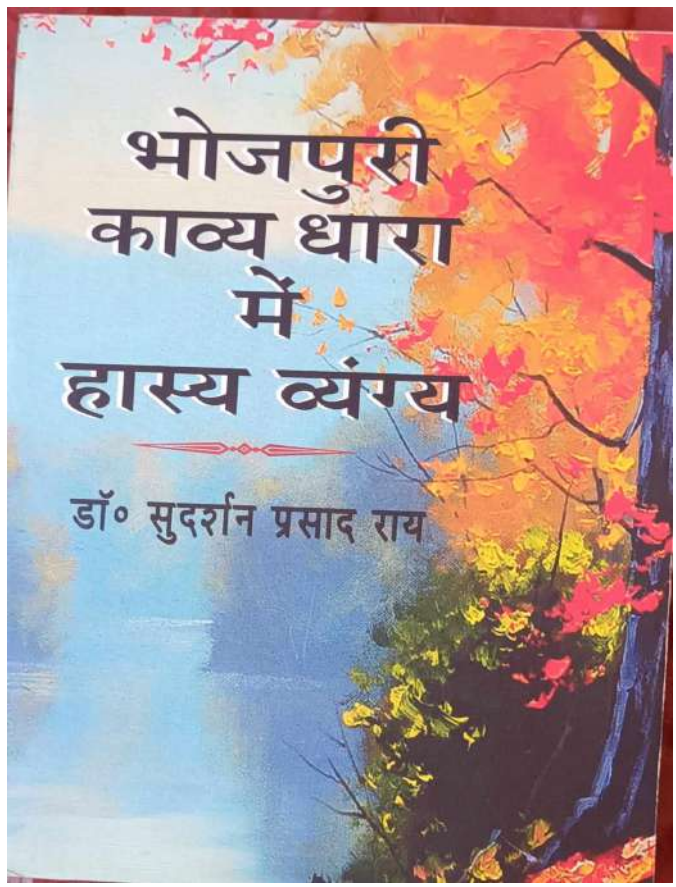

किताब : भोजपुरी काव्य धारा में हास्य-व्यंग्य
लेखक : डॉ. सुदर्शन प्रसाद राय
प्रकाशन वर्ष : 2021
प्रकाशक : शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली
कुल पृष्ट : 288
मूल्य : 400/

गइल बा। लैटिल शरीर-विज्ञान में एकरा चार गो अवस्था के जिकिर बा-रक्त, कफ, पित्त आ उदासी। अदिमी के स्वभाव एही सब पर निर्भर करेला। जेकरा में जवना के मात्रा अधिका होला ओकरे नियन लउकेला।

हमनी के अपना जवना गुण के हंसी कहतानीजा, ओकरा से मिलता-जुलता एगो इतावली शब्द बा-हूमस। एकर माने होला भीतरी गीलापन। ई भीतरी गिलाई सबका में बराबर ना होखे। जेकरा में ढेर होला ऊ ढेर हंसमुख होला, नाही त मनहूंस होला। मतलब कि जेकरा में जादा गिलापन ऊ हूमरस अदिमी कहाला। अब साफ हो गइल कि हंसी के मुख्य कारन ह मन के सोच-विचार के दशा आ शरीर के भीतर के रसस्राव। भोजपुरी में प्रचलित 'हुमस' शब्द इतावली के 'हूमस' के ही दोसरिका रूप मानल जाई। एही से कहल जाला-'कवनो काम करे खातिर अदिमी में हूमस चाही, हूमस नइखे त कवनो काम ना होई।' अब हम एहिजा ओह हंसी के बारे में चरचा करब जवना के बारे में साहित्य में रस मान के विचार कइल गइल बा।

साहित्य में जवना हंसी के चरचा कइल जाला ऊ शरीर विज्ञान के हंसी से तनिका अलगे होला। काहे कि एकरा में हंसे-हंसावे खातिर रचनाकार के मेहनत करेके परेला। ऊ अपना कलमाकारी से पढ़वइया-सुनवइया के दिमाग में एगो सूई लगावेला, अइसन सूई जवन हूमस जगावे। ई कवनो आसान काम ना ह! बहुते कठिन आ मगजमारी के काम ह। सब रचनाकार लोग के बस के चीज ना ह ई। साहित्य में हंसे-हंसावे खातिर पढ़वइया-सुनवइया के दिमाग में घुसे के परेला, आ बहुते चालाकी से शब्द आ शैली के मदत से सेंधमारी करे के परेला। जब रचनाकार दोसरा के दिमाग में अपना हंसोड़ी औजार के साथ घुसपैठ करेला तब ओहिजा अइसन चित्र-नक्षा बनेला जवना के देखला पढ़ला से 'हुमस' जागेला। नाट्यशास्त्र में आचार्य भरत के कहनाम बा कि हंसी के कारन ह विकृत आकार, वेश, आचरन, अभिधान, बानी आ अलंकार। एहिजा ध्यान देबे के बा कि भरत के विचार एकदम से साहित्यिक सोच पर ही आधारित बा। नाटक रचना विधा ह आ ओकरा में हंसावे खातिर इहे सब उपक्रम कइल जाला।

आचार्य भरत के बाद मध्यकालीन काव्यकार पद्माकर हंसी के बारे में अपना 'जगद्विनोद' में लिखले बाड़न कि-

थाई जाको हास है, बहै हास्यरस जानि।
तहं कुरूप कूदब कहब, कहूं विभाव ते मानि।।

हंसी के रसविषयक विवेचना अपना देश में 18वीं शताब्दी तक जवना ढंग से चलत आइल रहे ओकरा में एकाएक बदलाव भइल पश्चिमी साहित्य के प्रभाव से। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी अपना 'रसमिमांसा' में हंसी के एगो मन के सुखात्मक भाव-वेग लिखले बानी। उहां के कहनाम बा कि-हंसी मन के एगो वेग ह। बाकिर भाव के रूप में ओकर जवन स्थान मिलल बा ओकरा अनुसार आश्रय मिलते ई सुनवइया-देखवइया के रसदार बना देला। मतलब ई भइल कि साहित्य में हंसे-हंसावे खातिर सामान्य से अलग बिम्ब रचल जाला। बाकिर एकर मकसद खाली हंसले तक ना होखेला। एही से हास्य के संगे एगो अउरी शब्द व्यंग्य जोड़ के बोले के प्रचलन बन गइल बा।

मूल रूप से व्यंग्य एगो स्वतंत्र विधा ह, बाकिर ई हास्य के साथ चलेले त ज्यादा मजेदार हो जाले। व्यंग्य के बारे में डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी जी अपना 'व्यंग्यालोचन' में लिखले बानी कि ई एगो विशेष समाजधर्मी प्रेक्षण विधि, मानसिक भंगिमा, रचनात्मक अभिव्यक्ति ह, जवन अंतरविरोध से उपजे ला। एकर लक्ष्य अदिमी भा व्यवस्था के कमजोरी के आलोचना करके ओकरा के बदलल होला। भोजपुरी साहित्य में हास्य-व्यंग्य के जवन रूप-रंग बा ऊ गद्य आ पद्य में अगले-अलगे बा। गद्य में ई लोकसाहित्य में पहिले आइल बा आ एकर बहुते रंग-रूप बा ओह में। लोकसाहित्य के कथा-कहानी, नाटक, लोकोक्ति आदि में बहुते रहस्यकारी श्रृंगारी हास्य-परिहास परक, व्यंग्य परक रचना लउके ला। गीत-गवनई में एकर अलगे श्रृंगारिक हास्य-व्यंग्य लउकेला। एकरा बाद संत साहित्य में जवन हास्य बा ओकरा में हंसी से जादे कटाक्ष बा जवना के व्यंग्य कहल गइल बा। सुदर्शन प्रसाद राय के एह अनुसंधानी किताब में भोजपुरी कविता में हास्य-व्यंग्य के रंगरूप पर मजिगर काम भइल बा।

कुल आठ अध्याय के एह किताब में पहिले हास्य के अवधारणा के शास्त्रीय रूप के उजागर कइल गइल बा। ओकरा बाद भोजपुरी कविता में हास्य-व्यंग्य के शुरुआती दौर के खोज करत संत कवि कबीर से लेके बीसवीं शताब्दी तक के लगभग दू दर्जन कवियन के रचनात्मक काम के समीक्षात्मक विश्लेषण भइल बा। ई काम कवनो आसान नइखे, काहे कि भोजपुरी के सब रचनाकारन के एके सइला में ना जोतल-हांकल जा सकेला। रचनाकारन के हास्य-व्यंग्य रचना के परिचयात्मक विश्लेषण आ ओकरा भाव सौन्दर्य पर कलम चला के समाहार करेके काम बड़ी मेहनत से कइल गइल बा। भोजपुरी के लगभग सब रचनाकार लोग में तनिमनी हास्य आ व्यंग्य के रचना मिल जाई। बाकिर जब अनुसंधानी काम होला तब रचना के मात्रा के ध्यान में राख के छिनिगावे के परेला। एकरा खातिर कवनो ना कवनो मानक बनावल जाता। एह किताब में ओही रचनाकार लोग के शामिल कइल गइल बा जेकर पहचान हास्य-व्यंग्यकार के रूप में हो चुकल बा।

कवनो भी रचना के पीछे युग-परिवेश आ समाज-संस्कृति के प्रभाव रहबे करेला। भोजपुरी कविता के हास्य-व्यंग्य में भोजपुरिया समाज आ संस्कृति के बहुते हाथ बा। सांच पूछल जाय त हमार कहनाम बा कि भोजपुरी के संस्कारी विधाने में हास्य आ व्यंग्य के पुट बा। बोली-बानी आ टोन-टोनाही से लेके मेहना-गाभी के जवन बोलचाली शैली एह भाषा आ संस्कृति में बसल बा उ रचनाकारन के बहुते काम आइल बा। एह सब पर एक अध्याय एह किताब में दिहल गइल बा।

अंत में एक बात, "भोजपुरी साहित्य में हास्य-व्यंग्य" किताब के भूमिका में डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी जी लिखले बानी- "भोजपुरी साहित्य और हास्य-व्यंग्य लेखन पर भविष्य में कोई भी अनुसंधान और अध्ययन डॉ. शंकर मुनि राय 'गड़बड़' के इस शोधग्रंथ की परिक्रमा के बिना गड़बडी पूर्ण ही होगा।" एकर मतलब ई कि जइसे 'भोजपुरी साहित्य में हास्य-व्यंग्य' किताब बहुते उपयोगी अनुसंधानी किताब बा ओसही सुदर्शन जी के ई किताब भोजपुरी कविता के अनुसंधानी लोग खातिर बहुते उपयोगी बा। ***

पुस्तक समीक्षा

पीयूष चतुर्वेदी

जनार्दन गीता एक नजर में

जीव के जोनि आ संस्कार ओकरा अपना पूर्व जनम के करम-कमाई के ही जोड़-घटाना से मिलेला। आजुओ एह संसार में धरम-करम में सरधा राखे वाला लोगन के अभाव नइखे। तबे न जनार्दन **चतुर्वेदी** जी एगो चिकित्सक भइला के बादो "श्रीमद्भगवद्गीता" के ऊपर आपन कलम चलवले बानीं। ई सोचि के कि एकरा के अधिका से अधिका लोग पढ़ि पावे आ समझि पावे। जरुर उहाँ के दिमाग में ई बाति आइल होई कि एके समझे खातिर एकरा के सरल-सरस आ सहज भाषा में लिखल जाव। एही से उहाँ के एकरा के अपना माटी के बोली "भोजपुरी" में रचले बानीं। सचहूँ जनार्दन **चतुर्वेदी** जी द्वारा रचित "जनार्दन गीता" के छंदन के पढला के बाद एह बात के एहसास होत बा कि उहाँ के अपना लक्ष्य के पावे खातिर कवनो कोर-कसर छोड़ले नइखीं। अतना सहज आ सरल भोजपुरी भाषा के छंदन में "श्रीमद्भगवद्गीता" के उकेरल गइल बा कि एकर भाव आ अर्थ समझे खातिर अलगा से दिमाग पर जोर देबे के जरुरत बुझाते नइखे। हँ, एके पढ़ला के बाद ई अचरज जइसे हमरा भइल बा ओइसहीं आपो सब के जरुर होई कि आखिर में भोजपुरी के अतना सब्दन के चुनाव उहाँ के कतना मेहनत के बाद कइले होखबि। अतना के बादो उहाँ के कतहूँ भोजपुरी के मरजादा के उलंघन नइखीं कइले।

हम व्यक्तिगत रूप से भी उहाँ के जानत बानीं। होमियोपैथिक चिकित्सा-जगत में उहाँ के काफी चर्चित आ व्यस्त चिकित्सक मानल जानीं। जरुर उहाँ के लगे समय के आभाव होत होई, तबो उहाँ के एह अभाव में भी अपना भाव के गति देबे के प्रयास कइले बानीं आ एह प्रयास में उहाँ के सफल भी बानीं। एकरा खातिर हम उहाँ के कोटि-कोटि साधुवाद से नवाजत बानीं।

अबहिन ले हम इहे जानत रहली हँ कि जवना गीत में माई के हियरा के हिलोर, बहिना के राखी के प्यार, भउजी के ठिठोली, दादी के लोरी, खेत-खरिहान के आँखि-मिचोली, कवनो भक्त के भाव आ दीन-दुखियारी नगर-देहात के दीदार ना होला, ऊ गीत, गीत ना होला। लेकिन आजु हमरा ई कहे में तनिको संकोच नइखे कि जनार्दन जी अपना रचना के माध्यम से "श्रीमद्भगवद्गीता" के भोजपुरी में अइसन गीत बना देले बानीं कि ओके महल से मड़ई ले, खेत से खरिहान ले कतहूँ प्रेम से गुनगुनाइल जा सकेला।

'जनार्दन गीता' के गलियारा से गुजरला पर जनात बा कि जनार्दन जी गीत उकेरत बानीं। "जनार्दन गीता" में "श्रीमद्भगवद्गीता" के पहिला अध्याय के पहिला श्लोक धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय॥ के रचनाकार द्वारा भोजपुरी में लिखल

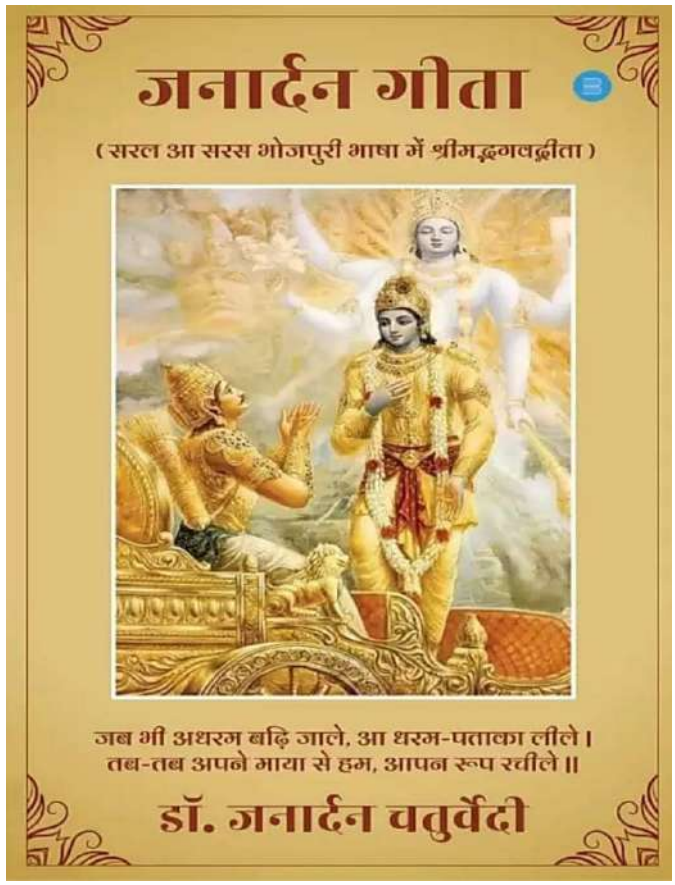

पुस्तक : जनार्दन गीता
लेखकः डॉ. जनार्दन चतुर्वेदी
विधा : भोजपुरी छंद
प्रकाशक : ब्लूरोज पब्लिकेशन्स
प्रकाशन वर्ष : 2006 अउरी 2022
पृष्ठ संख्याः 112
पेपर बैक मूल्य : रुपया 250 /-

छंद –

हे संजय ! हमरा से बतावऽ, तब उहवाँ का भइले।
धरम भूमि कुरु के मैदाने, जब दूनो दल गइले।
करबि लड़ाई एक-दूजे से, अहंकार मन धइले।
हमरे अरु बबुआ के लरिका तब आगे का कइले ? 1.1

आपके 'जनार्दन गीता' के गलियारा में अंतिम छोर तक जाए बदे प्रेरित करत बा। बाकिर तनी आप-ओमे डूबीं, पाइब कि भौतिक-अभौतिक दूनों स्तर पर रचनाधर्मी संस्कार के धनी रचनाकार में अमूर्त चित्र उकेरे के गजबे सामर्थ्य बा। एह पंक्तियन से ही एह किताब के मूल भावना के झलक मिलत बा। जनमानस के भाषा में लिखल 'जनार्दन गीता' में एह बात के खास ध्यान दिहल गइल बा कि एक ओर जहाँ एकरा के रोचक, सरस और सरल भाषा में रखल जाऊ, ओहिजे दोसरा ओरि एह में गीता के मर्म जस के तस रहो।

कुरुक्षेत्र के मैदान में जब 'जनार्दन' ज्ञान-करम-सन्यास योग समझावत 'अर्जुन' से कहले कि–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम॥

ओकरा के रचनाकार 'जनार्दन गीता' में सरल आ सरस भोजपुरी में छंदबद्ध लिखत बा कि 'जब भी अधरम बढ़ि जाले, आ धरम-पताका लीले। तब-तब अपने माया से हम, आपन रूप रचीले।' एह छंद के पढ़ि के रचनाकार द्वारा रचना से अमूर्त चित्र उकेरे के सामर्थ्य के **अद्भुत** परिचय प्राप्त होता। 'जनार्दन गीता' पुस्तक के कवर पेज पे ई छंद पुस्तक के अउरी आकर्षित बनावत बा। जनार्दन जी "जनार्दन गीता" में कर्म के संदेस दे के 'जनार्दन' लेखा हाँथ में चक्र सुदर्सन भलहीं ना ले ले होई, बाकिर उहाँ के कलम के कोर त ई कहते बा कि–अध्यात्म जीवन के खलिसा अंध स्वीकृतिये ना हटे, बोध से जियले जिनगी हटे आ उहे अध्यात्म हटे।

'जनार्दन गीता' में ना कहीं भटकाव बा, आ ना अटकाव। भलहीं आजु भोजपुरी के कवनो सर्वसम्मत मान्य तस्वीर ना होखे बाकिर ओकर रूप स्पष्ट, सहज आ सचेत होखहीं के चाहीं। एह के निखारे में रचनाकार के भरपूर सफलता मिलल बा। पूर्वी उत्तर प्रदेस आ पछिमी बिहार के भोजपुरी 'जनार्दन गीता' में झलकत बा ओरी ओकर प्रवाह छलकत बा।

महामाई से हम निहोरा करत बानि कि जइसे तुलसी बाबा के अवधी में लिखल रामचरितमानस घर-घर में बा ओइसही भोजपुरी में लिखल "जनार्दन गीता" घर-घर में परायण कइल जा सके काहे कि ई हमनी के माटी के बोली में बा। हमनी के बीच हरदम ई बाट जोहात रही कि रचनाकार के कलम से भोजपुरी साहित्य के समृद्ध बनावे खातिर अइसने मोती अउरी उकेरल जाई। अउरी का कहीं ! रउओ सब पढ़ीं ताकि भोजपुरी साहित्य के अनमोल रतन से रउआ सब अछूता ना रहीं। बस अतने।***

गजल

अबकी दियरी के परब अइसे मनावल जाए
मन के अँगना में एगो दीप जरावल जाए

रोशनी गाँव में, दिल्ली से ले आवल जाए
कैद सूरज के अब आजाद करावल जाए

हिन्दू, मुसलिम ना, ईसाई ना, सिक्ख ए भाई
अपना औलाद के इन्सान बनावल जाए

जेमें भगवान, खुदा, गॉड सभे साथ रहे
एह तरह के एगो देवास बनावल जाए

रोज दियरी बा कहीं, रोज कहीं भूखमरी
काश! दुनिया से विषमता के मिटावल जाए

सूप, चलनी के पटकला से भला का होई
श्रम के लाठी से दलिद्दर के भगावल जाए

लाख रस्ता हो कठिन, लाख दूर मंजिल हो
आस के फूल ही आँखिन में उगावल जाए

आम मउरल बा, जिया गंध से पागल बाटे
ए सखी, ए सखी 'भावुक' के बोलावल जाए

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

सुशील कुमार शर्मा

भोजपुरी गीता : भोजपुरिया लोगन के धरोहर

"जेकरा के श्री ब्रह्मा पूजे, पूजे इन्द्र वरुण भगवान।
धरि धियान शिवशंकर पूजे, करे हवा बहि के जयगान।
सामवेद के ज्ञानी जेकर, गा के ध्यान लगावेलें।
जोगी लोग समाधी में, हरदम जेकरा के ध्यावेलें।
जेकर अंत न जाने केहू, सुर अरु असुर देव नर नारि।
वो ही देव के नमन करींलां, पूजा में हे कृष्ण मुरारि।"

'भोजपुरी गीता' डॉ. रामसेवक 'विकल' के रचना हऽ। सन १९६४ में आइल मन में गीता के भोजपुरी पद्यानुवाद करेके विचार,आ साथी साहित्यकारन आ आचार्य विनोबा भावे आ ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य के असीस से प्रेरित होके सन १९६८ तक पूरा भइल। सन १९७९ में पहिलका संस्करण निकलल तऽ जगद्गुरु शंकराचार्य के लिखल भूमिका से अउरी सम्मानित भइल।

भोजपुरिया लोगन खातिर ई रचना बड़ी लुभावेवाली बिया। ईहां भाषा नाही भासा खातिर चुनौती बाऽ। भोजपुरी गीता ऊ लोगन खातिर असीस बा जे धरम-करम, आध्यात्मिक विचार रखेवाला बा। बाकिर जे बचपन के कम पढ़ाई के बादे से अपनी महतारी भासा के भरोसे बाऽ, ऊ लोगन खातिर भी बिया। ई रचना ऊ लोगन खातिर भी बिया जे खूब पढ़ल -लिखल आ तमाम भाषा आ बोली के विद्वान बा, बाकिर महतारी भासा के देस से दूर रहिके बिसरत बा। तऽ ई कितबिये ओके अपनी महतारी भासा से जोड़ी। आ अपनी माटी के गंध के महसूसे खातिर झिंझोड़ी। हो सकेला कुछ लोग एके पढ़िए के भकुआ जाई।

महाभारत के जुद्ध में जब रणभूमि में पहुंचिके अर्जुन के मन में सांसारिक मोह के कारन जुद्ध से विरक्ति भइल-

'बेटा, बाप, गुरु आ बाबा, मामा, ससुर अवर साला।
नाती, संबंधी हे केशव ! इहे सबे लड़ेवाला ॥
कुल के छय भइला से केशव, धरम पुरान खतम होई।
धरम नष्ट जब हो जाई तब, कुल के पाप दबा देई॥
पाप ढेर जब बढ़ि जाई तब, कुल नारी भ्रष्टा होईहें।
नारी के दूषित भइला से, कुल में सब संकर होईहें॥'

तब भगवान उनके छत्रिय धरम समझावत गीता के उपदेश दिहलें-

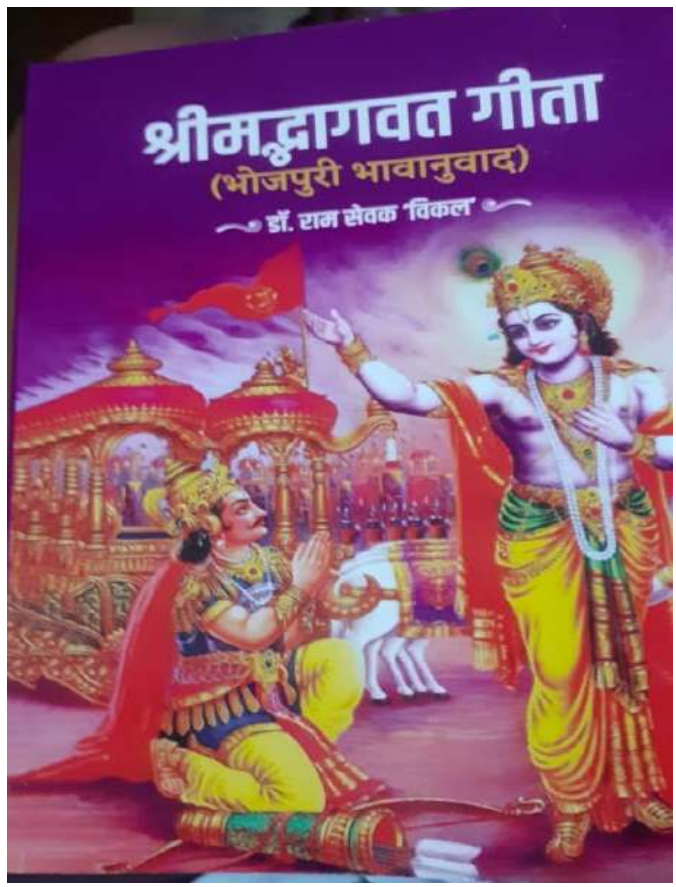

पुस्तक : श्रीमद्भागवत गीता
कवि : डॉ. राम सेवक 'विकल'
प्रकाशक : हिन्दी श्री पब्लिकेशन
द्वितीय संस्करण : 2023
मूल्य : 200

'कायरता मति राखऽ मन में, तोहके ना कवनो भय बा।
छुद्र हृदय के मूरखता तजि, उठि जा अब तोहार जय बा॥

जब जुद्धभूमि में आपन परिजन, गुरु सबके मारि राजपाट ना भोगे के विचार अर्जुन के मन में गहराई में जाके बइठि गइल तऽ ऊ आपन धनुष-वाण रथ में रखि के उदास हो गइलन त भगवान आत्मा के स्वभाव बतावत समझवलन- 'जइसे फाटल वस्त्र छोड़ि के, अदमी नीमन पहिरेला'।

वोइसे छोड़ि पुरान देहि के, जीव नया तब धरि लेला॥
एकरा के हथियार न काटे, नाही आगि जरावेले।
पानी नाही भिजा पावेला, नाही हवा सुखावेले॥
जनम के पहिले मरन के पीछे, ए शरीर के ना आकार।
बीच में कुछ दिन के शरीर हऽ, सोच कइल तोहरो बेकार॥'

फिर त अर्जुन के दिमाग चकराइल आ एतना-एतना विचार आ प्रश्न मन में आइल आ ओकर एक-एक कइके भगवान जवाब देत गइलन।

गीता में भक्ति योग, करम योग आ गियान योग के अइसन मेल बा कि कवनो अवरी शास्त्र पढ़े के जरुरते ना पड़ी। जे तरह से कर्म के बारे में अर्जुन के पूछला पर भगवान बतावत बाड़ें -

'फल के लालच ना हमार हऽ, करम ना हमके घेरि पावे।
अइसन हमके जे नर जाने, ऊ ना करम में बंधि पावे॥'

ओही तरह भगवान गियानो के समझवलन-

'ज्ञान से बढ़ि पवित्र दुनियां में, दूसर कुछ नाही बांटे।
जुग-जुग से सब सिद्ध पुरुष, अपने में खुद बूझत बाटे॥
अज्ञानी हिरदय में उपजल बा, जे संशय आजु तोहार।
ओके छोड़ि जुद्ध की खातिर, अर्जुन अब हो जा तइयार॥'

आ जोग के बतावत में भगवान, अर्जुन के मन के मोह गांठ कुछ खोले लगलन। जब अर्जुन पुछलन कि जोग आ करम में कवन अधिक श्रेष्ठ बा तऽ भगवान बतवलन-

'जे बाहर के विषय भोग में, आपन मन ना ले आवे।
ब्रह्म मगन हो परम जोग में, ऊ सब अक्षय सुख पावे॥
देह नष्ट भइला से पहिले, काम क्रोध के सहि लेला।
उहे लोक में सुखी कहाला, जोगी नाँव कमा लेला॥'

गीता के भोजपुरिया गीत रूप दे के विकल जी भोजपुरी साहित्य रुचि के लोगन खातिर अइसन सराहेवाला काम कइले बाड़ें कि एकर आवेवाला समय में खूब प्रचार-प्रसार होखे के चाहीं आ भोजपुरिया लोगन के घर-घर में पहुंचि के ओइसहीं अपना हिरदय में उतरे के चाहीं जइसे अठारहवां अध्याय में भगवान के पुछला पर कि-

'हे अर्जुन अब तुंहहीं बोलऽ,
अबहूं टूटल मोह कि ना ?
ई हमार प्रिय वचन ध्यान से,
सुनलऽ हऽ मन से कि ना?'

त अर्जुन के मोह जाल के गँठरी खुलि गइल आ कहे लगलन -

'टूटल मोह होश अब गइल, रऊरा किरपा से भगवन।
अब ना कवनो सुबहा बाटे, उहे करब कहबि जेवन॥'

एतना कहला के बाद अर्जुन जुद्धभूमि में आपन गांडीव उठा लिहलन आ केशव के बाति सुनि छत्रिय धरम निभावे खातिर धनुष से टंकार करे लगलन। ***

गजल

देखलीं जे बइठि के दरिया किनारे
डूबके देखला प लागल भिन्न, यारे

घर के कीमत का हवे, ऊहे बताई
जे रहत फुटपाथ पर लँगटे-उघारे

ना परे मन घर कबो बबुआ के भलहीं
रोज बुढ़िया भोर में कउवा उचारे

बस कहे के हम आ ऊ साथ रहीले
साथ का, जब पड़ गइल मन में दरारे

ख्वाब में भी हम कबो सोचले ना होखब
वक्त ले जाई कबो ओहू दुआरे

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

उद्धव मिश्र

चलनी में पानी: एगो मील क पत्थर

मनोज भावुक क रचना संसार कवनहूँ काव्यान्दोलन से अलग, जीवन, समय आ समाज के साँच में अइसन रंग भरले बा जवन पाठक के भीतर उतरके कुछ नया तरह के संवेदना आ संस्कार के जनम देला। ऊ जहाँ जइसन देखलें बान ओइसहीं बिना लाग लपेट के उतर गइल बा संगीतात्मकता आ गेयता के साथे।

दोहा आ गीत के ये संकलन "चलनी में पानी" के धार में सुख-दुख, फूल-काँटा, भौंरा क गुंजार आ तितली के पाँख के साथे पंखुड़ी के चटख रंग सभकुछ एक साथे देखल जा सकेला। समाज कलाकार के जेतना कुछ देला अपने रचना कर्म से कलाकार सूद समेत वापस क देला।

दुनिया से बा जे मिलल, हँसी, खुशी आ घात।
सौंप रहल बानी उहे, दोहा में सौगात।।

गीत आ दोहा के कोलाज के ये सौगात क सबसे बड़ खासियत बा कि ढेर सा बात तनिके में कह दिहल गइल बा। अपने समय आ समाज क साँच गीत आ दोहा के साँचा में ढलके बहुते चोखार हो गइल बा। मारक त अइसन कि पाठक क करेजा छलनी हो जाय।

अँगना गायब हो गइल, बुढ़िया खोजे घाम।
अपना अपना रूम में सभका बाटे काम।।

रिस्ता-नाता, नेह सब, मौसम के अनुकूल।
कबो आँख के किरकिरी, कबो आँख के फूल॥

भावुक अब बाटे कहाँ, पहिले जस हालात।
हमरा उनका होत बा, बस बाते भर बात॥

हमरा से ना हो सकल झूठ-मूठ के छाव।
चेहरा पर हरदम रहल, आंतर के हीं भाव॥

नोच रहल बाटे उहे, राउर रोआँ-पाँख।
जेकरा के दिहनी कबो, रउरा आपन आँख॥

व्यक्तिवाद के विकास के साथे समाज क जवन विकृत आ भयावह रूप सामने आइल बा वो में मनई के अकेलापन के साथे जिनगी अउरिओ उलझ गइल बा –

एगो से निपटी तले, दोसर उठे बवाल।
केहू केतनो हल करी, जिनगी रोज सवाल।।

भावुक जो बाटे इहे, किस्मत के मंजूर।
भरल आम के बाग में, तहरा मिली धतूर॥

जहवाँ हम रोपले रहीं किसिम-किसिम के फूल।
समय उगा के चल गइल, उहवें आज बबूल॥

भावुक तोहरा साथ में केतना भइल अनेत ।
चिरूआ भर पानी मिलल ओहू में बा रेत ।।

भावुक हमरा पास बा, बावन बिगहा खेत।
बाकिर कवना काम के, जब सब रेते-रेत॥

हमरा हालत पर हँसे, हमरे अब तस्वीर।
भावुक कइसन मोड़ पर, ले आइल तकदीर॥

बाकिर भावुक दुख, असफलता आ पीड़ा के सृजन से कइसे जोड़त बान, देखीं –

भावुक जब तक ना चुभे, दिल में कवनो तीर।
कागज पर उतरे कहाँ ठीक-ठाक तस्वीर॥

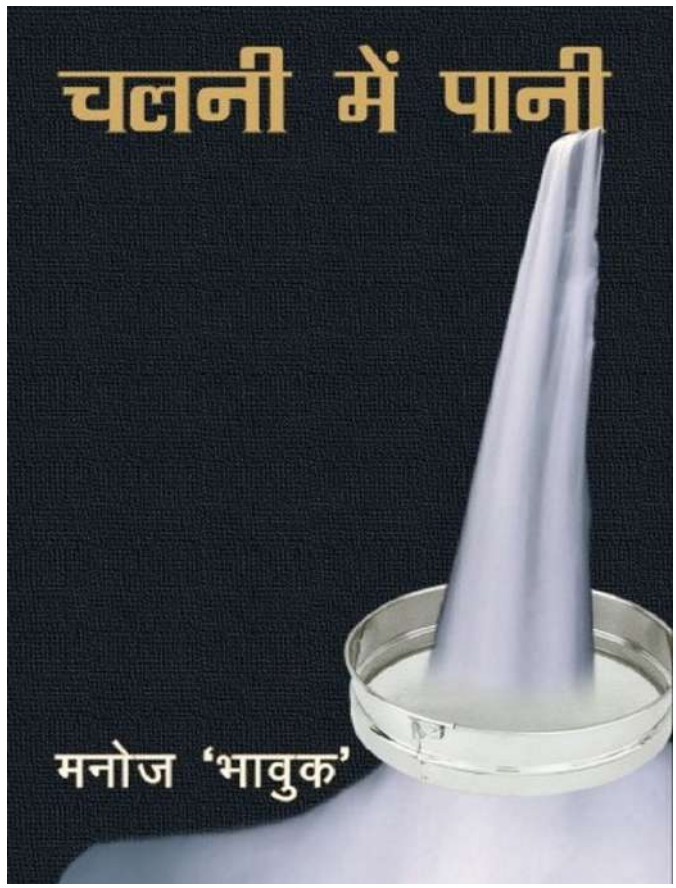

किताब: चलनी में पानी
लेखक: मनोज भावुक
विधा: काव्य संकलन (दोहा, गीत)
प्रकाशक: नवशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2010
मूल्य: 100 रु

धुआँ उठे आकाश में खुद जरला के बाद।
भावुक तुहूँ जार दऽ, मन के सब अवसाद॥

बाकिर रचनाकार क जियतार मन चाहे जमाना ओकरा साथे कइसनो कुछ कइले हो फगुनहट बहते बउरा जाला, आनन्द क दरिया लहरा उठेला। सरसों के फूल आ गेंहूं के गदरात बाली के साथे मधुमास के दस्तक देते फगुआ के थाप पे ढोलक बाज उठेला। बिचार आ रसबोध क कवि गुनगुनाला–

भावुक हो तोहरा बिना कइसन ई मधुमास।
हँसी-खुशी सब बन गइल बलुरेती के प्यास॥

फागुन में आवे बहुत निर्मोहँ के याद।
पागल होके मन करे खुद से खुद संवाद॥

मह-मह महके रात-दिन पिया मिलन के याद।
भीतर ले उकसा गइल, फागुन के जल्लाद॥

भावुक तू कहले रहऽ आइब सावन बाद।
फगुओ आके चल गइल, ना चिट्ठी, संवाद॥

भावुक के फागुनी दोहा में फागुन बहुत उत्पात करत बा –

ठूठों में फूटे कली, अइसन आइल जोश।
अब एह आलम में भला, केकरा होई होश॥

महुआ चूअत पेड़ बा अउर नशीला गंध।
भावुक अब टुटबे करी, संयम के अनुबंध॥

बाकिर ये शालीन मनई से कतहूँ संयम क अनुबंध टूट नइखे पवले। भावुक के रचना कर्म में रीतिकाल के परम्परा में वर्तमान क एगो अद्भुत रूप देखल जा सकेला। जे तरह के रसानुभूति करवले क कोशिश रीतिकाल के आचार्य पद्धति में देखल जा सकेला ओह से गहन रसानुभूति भावुक जी के सीधा सपाट रचना में देखल जा सकेला। एही सरलता के साथे भोजपुरी के बहुत ऊँचाई देबे खातिर भावुक जी के बधाई देबे के मन करेला।

अपना रससिक्त भाषा के साथे मौजमस्ती के प्रवाह में कवि भावुक क मन बार-बार जीवन के यथार्थ के ओर लौट आवेला। जब-जब उनकर कवि मन कवनो कल्पनालोक से लौट के जमीन पर आवेला, मनई के विवशता देख के चीख उठेला–

पड़ल हवेली गाँव में भावुक बा सुनसान।
लइका खोजे शहर में, छोटी मुकी मकान॥

रोटी के टुकड़ा के जिनगी रखैल।
डंकरत बा रहि-रहि के कोल्हू के बैल॥

(गीत / पृष्ठ- 62)

कतो लोग भूख से बिलबिलाता त कहीं धन दौलत क बरखा होता। आदमी त आदमी ह, कुकुरो गद्दा प बइठ के एसी क सुख भोगता। एगो रोटी के टुकड़ा खातिर छिछियात मनई के दुख, कवि भावुक आपन दुख बुझले बान। समाज के बदल देबे खातिर उनकरा भीतर चले वाला आत्मसंघर्ष कहीं कहीं बहुत गहिर पानी के भीतर बा त कहीं सतह पर उतरा गइल बा –

भावुक दोहा बन करऽ, बहुते बीतल रात।
जइबऽ ना आफिस अगर, खइबऽ कइसे भात॥

नइखीं माँगत दिन सोना के आ चाँदी के रात ।
बाकिर सभका थरिया में होखे के चाहीं भात ।।

(गीत / पृष्ठ-61)

बाकिर सभका नसीब में भात संभव कहाँ बा। ये देश में त लड़िकन के कूड़ा के ढेर पर रोटी तलासत देखल जा सकेला। आजादी क लड़ाई में बलिदान होखे वाला लोग सपना देखले रहल कि आजाद भारत में सभ केहू के बराबरी से जियला क अधिकार होई। नवका भारत में ना केहू छोट होई, ना बड़। बाकिर अब त वो सपना पर पानी फिर गइल बा। देश जवना ओर जात बा, ओकर साँच त कुछ अउरिये बा। अइसनका आजाद भारत जवना के जाति धरम के राजनीति घुन जइसे चाल रहल बा।

घुस गइल बाड़न घरे चील कउआ बाज अब
नोच नोच खा जइहें, देश के सुराज अब।।

(गीत / पृष्ठ- 59)

देश में अइसन सुराज आइल बा, अइसन नोच-खसोट मचल बा कि समाज में रिस्ता-नाता, जीवन-मूल्य सभ कुछ टूट के बिखर रहल बा। अइसन अन्हेर गर्दी कि–

बबुआ भइल अब सेयान कि गोदिये नू छोट हो गइल
माई के अंचरा पुरान, अंचरवे में खोट हो गइल

X X X X

बाबा के नन्हकी पलनिया उजारे
उठल रुपइया के जोर, जिनिगिए नू नोट हो गइल।

X X X X

रतिया त रतिया ई दिनवो अन्हारे
डूबल सुरुज भोरे भोर, करेजवे में चोट हो गइल।

(गीत / पृष्ठ-33)

X X X X

बिखरल खोंता माई के नू
भाई भोंके भाई के नू
जिउवा भइल कसाई के नू
मनवा जब सभकर बउराइल
बिषधर मने सभे बिखिआइल
बाबूजी के घरवा नागे नाग हो गइल
टुकी टुकी बाबूजी के बाग हो गइल

(गीत / पृष्ठ-34)

चइता, फगुआ, कजरी आ अवरुवो ढेर सा लोकधुन में रचल गीत से भोजपुरी के गँवइपन से निकाल के देश के कवनहुँ भाषा के बराबरी में ले आके खड़ा क देले बान। भावुक के भोजपुरी क दायरा बहुत बड़हन बा। ऊ अफ्रीका से लंदन तक फइलल बा।

सिवान के गाँव क ठेठ भोजपुरिया क भाषा फिरंगिया के गाँव में आके भलहीं बदल गइल बा बाकिर प्रवास के पीड़ा आ विस्थापन के दर्द इहवों देखल जा सकेला –

बदरी के छतिया के चीरत जहजवा से, अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया
लन्दन से लिखऽतानी पतिया पँहुचला के, अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया
तोहरा से कहतानी साँचो ए इयरवा
काहे दूना लागत नइखे इचिको जियरवा
हमरा के काटे दउड़े सोना के पिंजरवा
मनवा के खींचऽताटे माई के अँचरवा
लौट चलीं देश अपना कवनो रे बहनवा से
अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया

(गीत / पृष्ठ-36)

जिनगी क व्यथा आ तमाम सवाल आ ओकर जोड़ घटाना के जुगत अभिव्यक्त भइल बा चलनी वाला पानी में। जिनगी क चलनी में एतना छेद बा कि मनई पानी भरते रह जाला, आखिर में खालिये हाथ जाला। हाथ में कुछ हासिल ना भइले के बादो लोग ए भरम में रहेला कि ऊ बहुत काम क लेले बा। चलनी में पानी भरले के खेल में अइसन मनई आ समाज क रचना भइल बा जेमे मनई मनई नाही रह गइल बा। ए संकलन क रचना अइसने दौर में भइल बा जब ऊँच-नीच क खाई औरियो गहिरात जात बा।

जवने गाँव जवार क माटी भावुक के लंदन से अपने कोरा में बोला लेले बा वो गाँव समाज क विसंगति भावुक के बहुत भीतर ले आहत कइले बा –

बाँझ हो गइल बा संवेदना के गाँव।
नेह हो गइल बा बबुरवा के छाँव ।।

(गीत / पृष्ठ-35)

भाषा आ शिल्प में बहुत सीधा सपाट लउके वाली रचना सहज सरल लागत बाड़ी स, मगर ओकरे भीतर उतर के कुछ अउरिये देखल जा सकेला। रचना क सहजता भावुकजी के स्वभाव से कवि भइले क सबूत बा। प्रेम आ फागुन के दोहा अवरू गीत में कवि के फक्कड़पन देखल जा सकेला। भावुक के रचना संसार के सहजता, सरलता के भीतर के जटिलता से उनके रचना के वजन क अंदाज कइल जा सकेला। उदाहरन खातिर–

दरियाव उम्र के अब साथी उफान पर बा
अब इश्क क परिंदा बहुते उड़ान पर बा

(गीत / पृष्ठ-46)

ये तरे काव्यानुभूति के हजार रंग के साथे चलनी में पानी के पड़ताल ओइसहीं संभव नइखे, जइसे चलनी में पानी भरल। एह संग्रह में मुर्दा में जान फूँके वाला कुछ आशावादी गीत भी बाड़ी स–

कहिया ले किस्मत ई तोहरा से रूठी
मन से जो ठनबऽ त सब बेड़ी टूटी
ललकी किरिनिया फूटी, फूटी, फूटी
एक दिन त होई अँजोर
इहे सोच रतिया बितइहऽ।
जब ले बा देहिया में प्रान
तू असरा के दियरी जरइहऽ।

(गीत / पृष्ठ-41)

X X X X

मन त भटकेला, रोज भटकेला, उम्र भर अइसे
अपने दरिया में प्यास से तड़पे इक लहर जइसे
हाय रे उलझन, एगो सुलझे तब, फिर नया उलझन, फिर नया उलझन
फिर भी आँखिन में, ख्वाब के मोती, चाँद के चाहत
काश मुट्ठी में चाँद आ जाए, चाँद आ जाए
तब इ जाने के चांदनी का ह
जिन्दगी का ह, जिन्दगी का ह।

(गीत / पृष्ठ-43)

X X X X

तहरो मन पर बोझा भारी
हमरो मन पर बोझा भारी
जिनिगी के बोझा का कम बा
जे नधलऽ ई दुनियादारी ?
छोड़ऽ ना मर्दे अब ई
बेमतलब के तकरार
कि आवऽ फिर से करे के प्यार।

(गीत / पृष्ठ-63)

जब से धरती पर मनई गोड़ धइले बा तब से गीत गवनई ओकरे सुख दुख क साथी बनके खड़ा बा। कहीं न कहीं से आदमी के गीतन से संजीवनी मिलत रहेला। बिना गीत के मनई क कल्पना नाहीं कइल जा सकेला।

गीत जवन आज ले भोजपुरिया समाज क कंठहार रहल ह वो के अपने खास टटकापन आ नयापन के साथे ये संकलन चलनी में पानी मे देखल जा सकेला। भिखारी ठाकुर, महेन्दर मिसिर आ गिरमिटिया के भोजपुरी केतना बदल गइल बा। भोजपुरी के शक्ति आ सामर्थ्य के मूल्यांकन भावुक के रचना संसार में घूस के कइल जा सकेला। भोजपुरी भाषा आ साहित्य के इतिहास मे चलनी में पानी एगो मील क पत्थर साबित होई। ***

अध्याय-4

भोजपुरी सिनेमा के आधुनिक युग (2001-2022)

साल 2016 में फेर एगो गायक नायक बनले, रितेश पाण्डेय। सासाराम बिहार के रहे वाला अउरी बनारस से पढ़ाई-लिखाई कर के रितेश एल्बम गवलें अउरी हिट हो गइलें। उनका आवाज के पवन सिंह के साथ समानता शुरू में श्रोता के बहुत भ्रमित कइलस। इहे वजह रहे कि उनके सबसे हिट गाना 'जा ये चंदा, ले जा खबरिया' हिट भइला के बाद लोग के पता चलल कि ई रितेश पाण्डेय नाम के नया गायक के ह। एकर वजह पवन सिंह के सुरीला गला के दर्शकन पर चढ़ल खुमारी भी बा कि उनके आपन पहचान बनावे में समय लागल। रितेश के पहिला फिल्म रहे बलमा बिहारवाला 2 जेमें ऊ कल्लू अउरी पाखी हेगड़े के साथ अइलें।

तीसरा काल खंड (2016 - 2018)

2016 के बड़हन फिल्म में राजकुमार पाण्डेय के 'दुलहिन चाहीं पाकिस्तान से' सफल फिल्म रहे। ए फिल्म में बॉलीवुड एक्टर अउरी देशभक्ति फिल्मन में खूब दिखे वाला राहुल देव रहलें। फिल्म के हीरो प्रदीप पाण्डेय चिंटू रहलें। एगो नया हीरोइन सुरभि शुक्ला इंट्रोड्यूस भइली। फिल्म में सूर्या नाम के फौजी के इर्द गिर्द पटकथा बुनल रहे जवन परिस्थिति वश पाकिस्तान में चल जाता अउरी उहाँ कइसे देश के दुश्मन से लड़ऽता, इ देखे लायक बा। संवाद अउरी कहानी लालजी यादव के रहे।

निरहुआ के फिल्म राजा बाबू, मंजुल ठाकुर के निर्देशन में बनल बेहतरीन फिल्म रहे। ई साल के सबसे सफल फिल्म में से रहे। कहानी एगो गाँव के सीधा सादा लइका राजा के रहे जवना के गाँव के लोग कवनो गत के ना समझे बाकी ओकरा भरोसा रहे कि ऊ जरूर एक दिन बड़ा काम करी अउरी शहरी दुलहिनिया ले आई। राजा के कौन बनेगा करोड़पति के बारे में पता चलऽता अउरी ऊ ओमें एंट्री के प्रयास करता, पहिला पड़ाव पार कर जाता। ओकरा घरवाला शर्त लगावतारे कि अगर ऊ करोड़पति में ना गइल त ओकर बियाह घरवाला के मर्जी से होई। राजा के गाँवे कुसुम से बियाह हो जाता तले मुम्बई से बोलाहट आ जाता। राजा उहाँ करोड़पति जीत जाता अउरी उहाँ एगो सुंदर

लड़की डॉली के फेरा में पड़ जाता। डॉली से भी बियाह करे के पड़ता अउरी ओकरा के गाँवे ले आवता। इहाँ फिर जवन फैमिली ड्रामा शुरू होता उ मनोरंजक बा। एह फिल्म

में रविकिशन के गेम शो होस्ट के रूप में गेस्ट अपीयरेंस रहे।

साल 2016 में फेर एगो गायक नायक बनले, रितेश पाण्डेय। सासाराम बिहार के रहे वाला अउरी बनारस से पढ़ाई-लिखाई कर के रितेश एल्बम गवलें अउरी हिट हो गइलें। उनका आवाज के पवन सिंह के साथ समानता शुरू में श्रोता के बहुत भ्रमित कइलस। इहे वजह रहे कि उनके सबसे हिट गाना 'जा ये चंदा, ले जा खबरिया' हिट भइला के बाद लोग के पता चलल कि ई रितेश पाण्डेय नाम के नया गायक के ह। एकर वजह पवन सिंह के सुरीला गला के दर्शकन पर चढ़ल खुमारी भी बा कि उनके आपन पहचान बनावे में समय लागल। रितेश के पहिला फिल्म रहे बलमा बिहारवाला 2 जेमें उ कल्लू अउरी पाखी हेगड़े के साथ अइलें। ई फिल्म एक्टर से डायरेक्टर बनल विष्णु शंकर बेलू के निर्देशन में बनल। फिल्म के कहानी हॉरर रहे जेमें एगो चुड़ैल पाखी के अपना वश में कर लेतिया। भोजपुरी में भूत-प्रेत पर

अगर भोजपुरी में हॉरर फिल्म के बात होला त बैरी कंगना के ही जिक्र सबसे पहिले आवेला। निहाल सिंह के फिल्म जेकर डायरेक्टर राजू सिंह रहलें अउरी कुणाल सिंह मुख्य भूमिका में रहलें।

बहुत कम फिल्म बनल बा अउर अगर बनल बा त उ कुछ खास कमाल ना कर पवलस। अगर भोजपुरी में हॉरर फिल्म के बात होला त बैरी कंगना के ही जिक्र सबसे पहिले आवेला। निहाल सिंह के फिल्म जेकर डायरेक्टर राजू सिंह रहलें अउरी कुणाल सिंह मुख्य भूमिका में रहलें।

ओकरा बाद एही साल उनके चिंटू पाण्डेय के साथ फिल्म आइल ट्रक ड्राइवर-दू। फिल्म में चिंटू ट्रक ड्राइवर के भूमिका में रहलें अउरी रितेश पाण्डेय गायक के रोल में। चिंटू के अपना मालिक के प्रति ईमानदारी उनके फिल्म में दुश्मन के शिकार बना देता जेसे उ पागल हो जातारन। फिल्म राजकुमार आर पाण्डेय के निर्देशन में बनल रहे। राजकुमार हिंदी में राकेश रौशन अउरी डेविड धवन के नक्शे कदम पर चल देले रहलें। उहो अधिकांशतः अपना बेटा के लेके फिल्म बनावे अउरी प्रोड्यूस कइल चालू कर दिहलें।

निरहुआ के मोकामा जीरो किलोमीटर साल के चर्चित फिल्म रहल। संतोष मिश्रा के निर्देशन में ई एक प्रयोगात्मक फिल्म रहे अउरी मोकामा के अपराध जगत के कहानी रहे। सच्ची घटना से प्रेरित ई फिल्म में सुशील सिंह के किरदार के नाम छोटे सरकार रहे जे असल मे ओ एरिया के कुख्यात डॉन बा। फिल्म में छोटे सरकार के अत्याचार अउरी ओकरा एकछत्र राज के दिखावल गइल बा जेकरा खिलाफ निरहुआ के किरदार आवाज उठावता। निरहुआ पुलिस अफसर के रोल में रहलें। करण पाण्डेय के एमें अजगर नाम के क्रूर विलेन के रोल रहे जवन छोटे सरकार के राइट हैंड रहता। फिल्म में दू गो हीरोइन आम्रपाली दुबे अउरी अंजना सिंह रहली।

निरहुआ चलल ससुराल-2 भाई बहिन के प्यार के देखावत एगो सुंदर फिल्म बनल रहे। नासिर जमाल के निर्माण में प्रेमांशु सिंह के निर्देशन वाला ई फिल्म दर्शक के प्रभावित करे में सफल भी भइल। आम्रपाली दुबे, सुशील सिंह एमें छोट बहिन अउरी बड़ भाई के किरदार में रहे लोग। आम्रपाली के निरहुआ से प्यार हो जाता अउरी भाई अपना बहिन के खुशी से बियाह कर देता। जवना बहिन के उ बचपन से ही जान से ज्यादा मनले बा उ बहिन बियाह भइला के बाद भाई के कम पुछतिया इहे बात ओकरा खटकता जवन बाद में रिश्ता टूटे तक आ जाता। फिल्म सुंदर रहे अउरी सिनेमा घर मे दर्शक भी मिललें।

निरहुआ के मोकामा जीरो किलोमीटर साल के चर्चित फिल्म रहल। संतोष मिश्रा के निर्देशन में ई एक प्रयोगात्मक फिल्म रहे अउरी मोकामा के अपराध जगत के कहानी रहे। सच्ची घटना से प्रेरित ई फिल्म में सुशील सिंह के किरदार के नाम छोटे सरकार रहे जे असल मे ओ एरिया के कुख्यात डॉन बा। फिल्म में छोटे सरकार के अत्याचार अउरी ओकरा एकछत्र राज के दिखावल गइल बा जेकरा खिलाफ निरहुआ के किरदार आवाज उठावता।

2016 के कुछ अउर फिल्मन के अगर चर्चा कइल जाव त ओह में निरहुआ, अंजना अउरी

आम्रपाली के बेटा अच्छा कहानी पर बनल रहे। खेसारीलाल अउरी स्मृति सिन्हा के साजन चले ससुराल-2 के रूप में सीक्वल आइल जवन अच्छा व्यवसाय कइलस। कहानी भी अच्छा रहे अउर फिल्म के एल्बम डिजिटल प्लेटफार्म पर खूब चलल।

भोजपुरिया राजा में पवन सिंह अउरी काजल राघवानी के जोड़ी के खूब पसंद कइल गइल अउरी गाना भी काफी चलल।

अउरी उल्लेखनीय फिल्मन मे आशिक आवारा, इच्छाधारी, घरवाली बाहरवाली, ज्वाला, खिलाड़ी, दूध के कर्ज, बहूरानी, बम बम बोल रहा है काशी आ भोजपुरिया राजा प्रमुख बा।

साल 2017 में दू तीन गो फिल्म बहुत सफल भइल रहे जेकर चर्चा जरुरी बा। संगीतकार के रूप में खूब सफल रहल रजनीश मिश्रा एगो कहानी पर बहुत दिन से काम करत रहलें। उ पटना से पाकिस्तान के प्रेजेंटर अनंजय रघुराज से तबे से संपर्क में रहलें। बाद में अनंजय रघुराज के निर्माण में अपना कहानी के फिल्म के शक्ल दिहलें अउरी नाम रखलें मेंहदी लगा के रखना। खेसारीलाल, काजल राघवानी लीड में रहे लोग। रितु सिंह अउरी प्रियंका पंडित सहायक भूमिका मे। कहानी एगो बाप बेटा के कहानी रहे। लइका के एगो लड़की से प्रेम हो जाता। लड़का के बाप एगो सदमा से मर जाता त लड़का अकेला पड़ जाता। फिर उ कइसे अपना बाप के वादा पर टिकता अउरी कइसे आपन प्यार पावता एके बड़ा

2017 में दूगो अउरी फिल्म आइल पाकिस्तान के कांसेप्ट पर। इलाहाबाद से इस्लामाबाद नाम के फिल्म आइल। फिल्म में रानी लीड में रहली। उनके रोल गुलाबो नाम के डांसर के रहे जेकर भाई आतंकवादी हमला में मर जाता जेकर बदला गुलाबो पाकिस्तान के इस्लामाबाद जाके लेतिया।

सुंदर तरीका से फिल्मावल बा। अपना कॉमेडी सीन के वजह से भी ई फिल्म खूब चलल। सिनेमा घर मे दर्शक खूब अइलें।

निरहुआ हिंदुस्तानी काफी सफल फिल्म रहे। ओकर सीक्वल आइल अउरी उ भी खूब चलल। मंजुल ठाकुर के ई फिल्म दर्शक के बहुत पसंद आइल। फिल्म के कहानी में लापरवाह नौजवान निरहुआ अपना गाँव से भाग जाता काहें कि ओकर परिवार जबरदस्ती

एगो अनजान लड़की से ओकर बियाह करता। उ शहर में गाँव के एगो यार के साथे रुक जाता अउरी उहें सिक्योरिटी गार्ड के नोकरी कर लेता। ओहिजा ओकरा अपना मालिक के बेटी से प्यार हो जाता। उ बियाह करके गाँवे आवता अउरी इहाँ अपना माई के जिद से एगो अउरी बियाह कर लेता। शहर वाली लड़की के बेमारी रहता, जवन गाँव वाली लड़की के पता चलता त उ ओकरा से जलन छोड़ ओकर साथ देबे लागतिया। फिल्म के कहानी हँसी मजाक के साथ भावुक कर देबे वाला बा। फिल्म के देसी कनेक्ट के कारण लोग बहुत पसंद कइलस। ई फिल्म यूट्यूब पर सबसे ज्यादा बार देखल गइल भोजपुरी फिल्म बा।

पवन सिंह अउर अक्षरा सिंह के फिल्म धड़कन भी अच्छा चलल। एमें अयाज खान के किरदार काफी पसंद कइल गइल। इंडिया वर्सेज पाकिस्तान भी ए साल पाकिस्तान के केंद्र में रखके बनल फिल्म रहे। ए फिल्म में भी अयाज खान रहलें अउरी पाकिस्तानी मेजर के भूमिका में रहलें। 2017 में दूगो अउरी फिल्म आइल पाकिस्तान के कांसेप्ट पर। इलाहाबाद से इस्लामाबाद नाम के फिल्म आइल। फिल्म में रानी लीड में रहली। उनके रोल गुलाबो नाम के डांसर के रहे जेकर भाई आतंकवादी हमला में मर जाता जेकर बदला गुलाबो पाकिस्तान के इस्लामाबाद जाके लेतिया।

एही साल खेसारीलाल के एगो फिल्म आतंकवाद अउरी पाकिस्तान के आधार बना के आइल। सभ हीरो लोग आ गइल रहे त खेसारी कहाँ से पीछे रहीते। उनके फिल्म के नाम रहे आतंकवादी। फिल्म में खेसारी आतंकवादी के रोल में रहले आ शुभी शर्मा उनके साथी रहली। फिल्म में मध्य में आके खेसारी के हृदय परिवर्तन होता आ उ देश के दुश्मन के खिलाफ जंग शुरू कर देतारें। फिल्म आइल अउरी ठीक ठाक व्यवसाय कइलस।

एही साल उनके एगो अउरी फिल्म के ट्रेलर रिलीज भइल बाबरी मस्जिद नाम से। फिल्म के टाइटल के लेके एतना बवाल भइल आ सेंसर सर्टिफिकेट देबे से मना कर देहलस। एही वजह से निमार्ता के फिल्म के नाम बदले के पड़ल फिर फिल्म के नाम रखाइल हम हैं हिंदुस्तानी।

एही पीरियड में कसम पैदा करने वाले की और नागराज फिल्म अभिनेता यश कुमार के

प्रियंका चोपड़ा के प्रोडक्शन कंपनी पर्पल पेबल भोजपुरी फिल्म निर्माण में आइल अउरी फिल्म बनल काशी अमरनाथ। फिल्म के निर्देशक रहलें संतोष मिश्रा। काशी के रोल में रहलें रविकिशन अउरी अमरनाथ के रोल में निरहुआ। फिल्म बिहार यूपी में अच्छा व्यवसाय कइलस।

ग्राफ ऊपर कइलस। नागराज में त ग्राफिक्स के ग्राफ भी बहुत ऊपर गइल रहे। दरअसल नागराज फुल प्रफू ग्राफिकल एक्शन फिल्म रहे। एमें बड़ा पैमाना पर एनिमेशन अउरी ग्राफिक्स के सहारा लिहल गइल रहे। ए फिल्म में यश और अंजना के केमेस्ट्री भी कमाल के रहे।

प्रियंका चोपड़ा के प्रोडक्शन कंपनी पर्पल पेबल भोजपुरी फिल्म निर्माण में आइल अउरी फिल्म बनल काशी अमरनाथ। फिल्म के निर्देशक रहलें संतोष मिश्रा। काशी के रोल में रहलें रविकिशन अउरी अमरनाथ के रोल में निरहुआ। फिल्म बिहार यूपी में अच्छा व्यवसाय कइलस।

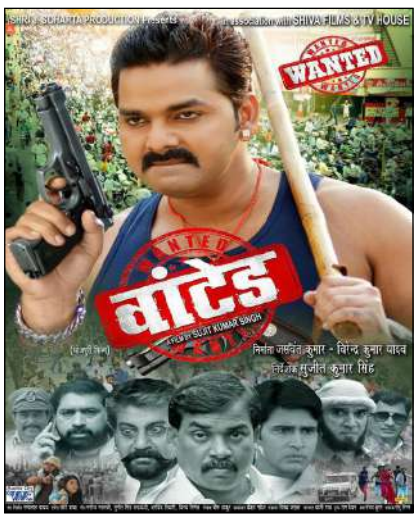

चैलेन्ज यशी फिल्म्स के प्रस्तुति रहे जवन दुबई के सुंदर लोकेशन पर शूट भइल। फिल्म में समीर आफताब नाम के एगो नया हीरो अइलें जे बॉलीवुड में तीन चार गो फिल्म कर चुकल बाड़ें। फिल्म में हीरोइन मधु शर्मा अउरी सेविका दीवान रहली। सेविका के भी ई डेब्यू फिल्म ह एकरा से पहिले खेसारी के फिल्म खिलाड़ी में एगो छोट रोल में दिख चुकल बाड़ी। फिल्म के लेखक निर्देशक सतीश जैन रहलें। फिल्म के कहानी राजनीति अउरी गुंडागर्दी के बीच फँसल दू गो सौतेला भाइयन के रहे जवन एक दूसरा से भी लड़त रहतारे सन।

एही साल मनोज टाइगर कॉमेडियन से राइटर बनलें अउरी सिपाही फिल्म लिखलें जे में निरहुआ अउरी आम्रपाली मुख्य भूमिका में रहे

ई फिल्म एगो प्रश्न छोड़ता कि कइसे गाँव में नाच के लौंडा राति के 3-3 बजे ले बिना खइले-पियले नाचेला अउरी तब ओकरा ग्रुप के ठन्डाइल खाना भेंटाला। ओकरा बादो जवन रुपया खातिर उ एतना मेहनत करेला, उ रूपया भी लोग काट-पीट के कमे देला। उहे नाच के लौंडा फिलिम में मॉडिफाई होके हीरो बन जाता भा अभिनेता बन जाता त ओकर सीधे ट्रीटमेंट अलग हो जाता बाकिर कमवा उ मनोरंजन के ही करऽता। माने ए सन्दर्भ ई कहल जा सकेला कि हमनीये के घर के माड़ नीक ना लागेला आ उहे जब फाइव स्टार होटल में मिन्टेड एंड गार्निश्ड ब्राउन राइस वाटर नाम से आवेला त हमनी का चाव से पीएनी, पावेनी आ ऊपर से एड़ा के डेढ़ा रुपियो देनी।

लोग। ई फिल्म सिपाही के ऊपर साहब लोग के परिवार अउरी साहब के मनचाहा राज कइला के ऊपर सटायर रहे। मनोज टाइगर अपना राइटिंग अउरी कहानी में फ्रेशनेस के साथ कॉमेडी के बढ़िया तड़का लगवले रहलें। जिला चम्पारण खेसारी के बॉडी बिल्डिंग के बाद उनके फ्रेश लुक के फिलिम रहे। फिल्म में अवधेश मिश्रा के एगो दबंग अउरी रॉबिनहुड वाला मुखिया राजदेव के किरदार बहुत पसंद कइल गइल। फिल्म के कहानी और ट्रीटमेंट में ताजगी रहे। फिल्म के बैकग्राउंड स्कोर भोजपुरी के परंपरागत ढंग से अलग अउरी उम्दा रहे। मनोज के कुशवाहा के लिखल ए फिल्म के निर्देशक लालबाबू पंडित रहलें।

साल के चुनिंदा फिल्मन में एक्शन राजा, कसम पैदा करने वाले की, गैंग्स ऑफ सिवान, जान हमार, जय श्री राम, ढक्कन, तेरे जैसा यार कहाँ, तबादला, दिलवाला, निरहुआ सटल रहे, बेटा होखे त अइसन, मेहरारू चाहीं मिल्की ह्वाइट, मोहब्बत, रंगदारी टैक्स, सत्या, ससुराल, सइंया सुपरस्टार, स्वर्ग, हम हैं जोड़ी न.-1, हम हैं हिन्दुस्तानी रहे।

2017 में भोजपुरी टेलीविजन के दुनिया में एगो अउर बड़हन उपलब्धि भइल- सारेगामापा रंग पुरवईया के शुरूआत। रउरा सबके पता बा कि 2007 तक भोजपुरी भाषा में आपन कवनो चैनल ना रहे। 2008 में 'महुआ' आ 'हमार टीवी' नामके दुगो भोजपुरी चैनल के शुरूआत बड़ी धूमधाम से भइल, जवना के आज नामो निशान नइखे। बाकिर, तब महुआ के तूती बोलत रहे। इंटेरटेन्मेंट के दुनिया में महुआ के धमाकेदार अवतरण भइल रहे। हमार टीवी भोजपुरी न्यूज में आपन पहुँच बनइले रहे त महुआ भोजपुरी टीवी सीरियल आ रियालिटी शोज में। महुआ के 'सुर-संग्राम' बहुत लोकप्रिय भइल रहे। एह म्यूजिकल रियलिटी शोज के कई गो सीजन चलल आ एह से बहुत सारा गायक लोग लाइम लाइट में आइल आ ओह लोग के रोजी-रोजगार चले लागल। महुआ के बाद ई स्पेस बिल्कुल खाली रहल ह। महुआ के बाद अंजन टीवी आइल लेकिन ओकरा में महुआ वाली बात ना आइल। ऊ हिन्दी-भोजपुरी के बीच में त्रिशंकु लेखां लटकल रहल। अब त ऊ कंप्लीट हिन्दी चैनल हो गइल बा। हालांकि भोजपुरी में सीसीएल (सेलिब्रिटी क्रिकेट लीग) के उहे पार्टनर बनल। चूकि हम, हमार टीवी, अंजन टीवी आ महुआ सबका साथे एसोसिएट रहल बानी, त सबकर कार्य-प्रणाली आ क्षमता जानत बानी।

2017 में भोजपुरी टेलीविजन के दुनिया में एगो अउर बड़हन उपलब्धि भइल- सारेगामा के भोजपुरी वर्जन सारेगामापा रंग पुरवईया के शुरूआत। रउरा सबके पता बा कि 2007 तक भोजपुरी भाषा में आपन कवनो चैनल ना रहे। 2008 में 'महुआ' आ 'हमार टीवी' नामके दुगो भोजपुरी चैनल के शुरूआत बड़ी धूमधाम से भइल, जवना के आज नामो निशान नइखे। बाकिर, तब महुआ के तूती बोलत रहे। इंटेरटेन्मेंट के दुनिया में महुआ के धमाकेदार अवतरण भइल रहे। हमार टीवी भोजपुरी न्यूज में आपन पहुँच बनइले रहे त महुआ भोजपुरी टीवी सीरियल आ रियालिटी शोज में। महुआ के 'सुर-संग्राम' बहुत लोकप्रिय भइल रहे। एह म्यूजिकल रियलिटी शोज के कई गो सीजन चलल आ एह से बहुत सारा गायक लोग लाइम लाइट में आइल आ ओह लोग के रोजी-रोजगार चले लागल।

खैर, 2016 में हम जी टीवी, मुंबई (Zee Entertainment Enterprises Limited) में कंटेन्ट इंजिन टीम के हिस्सा बन गइनी। ई जी टीवी के मालिक सुभाष चंद्रा के आपन टीम रहे आ उनका हिसाब से कहानी डेवलप करे। एह से उनका से इंटरैक्शन शुरू हो गइल रहे आ धीरे-धीरे ऊ जान गइल रहले कि हम खाँटी भोजपुरिया हईं आ भोजपुरी साहित्य-सिनेमा पर काम करत रहेनी।

हमार टीवी के मालिक मतंग सिंह, महुआ के मालिक पीके तिवारी आ अंजन टीवी के मालिक प्रेम रावत के बाद सुभाष चंद्रा जी के भी भोजपुरी में बाजार दिखल आ ऊ रिलायंस के बीग गंगा के खरीद लेलें जवन बाद में जी गंगा बन गइल। 2017 में मई के महीना में एक दिन अचानके सुभाष जी हमरा के बोलवले आ कहलें कि मनोज, जी टीवी का पॉपुलार शो सारेगामा हिन्दी के अलावा कई क्षेत्रीय भाषाओं में बन रहा है। क्या इसे भोजपुरी में बनाया जा सकता है ? .... अंधा के का चाहीं, दू गो आँख। हम कहनी, बिल्कुल बन सकता है सर और इसकी जरूरत भी है और इसमें संभावना भी है। बस हमरा के सारेगामापा भोजपुरी के प्रोजेक्ट हेड बना के एसेल विजन में भेज दीहल गइल। हम लोअर परेल से फन रिपब्लिक, अंधेरी आ गइनी। बीग गंगा (जी गंगा) पर ई शो चलल। टैलेंट हंट खातिर कोलकाता, धनबाद, जमशेदपुर, राँची आ नोएडा के ऑडिशन में बतौर जज हम भागों लेनी, एह शो के लिखनी आ कुछ स्पेशल एपिसोड होस्ट भी कइनी। साल भर बाद छोट बच्चन (8-14 साल) खातिर भी शो लिखनी- सारेगामापा लिटिल चैंप्स। एह शोज से बहुत सारा सिंगिंग स्टार उभर के सामने अइलें।

2018 के उल्लेखनीय फिल्मन में नचनिया के जिक्र जरूर करे के चाहीं। ई फिल्म लीक से हटके बनल अइसन फिल्म बा जवन कमर्शियल भोजपुरी सिनेमा के इंडस्ट्री में एगो सामानांतर सिनेमा के उदाहरण बा। एह फिल्म के कहानी, अभिनय, निर्देशन अउरी सब्जेक्ट सब बढ़िया रहे लेकिन जइसन हमेशा होला ए फिल्म के साथ भी उहे भइल, ई फिल्म बॉक्स ऑफिस पर नंबर बनावे के जादू ना चला पवलस।

आईं अब 2018 के फिल्मी सफर के बात कइल जाए।

2018 के सुपर हिट फिल्मन में पवन सिंह के वांटेड और माँ तुझे सलाम, खेसारी लाल यादव के दुल्हिन गंगा पार के, डमरू,

दीवानापन, संघर्ष, मोनालिसा अउर विक्रांत सिंह के नथुनिया पे गोली मारे आदि के नाम लिहल जा सकेला।

अनंजय रघुराज 2017 में मेहंदी लगा के रखना के दमदार सफलता के बाद ओकर सीक्वल बनवले मेंहदी लगाके रखना-2 नाम से। मंजुल ठाकुर के निर्देशन में चिंटू पांडेय हीरो रहलें। ये फिल्म से ऋचा दीक्षित डेब्यू कइली। फिल्म में प्रेम त्रिकोण के कहानी रहे। हीरोइन अन्धा रहली आउर उ चिंटू से प्यार करतारी लेकिन हीरोइन के शादी चिंटू के दोस्त से तय हो जाता जेकर रोल यश मिश्रा कइले बाड़ें। दूसरा हीरो के भी हीरोइन

से खूब प्यार हो जाता। फिल्म के क्लाइमैक्स में इही बात के लेके बवाल बा।

2018 में खेसारीलाल के काजल राघवानी के साथ मुकद्दर फिल्म आइल। खेसारी गायक

2018 खेसारी लाल के साल रहल। उनके फिल्म संघर्ष अपना कंटेंट अउरी किस्सागोई के कारण खूब चर्चा में रहल। फिल्म में अश्लीलता से एहतियात बरतल रहे। फिल्म निर्देशक पराग पाटिल रहलें। फिल्म के कहानी एगो रईस अउरी ओकरा बेटा के रहे। बेटा के रोल में खेसारी लाल बाड़ें अउरी उनके एगो लड़की से प्यार होता।

बनल बाड़ें अउरी काजल राघवानी एगो कोठा चलावे वाली के चंगुल में फँस जातारी। उनके उहाँ से एगो छोटा गुंडा मुन्ना बचावता अउरी दुनो लोग के प्यार हो जाता। मुन्ना ही काजल के खेसारी के पास लेके जाता। खेसारी काजल के ब्रेक दिवावतारे आ उ काजल के सादगी के देखके उनका प्रेम मे पड़ जातारे। एही जा काजल दू लोग के एहसान के तले दबल बाड़ी। उ कइसे आपन प्यार चुनतारी इहे कहानी बा। फिल्म के कहानी रोचक बा लेकिन इ सिनेमाघर में बहुत कमाल ना कर पइलस। एह में विलेन के रोल में अयाज खान के मैच्योर किरदार रहे जवन उम्र में बड़ बा।

फिल्म के डायरेक्टर शेखर शर्मा रहलें।

2018 के उल्लेखनीय फिल्मन में नचनिया के जिक्र जरूर करे के चाहीं। ई फिल्म लीक से हटके बनल अइसन फिल्म बा जवन कमर्शियल भोजपुरी सिनेमा के इंडस्ट्री में एगो सामानांतर सिनेमा के उदाहरण बा। एह फिल्म के कहानी, अभिनय, निर्देशन अउरी सब्जेक्ट सब बढ़िया रहे लेकिन जइसन हमेशा होला ए फिल्म के साथ भी उहे भइल, ई फिल्म बॉक्स ऑफिस पर नंबर बनावे के जादू ना चला पवलस। फिल्म में अविनाश दुबे, श्रद्धा चवाण, प्रकाश जैस अउरी ऋचा दीक्षित के दमदार अभिनय देखे के मिलल। फिल्म के निर्देशक मराठी फिल्म के निर्देशक समीर

रमेश सुर्वे रहलें। फिल्म के कहानी एगो नाच पार्टी के मिटत अस्तित्व अउरी ओसे जुड़ल लोग, परिवार के मिटत रोजी रोटी के दुःख

उभरले बा। कइसे आर्केस्ट्रा अउरी लड़की के नाच के सामने लोग लौंडा नाच के नकारता। बड़ा सुंदर अउरी मार्मिक फिल्म बा। फिल्म के किस्सागोई देखला से लागता कि निर्देशक पर मराठी के बेहतरीन फिल्मन के कलात्मकता के छाप बा।

ई फिल्म एगो प्रश्न छोड़ता कि कइसे गाँव में नाच के लौंडा राति के 3-3 बजे ले बिना खइले-पियले नाचेला अउरी तब ओकरा ग्रुप के ठन्डाइल खाना भेंटाला। ओकरा बादो जवन रुपया खातिर उ एतना मेहनत करेला, उ रूपया भी लोग काट-पीट के कमे देला। उहे नाच के लौंडा फिलिम में मॉडिफाई होके हीरो बन जाता भा अभिनेता बन जाता त ओकर सीधे ट्रीटमेंट अलग हो जाता बाकिर कमवा उ मनोरंजन के ही करऽता। माने ए सन्दर्भ ई कहल जा सकेला कि हमनीये के घर के माड़ नीक ना लागेला आ उहे जब फाइव स्टार होटल में मिन्टेड एंड गार्निश्ड ब्राउन राइस वाटर नाम से आवेला त हमनी का चाव से पीएनी, पावेनी आ ऊपर से एड़ा के डेढ़ा रुपियो देनी।

निरहुआ अपना भाई के वापस से एगो फिल्म में कम बैक करवलें। फिल्म के नाम रहे घूँघट में घोटाला। फिल्म भूतिया कहानी पर आधारित रहे। फिल्म में अपना प्रेम में धोखा खा लेहला के बाद लड़की आत्महत्या कर लेतिया। फिर उ अपना प्रेमी के बियाह भइला के बाद ओके सतावतिया। फिर ओके आत्मा आपन इन्साफ खातिर भटकता और कइसे ओकरा इन्साफ मिलता इहे कहानी बा। फिल्म बहुत सफल ना भइल। फिल्म के कहानी अउरी डायरेक्शन मंजुल ठाकुर के रहे। मनोज हंसराज के लिखल कहानी बढ़िया रहे।

पवन सिंह के लुटेरे फिल्म में तीन गो हीरो रहे लोग। पवन के अलावा यश मिश्रा अउरी गौरव झा रहलें। फिल्म के कहानी तीन गो पुलिस वाला के रहे जे शुरू में कामचोर रहतारें लेकिन कइसे तीनो के रास्ता बदलऽता अउरी उ इंसाफ के डगर पर निकल आवतारे, इ देखे लायक बा। अवधेश मिश्रा के बरगद सिंह के किरदार दमदार बा। सुरेंद्र मिश्रा कहानी लिखले बाड़ें अउरी निर्देशन राजू के बा।

'मैं सेहरा बाँध के आऊँगा' फिल्म में खेसारी लाल आ रजनीश मिश्रा अच्छा काम कइले बा

2018 में खेसारीलाल के काजल राघवानी के साथ मुकद्दर फिल्म आइल। खेसारी गायक बनल बाड़ें अउरी काजल राघवानी एगो कोठा चलावे वाली के चंगुल में फँस जातारी। उनके उहाँ से एगो छोटा गुंडा मुन्ना बचावता अउरी दुनो लोग के प्यार हो जाता। मुन्ना ही काजल के खेसारी के पास लेके जाता। खेसारी काजल के ब्रेक दिवावतारे आ उ काजल के सादगी के देखके उनका प्रेम मे पड़ जातारे। एही जा काजल दू लोग के एहसान के तले दबल बाड़ी। उ कइसे आपन प्यार चुनतारी इहे कहानी बा।

लोग। ई फिल्म कॉमेडी के साथ प्रेम कहानी रहे। फिल्म में तीन गो भाई बाड़ें अउरी तीनों भाई के बियाह नइखे होत। सबसे छोट भाई खेसारी के एगो लड़की से प्यार हो जाता अउरी दुनू के आनन फानन में बियाह करे के पड़ता। खेसारी बहाना करके उ लड़की के अपना घरे ले आवतारे जहाँ उनके दुनू बड़ भाई के नजर लड़की पर पड़ता। एहिजा सिचुएशनल कॉमेडी होता। फिल्म अच्छा रहे अउरी व्यवसाय भी अच्छे कइलस। फिल्म के प्रोड्यूसर अनंजय रघुराज रहलें। फिल्म में

देव सिंह के बबुआ जी के किरदार के बहुत सराहल गइल।

पवन सिंह के फिल्म आइल गदर जवन पाकिस्तान अउरी हिंदुस्तान के विषय पर ही आधारित रहे। ई फिल्म अच्छा व्यवसाय कइलस। खेसारी लाल यादव के हीरो नम्बर वन अउरी पवन सिंह के सत्या आ जिद्दी आशिक साल के सफल फिल्म में से रहे।

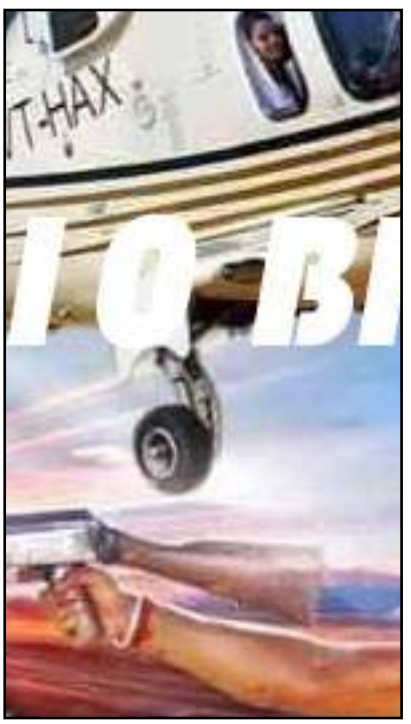

2018 खेसारी लाल के साल रहल। उनके फिल्म संघर्ष अपना कंटेंट अउरी किस्सागोई के कारण खूब चर्चा में रहल। फिल्म में अश्लीलता से एहतियात बरतल रहे। फिल्म निर्देशक पराग पाटिल रहलें। फिल्म के कहानी एगो रईस अउरी ओकरा बेटा के रहे। बेटा के रोल में खेसारी लाल बाड़ें अउरी उनके एगो लड़की से प्यार होता। घर परिवार दुनू के बियाह करा देता। फेर दूनू से एगो लड़की पैदा हो तिया। बाकिर रईस आदमी के पोता के भूख रहे एह से उ अपना बेटा पतोह के घर से निकाल देता। फिल्म एहिजा से मोड़ लेता जब जिनगी में कवनो काम ना करे वाला दम्पति के आपन अउरी अपना बेटी के पेट पाले खातिर संघर्ष करे के पड़ता। फिल्म के सिनेमाघर में अच्छा रिस्पांस मिलल अउरी काफी समय बाद कवनो भोजपुरी फिल्म मल्टीप्लेक्स में भी लागल। ई फिल्म पारिवारिक रहे अउरी सिनेमाघर में परिवार के भी खींच के ले आइल।

ए फिल्म के अलावा खेसारी के दीवानापन, डमरू, राजाजानी, दुल्हन गंगा पार के, संघर्ष, बलम जी आई लव यू, नागदेव अउर दबंग सरकार भी दमदार रहे। फिल्म से भी आ शोज से भी उ खूब कमाई कइलन।

कई गो बड़हन कलाकारन के लेके एगो देशभक्ति फिल्म बनल, नाम रहे 'बॉर्डर'। फिल्म में मुख्य रोल में निरहुआ रहलें। फिल्म के कहानी आर्मी अउरी आर्मी के देश के दुश्मन आ आतंकवादियन के खिलाफ जंग के रहे। फिल्म के राइटर डायरेक्टर संतोष मिश्रा रहलें।

रविकिशन के साल में एगो बड़ फिल्म आइल उनके ही प्रोडक्शन से, नाम रहे सनकी दरोगा। फिल्म महिला पर होत अत्याचार अउरी रेप के मुद्दा पर आधारित रहे जे में एगो दरोगा सनक जाता अउरी बदला लेवे निकल जाता। सनी देओल के फिल्म बिग ब्रदर के जइसे एमें भी एगो आदमी सब पापियन से बेटी बहिन के बचावे उठता अउरी समाज के मसीहा बन जाता। फिल्म में अंजना सिंह हीरोइन रहली।

2018 में कईगो बड़ा बजट के फिल्म बनली सन जइसे पवन सिंह के फिल्म माँ तुझे सलाम 107 करोड़ मे बनल। एही लेखाँ 2017 में भी बड़ फिल्म बनली सन लेकिन सिनेमाघर के घटत संख्या अउरी स्टार लोग के ही बैक टू बैक फिल्म के वजह से कवनो फिल्म के बहुत स्पेस ना मिल पावल। फिल्म के खिलाफ दर्शकन के बढ़त उदासीनता भी एगो बड़ा कारन रहे। बाकिर डिजिटल पर सब फिल्मन के खूब धूम रहे। दुनू साल के कई गो फिल्म 50 मिलियन से ज्यादा बार देखल गइल बा जइसे कि 2017 में निरहुआ हिंदुस्तानी 2 आ मेहंदी लगा के रखना अउर 2018 मे बॉर्डर, सिपाही, दिलवाला वगैरह।

कुछ अउर जिक्र करे वाला फिल्म के नाम लिहल जाव त आवारा बालम, दुलहिन चाही पाकिस्तान से-2, नाग राज, बैरी कंगना-2, लोहा पहलवान, वांटेड आदि रहे। ***

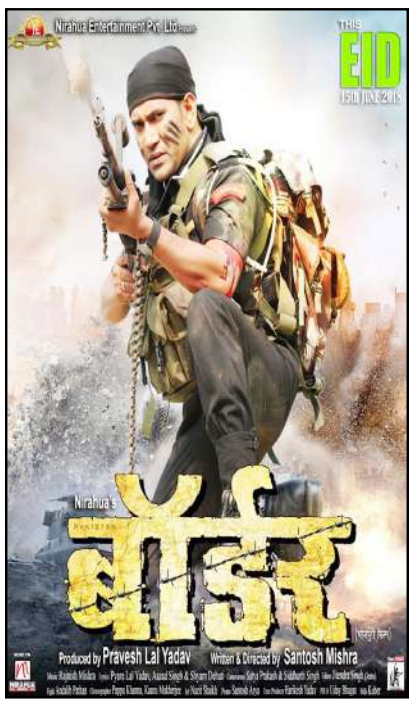

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

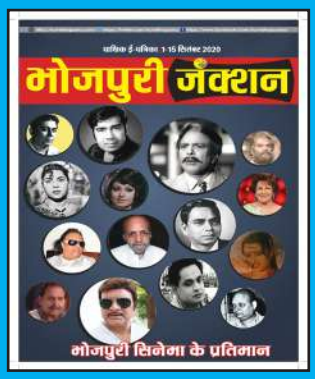
भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी सिनेमा के प्रतिमान

भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी सिनेमा के कलाकार

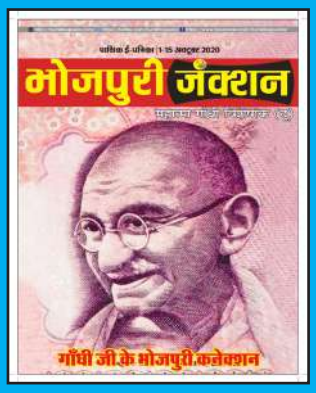
भोजपुरी जंक्शन
गाँधी जी के भोजपुरी कनेक्शन

भोजपुरी जंक्शन
लोक परंपरा में माई

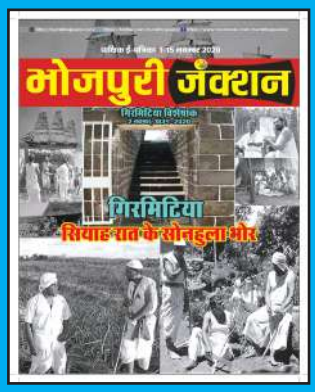
भोजपुरी जंक्शन
गिरमिटिया
सियाह रात के सोनहुला भोर

भोजपुरी जंक्शन
दिवरी-बाती अउर छठ विशेषांक
उगी हे दीनानाथ...

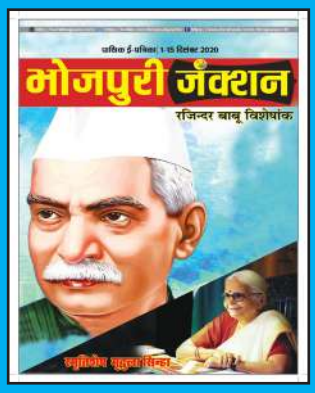
भोजपुरी जंक्शन
रजिन्दर बाबू विशेषांक

2021
भोजपुरी जंक्शन
मईया के मुँह से फूटे संगीत
भउजी के कंगना से खनके ताल
अखिल विश्व में सभे रहे खुशहाल
शुभ हो, मंगलमय हो नयका साल

भोजपुरी जंक्शन
गाँव से खिचड़ी लाइव

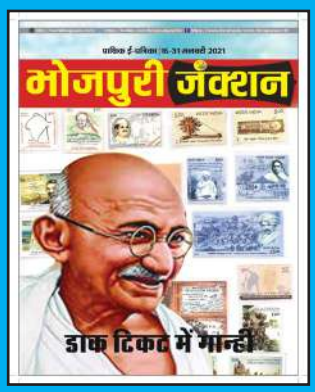
भोजपुरी जंक्शन
डाक टिकट में गान्ही

भोजपुरी जंक्शन
कोरोना विशेषांक
... ताकि सनद रहे

भोजपुरी जंक्शन
एगो कोरोना रहे...

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16 मार्च-15 अप्रैल 2021
भोजपुरी जँक्शन
होली विशेषांक
फगुनाहट हऽ कि कोरोनाहट

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16-30 अप्रैल 2021
भोजपुरी जँक्शन
चइता विशेषांक
हम काटब गेहूं
गोरी कटिहऽ तू मुसुकी

पाक्षिक ई-पत्रिका | 1-15 मई 2021
भोजपुरी जँक्शन
कोरोना काल
का आदमी के आदमी बना सकी ?

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16-31 मई 2021
भोजपुरी जँक्शन
कोविंग से बेसी
'सोचिंग' के जरूरत बा

पाक्षिक ई-पत्रिका | संतुक्तांक | 1-30 जून 2021
भोजपुरी जँक्शन
माई-बाबूजी विशेषांक
पानी प पानी लिखे के कोशिश

पाक्षिक ई-पत्रिका | संतुक्तांक | 1-31 जुलाई 2021
भोजपुरी जँक्शन
काहे खातिर फादर्स डे
काहे खातिर मदर्स डे

पाक्षिक पत्रिका | संतुक्तांक | 1-31 अगस्त 2021
भोजपुरी जँक्शन
देशभक्ति विशेषांक
सुंदर सुभूमि भइया भारत के देसवा से

Title Code – DELBHO00011
पाक्षिक पत्रिका | 1-30 सितंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जँक्शन
सुनीं सभे
विशेषांक
समसामयिक मुद्दन पर
विचार मंथन

Title Code – DELBHO00011
पाक्षिक पत्रिका | 1-15 अक्टूबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जँक्शन
प्रेमे इलाज बा तनाव के

Title Code – DELBHO00011
पाक्षिक पत्रिका | 16-31 अक्टूबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जँक्शन
मन के रिचार्ज करीं

Title Code – DELBHO00011
पाक्षिक पत्रिका | 1-30 नवंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जँक्शन
संस्मरण विशेषांक
अनुभव के अँटिया ह संस्मरण

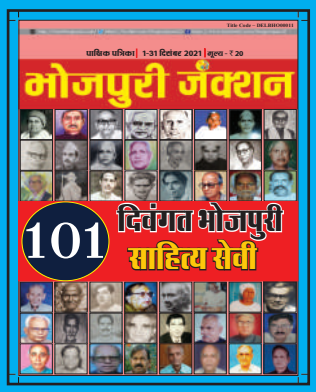
Title Code – DELBHO00011
पाक्षिक पत्रिका | 1-31 दिसंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जँक्शन
101
दिवंगत भोजपुरी
साहित्य सेवी

भोजपुरी जंक्शन
जिनगी संभावना ह, समस्या ना

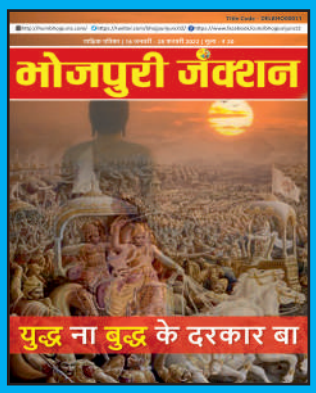
भोजपुरी जंक्शन
युद्ध ना बुद्ध के दरकार बा

भोजपुरी जंक्शन
रूस-यूक्रेन युद्ध विशेषांक
जिंदगी युद्ध ना उत्सव ह

भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी के गौरव विशेषांक (भाग - 1)

भोजपुरी जंक्शन
संपादकीय विशेषांक
ए हो रामा !
हम भोजपुरिआ | भोजपुरी जंक्शन | 62 अंक

भोजपुरी जंक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
(भाग -1)
कवनो ठगवा नगरिया लूटल हो
- कबीर

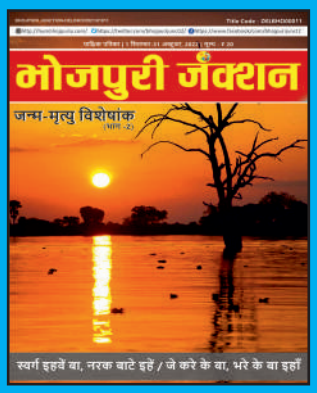
भोजपुरी जंक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
(भाग -2)
स्वर्ग इहवें बा, नरक बाटे इहे / जे करे के बा, भरे के बा इहाँ

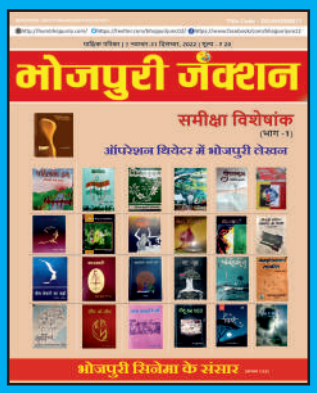
भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग -1)
ऑपरेशन थियेटर में भोजपुरी लेखन
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-2)
रोज रात समीक्षा, रोज सुबह उत्सव
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-3)
समीक्षा रचना के पुनर्सृजन ह
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
किसान कवितावली
(भाग-1)
62 कवि
62 कविता
कब होई किसान बनला पर छाती उतान ?

अगला जन्म मुझे भोजपुरी भाषी क्षेत्र में मिले

'भोजपुरी जंक्शन' का समीक्षा विशेषांक देखा। भाई मनोज भावुक जिस मनोयोग से पत्रिका को संवार रहे हैं वह देखते ही बनता है। एक एक रचना व्यवस्थित रखी है जैसे किसी आभूषण में हीरे जड़े हों। मैं सदा से भोजपुरी की मिठास से प्रभावित रहा हूं लेकिन दुर्भाग्य से मैं भोजपुरी का पूरा रस नहीं ले पाता। पत्रिका देख कर ईश्वर से यही प्रार्थना करूंगा कि अगला जन्म मुझे उसी भाषा क्षेत्र में मिले जिसमें भोजपुरी बोली जाती हो। मैं भाई मनोज भावुक के श्रम, सुरुचि, रचनात्मकता और लगन का कायल हूं। उन्हें बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं। सादर

राजेश शर्मा, सुप्रसिद्ध कवि, ग्वालियर

संपादकीय से पत्रिका पढ़े खातिर उत्सुकता बढ़ गइल

संपादकीय पढ़नी, बड़ा बढ़िया लागल, पत्रिका पढ़े खातिर उत्सुकता बढ़ गइल। सरसरी निगाह से पढ़त-पढ़त पहुंच गइनी राउरे लिखल गजल तक। फेर देखनी संतोष पटेल भाई जी के "अदहन", ओकरा बाद "भोजपुरी सिनेमा" के बात। हम एह अंक के विस्तार से पढ़ब।

हेमंत जी, वॉइस ओवर आर्टिस्ट, झारखंड

संपादकीय छोड़ि के केहू आगे ना बढ़ि सकेला

नमस्कार भावुक जी

रउरी सम्पादन में 'भोजपुरी जंक्शन' पत्रिका के समीक्षा विशेषांक-3 पढ़े के मिलल ह। पहिला दूसरा त ना पढ़ि पवनीं हम बाकिर तिसरका अंक एगो समृद्ध अंक के रूप में हमरा हाथे लागल ह। काहें से कि गीत, गजल, निबंध, कहानी उपन्यास, डायरी आदि साहित्य के सगरो विधा पर समीक्षा ए अंक में लिहल गइल बा। एकरा खातिर आप बधाई के पात्र बानीं। सभे जानेला कि पत्रिका के प्राण सम्पादकीय में बसेला। ए दृष्टि से देखल जाव त पत्रिका के सम्पादकीय छोड़ि के केहू आगे ना बढ़ि सकेला। शीर्षक ही ध्यान आकर्षित करेवाला बा 'समीक्षा रचना के पुनर्सृजन ह' एकदम सूक्ति वाक्य।

पत्रिका के सम्पादकीय लेखक लो खातिर बेर-बेर पढ़े वाला एगो पाठ बा। ई बाति हम खाली प्रशंसा खातिर नइखीं लिखत। अइसन हमके महसूस भइल ह, तब लिखतानीं। पत्रिका से हमके भोजपुरी के पहिला कहानी संग्रह 'जेहल के सनदि' के अलावा अउरी बहुत महत्वपूर्ण-महत्वपूर्ण किताबन के बारे में जानकारी के साथे प्रबुद्धजन के लिखल समीक्षा पढ़े के मिलल ह। भोजपुरी में केतना लिखवइया लोग बा इहो पता चलल ह हालाँकि लिखवइया के संख्या हमरी जानकारी से बेसी बा, इहो हम जानतानीं। अइसे त पत्रिका के सगरी सामग्री पठनीय आ महत्वपूर्ण बा बाकिर तबो हमके पत्रिका में सबसे सुन्दर जवन लागल ह, ऊ 'सुनीं सभे' कालम के अंतर्गत आर. के. सिन्हा जी के आलेख **'काश, अजय बंगा अउर गुनीत मौंगा से खालिस्तान समर्थक लोग कुछ सिखित'** ह। 'बिहारी परब सतुआन' पढ़ि के आपन बचपन इयाद आ गइल ह। लेख आ समीक्षा के बीच-बीच में राउर लिखल गजल के बतिए का बा! कुल मिला के बहुत सुन्दर आ संग्रहणीय अंक बनल बा, जवना खातिर रउरी साथै पत्रिका के सगरो टीम के बहुत-बहुत बधाई बा।

भोजपुरी साहित्य में 'भोजपुरी जंक्शन' के झंडा फहरात रहे। बहुत-बहुत शुभकामना बा।

मीनाधर पाठक, वरिष्ठ लेखिका, कानपुर, उत्तर प्रदेश

समीक्षा अंक पठनीय आ संग्रहणीय बा

"भोजपुरी जंक्शन" पतिरिका के माध्यम से 'समीक्षा अंक' के प्रकाशन मनोज भावुक जी के भोजपुरी साहित्य का प्रति समर्पण आ संकल्प के एगो जीवंत प्रमाण बा। सम्मानीय मनोज भावुक जी के एह कठिन साहित्यिक कार्य प्रयास खातिर अभिनंदन !

भिन्न-भिन्न विषय पर प्रकाशित साहित्यिक संवेदना के समेट के ओह मन-मिजाज का मोताबिक समीक्षा आ ओकर प्रकाशन केतना दुरूह कार्य ह ई उहे बूझी जे प्रकाशन के मरम के ठीक से देखले भा बुझले-समुझले होई।

मनोज भावुक जी एह कठिन कार्य के पूरा करे के बीड़ा उठवले बानी, ई जान के मन हरसित बा। निश्चित रूप से ई समीक्षा अंक पठनीय आ संग्रहणीय बा... एही विश्वास का संगे भावुक जी के भावना के सफलता के शिखर पर पहुँचे खातिर हमार शुभकामना !

अवधेश सिंदूरिया, सम्पादक, सिंदूरिया संदेश

हृदय स्पर्शी भाषा का अनमोल खजाना है, "भोजपुरी जंक्शन"

भोजपुरी जंक्शन 'समीक्षा विशेषांक' के लिए आदरणीय मनोज भावुक जी की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। भोजपुरी भाषा को जो सम्मान आपने दिया है, उसके लिए मैं तो नत मस्तक हूँ। एक से बढ़कर एक लेख, समीक्षाएं क्या कहने?

लोक खाद्य पदार्थों का जो विशद वर्णन किया गया है, पढ़कर जीभ चटकारे लेने लगती है। सतुआ की महत्ता ने आजकल के फास्ट फूड को मात दी है, काबिले तारीफ।

हृदय स्पर्शी भाषा का अनमोल खजाना है, "भोजपुरी जंक्शन"। रुचिर भाषा शैली, विद्वानों के मन मस्तिष्क का अनमोल माखन का स्वाद इस अंक में परोसा गया है।

भोजपुरी जंक्शन के प्लेटफॉर्म पर धूम मचाती, रंग बिरंगी तारिका सी बेहतरीन गजलें मन मोह लेती हैं। जिसके लिए भावुक जी को दिल से बहुत-बहुत बधाई।

संपादन विभाग के सजग सुकर्म को बहुत बहुत धन्यवाद।

दरियाब सिंह 'ब्रजकण', वरिष्ठ कवि हिन्दी-ब्रजभाषा, दिल्ली

संपादकीय समीक्षा अंक के आत्मा बाटे

भोजपुरी जंक्शन के ई समीक्षा विशेषांक देखनी। राउर लिखल संपादकीय पढ़ली। संपादकीय समीक्षा अंक के आत्मा बाटे। समीक्षक के कइसन होखे के चाही, कौना मनःस्थिति में होखे के चाही, एकर एह से बढ़िया परिचय, विश्लेषण आ प्रस्तुतिकरण नइखे हो सकत। बहुत उत्तम आ सहज प्रकटीकरण बा। भावुक जी के एकरा खातिर बहुत बधाई।

सरसरी तौर पर सगरो रचना, विद्वतजन द्वारा कइल गइल पुस्तक-समीक्षा, भावुक जी के लीखल करेजा छुए वाला गजल, उनकरे द्वारा उद्धृत भोजपुरी सिनेमा के सर्वकालिक समीक्षा, ई सब के स्वाद लेहली। का कहीं ई अंक त हमरा समझ आ बुद्धि के स्तर से बेहतर बा। एकरा बारे में हम इहे कहब कि हमार औकात नइखे एकरा पर प्रतिक्रिया देवे के। हम भोजपुरी जंक्शन के प्रशंसक बाटी आ शुभेच्छुओ। प्रणाम।

डॉ. संजय कुमार, उप महानिरीक्षक के रि पु बल, भोपाल

आठवीं अनुसूची खातिर लोग भोजपुरी जंक्शन के कांखी में दबा के नारा लगावे जाई

राउर समीक्षा दृष्टि बेजोड़ बा। भोजपुरी समीक्षा पर ऐतिहासिक काम शुरू भयिल त एही पत्रिका से। एह से पहिले किताबन के परिचय लिखात रहे। 'भोजपुरी जंक्शन' में पहिले समीक्षा के समीक्षा भयिल आ आनलाइन लेखक-परिचर्चा के बाद समीक्षा लिखे के प्लान बनल।

ई बात तनिक अलग बा कि कुछ अनुभवी रचनाकार लोग एह गिलहरी प्रयास के सहभागी ना बनल। बाकिर, एह समीक्षा अंकन के छपला से भोजपुरिया समाज के संगे-संगे बहुते लोगिन के ई बहम दूर भयिल कि भोजपुरी के साहित्यिक भंडार समृद्ध नयिखे।

जे लोग भोजपुरी भाषा के, संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल ना करेके बहाना खोजत बा ऊ लोग 'भोजपुरी जंक्शन' के समीक्षा अंक देखके तनिमनी लजइबो करी, समर्थक लोग एह अंक के कांखी में दबा के नारा लगावे जाई।

डॉ. शंकर मुनि राय गड़बड़, वरिष्ठ साहित्यकार, छत्तीसगढ़

काम आपके कहि रहल, उहे दियाई मान

नमस्कार भाई,

आपन ख्याल रखत भोजपुरी के सेवा में लागल रहे के बा। स्वास्थ्य के अनदेखा नइखे करे के। बड़ भाई के सलाह -

करीं काम विश्राम लेइ, भावुक आपन काज।
देह दसा के देखि के, कदम बढ़ाई आज।।

जुग संग चलीं दउड़ के, रखत आपन ख्याल।
दूर रखीं चिंता फिकिर, कनक कहे हर हाल।।

काम राउर करि रहल, भोजपुरी के गान।
असहीं काम करत चलीं, बिना चाह आ मान।।

ए सपूत भोजपुरी के, भोजपुरी के शान।
काम आपके कहि रहल, उहे दियाई मान।।

कनक किशोर, वरिष्ठ साहित्यकार, राँची

***

STAY HOME STAY SAFE

GOVERNMENT OF KARNATAKA

I protect you
You protect me!

A person suffering from COVID-19 may not show symptoms but can still spread the virus. Wear face masks at all times when you step outside.

#MaskForAll

#KarnatakaFightsCorona

#breakthechain

एह अंक के रचनाकार

श्री आर. के. सिन्हा
श्री रवींद्र किशोर सिन्हा वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार अउर पूर्व सांसद हईं।

श्री मनोज भावुक
भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के संपादक, अचीवर्स जंक्शन चैनल के निदेशक, कवि, फिल्म-समीक्षक आ पत्रकार।

श्रीमती शारदा पांडेय
मातृभूमि बलिया। कर्मभूमि प्रयागराज। चार दशक से कहानी, निबंध, कविता आ समीक्षा विभिन्न पत्र-पत्रिकन में। अनुभव रस में भींजि के (काव्य-संग्रह-हाइकु), रसबोध के एने-ओने (निबंध-संग्रह), ओह दिन (कहानी-संग्रह-महाभारत के पात्रन पर आधारित) प्रकाशित।

डॉ. अशोक द्विवेदी
डॉ. अशोक द्विवेदी जी भोजपुरी खातिर साहित्य अकादेमी के भाषा सम्मान से सम्मानित वरिष्ठ साहित्यकार हईं। पाती के यशस्वी संपादक अशोक जी दर्जनों पुस्तकन के प्रणेता, गंभीर अध्येता आ भोजपुरी साहित्य के समर्पित सेवक के रूप में जानल जानीं।

डॉ. शंकर मुनि राय 'गड़बड़'
हिंदी आ भोजपुरी के प्रतिष्ठित लेखक, समीक्षक आ व्यंग्यकार। भोजपुरी साहित्य में हास्य-व्यंग्य पर पीएचडी आ भोजपुरी लोक साहित्य में यूजीसी परियोजना कार्य। डेढ़ दर्जन किताबन के लिखवयिया, आकाशवाणी आ दूरदर्शन से कविता कहानी आ व्यंग्य पाठ। विभागाध्यक्ष-हिंदी आ शोध निर्देशक, शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)।

श्री सूर्यदेव पाठक 'पराग'
भोजपुरी में मौलिक, संपादित आ अनुवाद के चौदह गो,हिन्दी में मौलिक आ संपादित तेरह गो आ संस्कृत में एगो अनूदित किताब प्रकाशित बा। 46 बरिस से अ०भा०भो०सा०सम्मलेन से जुड़ाव आ क्रमशः कार्य समिति सदस्य, प्रकाशन मंत्री, प्रवर समिति सदस्य रहला के बाद 2011 में सम्मलेन के 11वाँ जमशेदपुर सम्मलेन के अध्यक्ष।

श्री विष्णुदेव तिवारी
भोजपुरी के स्थापित कहानीकार आ कहानी-समीक्षक हईं।

डॉ. संध्या सिन्हा
सम्पादक 'अँगना', प्राध्यापक, हिंदी विभाग, करीम सिटी कॉलेज, जमशेदपुर। कविता संग्रह-दोहमच (भोजपुरी) आ बोलने दो (हिंदी)।

श्री कनक किशोर
भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य के सेवक। भोजपुरी साहित्य के समर्पित व्यक्तित्व जेकरा संपादन में भोजपुरी के अनेक विधन पर काम करे के प्रयास हो रहल बा।

श्री चंद्रेश्वर
30 मार्च 1960 में बिहार के बक्सर ज़िला के आशा पड़री गाँव के एगो किसान परिवार में जन्म। हिन्दी आ भोजपुरी में चालीस साल से जादा समय से कविता आ सृजनात्मक गद्यलेखने सात गो प्रकाशित पुस्तक। एह घरी यूपी के बलरामपुर शहर में एम.एल.के.पी.जी. कॉलेज में हिन्दी के प्रोफेसर।

श्री दिव्येन्दु त्रिपाठी
दिव्येन्दु त्रिपाठी, लेखक, अन्वेषक आ वास्तुविद्, कैलाश धाम, मानगो डिमनारोड, जमशेदपुर।

डॉ. सत्येंद्र प्रसाद सिंह
संप्रति प्रभारी प्राचार्य, हरिराम महाविद्यालय, मैरवा(सिवान)। अंग्रेजी साहित्य के जर्नल आउर भोजपुरी पत्रिका में लेखन। दो दर्जन राष्ट्रीय आउर अन्तरराष्ट्रीय अंग्रेजी साहित्य के सेमिनार में शोध पत्र के प्रस्तुति।

श्री केशव मोहन पांडेय
सर्व भाषा ट्रस्ट के समन्वयक केशव मोहन पांडेय हिन्दी-भोजपुरी के स्थापित कथाकार-कवि बानी।

श्री राम मनोहर मिश्र 'माहिर विचित्र'
बिचित्रालय, भिंडा मिश्र, भाटपार रानी, देवरिया उत्तर प्रदेश के रहनिहार। पेशा से शिक्षक। स्वभाव से कवि। पंडित कुबेर नाथ मिश्र 'विचित्र' जी के पुत्र।

डॉ. रजनी रंजन
घाटशिला झारखंड में रहे वाली डॉ. रजनी रंजन हिन्दी आ संस्कृत में एम० ए०, फेर एम०एड० आ बी० एच० यू० से पी० एच० डी० कइले बानी। हिन्दी-भोजपुरी में रचना प्रकाशित होत रहेला।

श्री ऋतु राज
भोजपुरी प्रतिष्ठान, वीरगंज, नेपाल के कार्यकारिणी सदस्य, कवि।

श्री भूपेन्द्र कुमार
सुगौली पूर्वी चम्पारण, बिहार के रहनिहार। लेखापाल के पद से वर्ष 2016 में सेवानिवृत्त। साहित्य पढ़े के अभिरुचि बहुत पहिले से रहे, लेकिन साहित्य लेखन के सफर सेवानिवृत के बाद शुरू भइल।

श्री आनंद अमित
गाजीपुर के रहनिहार आनंद अमित जी के एगो हिंदी काव्य संग्रह आ एगो कहानी संग्रह के अलावा भोजपुरी में भी एगो कविता संग्रह प्रकाशित हो चुकल बा। वर्तमान में आप बी एस एन एल मिजार्पुर में अवर अभियंता के पद पर कार्यरत हईं।

श्री पीयूष चतुर्वेदी
जन्मभूमि-बलिया। कर्मभूमि-प्रयागराज। व्यापार प्रबंधन में मास्टर डिग्री। आध्यात्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक अउरी साहित्यिक ग्रन्थन के पढ़े में रुचि। उभरत युवा लेखक।

श्री सुशील कुमार शर्मा
प्रवक्ता (हिन्दी), राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय मटियाला, नयी दिल्ली। विभिन्न गद्य विधा में समय-समय पर रचना प्रकाशित।

श्री उद्धव मिश्र
उप संपादक, समकालीन भोजपुरी साहित्य, संप्रति-दीवानी कचहरी देवरिया में वकालत।

***

भोजपुरी साहित्य खातिर मनोज भावुक के मिलल पहिला फिल्मफेयर अवार्ड

लखनऊ के रमादा में 16 जुलाई 2023 के फिल्मफेयर अउर फेमिना द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित **'भोजपुरी आइकॉन्स- रील एंड रीयल स्टार्स'** समारोह में भोजपुरी जंक्शन के संपादक, फिल्म समीक्षक आ भोजपुरी सिनेमा के इतिहासकार मनोज भावुक के भोजपुरी साहित्य आ सिनेमा के इतिहास पर कइल गइल उनका उल्लेखनीय योगदान खातिर सम्मानित कइल गइल।

मनोज भावुक के ई सम्मान फेमिना के प्रधान संपादक अंबिका मट्टू आ दक्षिण के निर्देशक विक्रम वासुदेव द्वारा संयुक्त रूप से प्रदान कइल गइल।

ई एगो ऐतिहासिक कार्यक्रम रहे, जब दू गो प्रतिष्ठित ब्रांड फिल्मफेयर आ फेमिना पहिला बार भोजपुरी आइकॉन के सम्मान करे आ जश्न मनावे खातिर एकजुट भइल रहे। एह अवसर पर पद्मभूषण शारदा सिन्हा के लोक संगीत खातिर, संजय मिश्रा के प्राइड ऑफ भोजपुरी मिट्टी, रवि किशन के ओटीटी आ सिनेमा खातिर अवॉर्ड, मनोज तिवारी के लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड, आ अउर आइकॉन्स आ फिल्मी कलाकार लोग के भी अलग-अलग कटेगरी में सम्मानित कइल गइल। ***

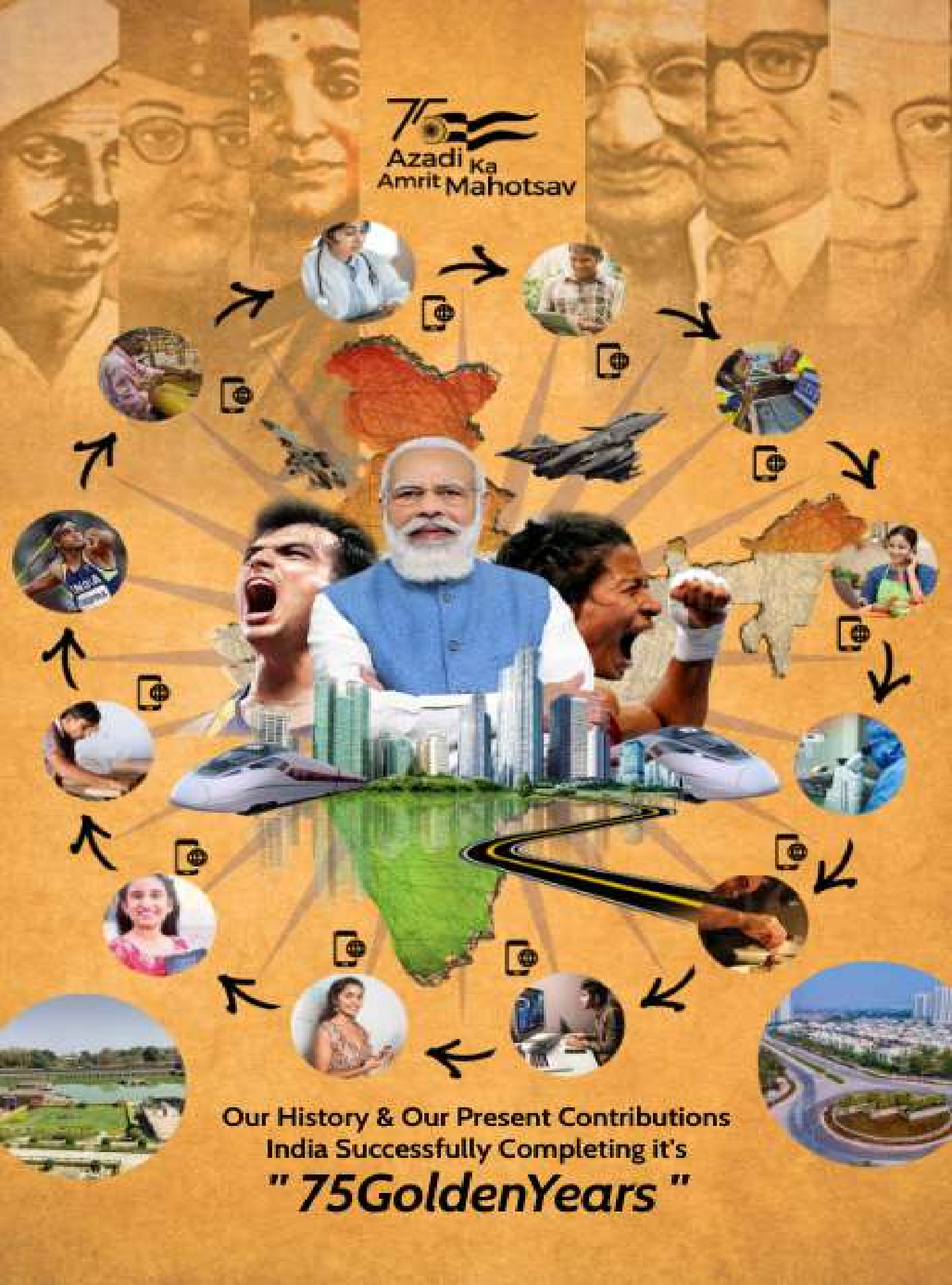
Azadi Ka
Amrit Mahotsav
Our History & Our Present Contributions
India Successfully Completing it's
" 75GoldenYears "